वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

4.1

14 भाषाओं में एक वर्ष में 4 अंक

सायमन क्लार्क एक प्रेरणादायक सहयोग

समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में

ऐलेन तौरेन
कल्पना कन्नाबिरन

चिली का लोकतान्त्रिक संक्रमण

मैन्युएल एंटोनियो गैरेटन

उरुग्वे का सामाजिक प्रजातंत्र

फैलिपे एरोसेना
एड्रियाना मरेरो
तथा लिएन्ड्रो परेरा
मार्कोस सुपरविएले
तथा मारिएला क्वीनोन्स
डियेगो पिनेरो

हंगरी का दक्षिणपंथी प्रोत्कर्ष

ज्योर्जी सपेली
एस्थर बार्था

- दक्षिण अफ्रीका की महिला खनिक
- कोते दी आइवर की मोबाइल फोन संस्कृति
- यूरोपियन समाजशास्त्र परिषद की सभा
- **ALAS** का समापक घोषणा–पत्र
- डिजिटल युग एवं सामाजिक रुपान्तरण
- वैश्विक संवाद का रुसी दल

सूचना पत्र

International Sociological Association

GD
अंक 4 / क्रमांक 1 / मार्च 2014
http://isa-global-dialogue.net

> सम्पादकीय

नवउदारवाद पर प्रतिक्रियाऐं

हम एक नवउदारवादी दुनियां में रह रहे हैं जहां बाजार और अधिक विस्तारित एवं गहराता जा रहा है। बाजार से कुछ भी बच नहीं सकता जब कि यह उन क्षेत्रों मे प्रवेश कर रहा है जिन्हें कि बहुत लम्बे अर्से के लिए सुरक्षित कर दिया गया है। श्रम एक रचनात्मक गतिविधि होने की बजाय और अधिक अनिश्चित उत्तरजीविता का स्रोत बन गया है; धन, उधार तथा उधार पर शर्तों के माध्यम से, विनिमय के एक माध्यम की जगह और अधिक धन बनाने का साधन बन गया है, जिससे कि धनवान ऋणदाता एक ध्रुव पर तथा दरिद्र कर्जदार दूसरे ध्रुव पर धकेल दिये गये हैं; प्रकृति (जल, जमीन, हवा) जीवन को सम्पोषित करने की बजाय पूंजीवाद की विध्वंसकारी ताकतों का विषय बन गये हैं, और एक महंगी वस्तु में तब्दील हो गये हैं, जो कि हिंसक बेदखली को प्रोत्साहित करते हैं; ज्ञान जो कि कभी सार्वजनिक सम्पत्ति होता था अब उसे सबसे अधिक बोली लगानें वाले को बेचा जाता है चाहे फिर वो प्रत्यय–पत्रों की खोज में लगे विद्यार्थियों अथवा अनुदानित शोधों की खोज में लगे संघ। उत्पादन के प्रत्येक घटक का सामग्रीकरण प्रत्येक वस्तु के सामग्रीकरण को पुष्ट करता है। बाजार की कोई सीमा प्रतीत नहीं होती।

फिर भी बाजार प्रतिरोधी–प्रवृति उत्पन्न करते हैं चाहे फिर वो सामाजिक आन्दोलन हों तथा/या शासकीय नियंत्रण। इस अंक में वैश्विक बाजारीकरण की दुविधाओं पर उरुग्वे के समाजवादी प्रत्युत्तर पर चार लेख संग्रहित हैं: पुर्नवितरिय नीतियां जो कि बलशाली संघों की तरफ ले जाती हैं और उनका कारण बनती हैं, सामाजिक नीतियाँ जिन्होंने गर्भपात, समलिंगी विवाहों तथा मारीजुआना को वैध बना दिया है; सार्वजनिक शिक्षा के उच्च स्तरों को धारण/स्मरण किया है। दूसरी ओर, पूंजीवाद में कृषि पर आक्रमण किया है और इस प्रकार कृषक समाज को संचयन के एक माध्यम के रुप में परिवर्तित कर दिया है। शासन की दूसरी अवधि में विस्तृत समाजवादी मोर्चे ने जिसमें कि टूपामारोस गुरिल्ला आंदोलन के भूतपूर्व प्रदर्शन सम्मिलित हैं सामाजिक प्रजातंत्र के लोकप्रिय जनादेश के लिए प्रयास किया जो कि चिली के रुढ़िवादी मार्ग के प्रक्षेप–पथ से इतनी अधिक भिन्न है। अर्जेन्टीना, ब्राजील, इक्वाडोर, वेनेजुएला तथा बोलीविया में गुलाबी अथवा चुनावी समाजवाद के उदय के बावजूद, उरुग्वे का सामाजिक प्रजातंत्र मानवोचित एवं सफल दोनों ही रुप में उभर कर आता है।

यदि उरुग्वे लेटिन अमेरिका में एक गैर है तो हंगरी भूतपूर्व सोवियत ब्लाक के अन्दर एक गैर है – अपने समाजवाद में नहीं बल्कि अपनी अधिनायकवादी लोकप्रियता में, जो कि बाजार की विध्वंसकारी शक्तियों का एक वैकल्पिक प्रत्युत्तर है। हंगरी से भेजे गये तीन लेख एक ऐसे माफियाराज के उदय का वर्णन कर रहे हैं जिसका कि अध्यक्ष स्वयं–प्रशंसक विक्टर ओरबान है जो कि उरुग्वे के राष्ट्रपति–जो मुजिका, जो कि अत्यधिक सादगीपूर्ण जीवन जीते हैं, से बिल्कुल भिन्न है। हंगरी में राजनैतिक अभिजन जो कि बहुत अधिक परे होते जा रहे हैं तथा प्रतिदिन और अधिक निर्दयी होते जा रहे हैं प्रजातंत्र एवं सार्वजनिक बहस को बंद करना चाहते हैं, वर्ग के विचार को एक साम्यवादी विकृति मान कर बदनाम करते हैं जबकि वर्ग और अधिक आगे बढ गया है, तथा यहूदी एवं रोमा जिप्सी लोगों के विरुद्ध एक राष्ट्रीय अतिराष्ट्रवाद को बढावा दे रहे हैं जबकि हंगरी की आर्थिक दुर्दशा के लिए वे यूरोपीय संघ को बलि का बकरा बनाना चाहते हैं।

अत्यधिक भिन्न आर्थिक एवं राजनैतिक इतिहास वाले दो देश एक ही प्रकार के नवउदारवादी उद्दीपन का उत्तर भिन्न राजनैतिक कूटयोजनाओं के माध्यम से दे रहें हैं लेकिन क्या सामाजिक प्रजातंत्र अथवा लोकप्रिय अधिनायकवाद बाजारीकरण के संवेग को उलट सकते हैं जो कि नभमंडल पर तकरीबन अबाधित गति से शान से विचरण कर रहा है। क्या नवउदारवाद के उल्टाव के लिए एक प्रति–आंदोलन की आवश्यकता है न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि एक वैश्विक पैमाने पर, और वह इस प्रकार का दिखाई भी पडे? क्या इस प्रकार का वैश्विक प्रति–आंदोलन आजादी का विस्तार करेगा अथवा सीमित? क्या यह संभव है अथवा कि हम सामूहिक स्व–विनाश की ओर आवश्यक रुप से बढ़ रहे हैं?

> वैश्विक संवाद को आईएसए वैबसाइट पर 14 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

सायमन क्लार्क *के दो विद्यार्थियों द्वारा यहाँ लिया गया साक्षात्कार जिसके कि अन्तर्गत उन्होने युवा एवं प्रतिभाशाली रुसी समाजशास्त्रियों के साथ असाधारण सहयोग को विकसित किया एवं जिसके माध्यम से बाजार संकमण के दौरान और उसके बाद भी अनेक वैयक्तिक अध्ययनों का उत्पादन हुआ।*

ऐलेन तौरेन*, अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त समाजशास्त्री, अपने नये–रास्ते बनाने वाले सिद्धान्तों की उत्पत्ति और अपने नवाचारों तथा सामाजिक आन्दोलनों मे अब विस्तृत रुप से उपयोग में ली जाने वाली पद्धति का विवरण दे रहे हैं। यहां वह अपने प्रारम्भिक आशावाद और अभी हाल ही के निराशावाद पर चिन्तन कर रहे हैं।*

कल्पना कन्नाबिरन *भारत की अतिनिपुण समाजशास्त्री एवं सक्रिय कार्यकर्ता, सामाजिक न्याय की खोज में समाजशास्त्र तथा आलोचनात्मक कानूनी अध्ययनों के मध्य संभावित सहजीवन का सम्बन्ध वर्णित कर रही है।*

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Associate Editors:
Margaret Abraham, Tina Uys, Raquel Sosa, Jennifer Platt, Robert Van Krieken.

Consulting Editors:
Izabela Barlinska, Louis Chauvel, Dilek Cindoğlu, Tom Dwyer, Jan Fritz, Sari Hanafi, Jaime Jiménez, Habibul Khondker, Simon Mapadimeng, Ishwar Modi, Nikita Pokrovsky, Emma Porio, Yoshimichi Sato, Vineeta Sinha, Benjamín Tejerina, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Juliana Tonche, Andreza Galli, Renata Barreto Preturlan, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Celia Arribas, Rafael de Souza.

Colombia:
María José Álvarez Rivadulla, Sebastián Villamizar Santamaría, Andrés Castro Araújo, Katherine Gaitán Santamaría.

India:
Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Jyoti Sidana, Ritu Saraswat, Uday Singh.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Hamidreza Rafatnejad, Saghar Bozorgi, Najmeh Taheri.

Japan:
Kazuhisa Nishihara, Mari Shiba, Kousuke Himeno, Tomohiro Takami, Yutaka Iwadate, Kazuhiro Ikeda, Yu Fukuda, Michiko Sambe, Yuko Hotta, Yusuke Kosaka, Shuhei Naka, Kiwako Kase, Misa Omori, Kazuhiro Kezuka.

Poland:
Krzysztof Gubański, Kinga Jakieła, Kamil Lipiński, Przemysław Marcowki, Karolina Mikołajewska, Mikołaj Mierzejewski, Adam Müller, Karolina Fiut, Patrycja Pendrakowska, Nastazja Stoch, Teresa Teleżyńska.

Romania:
Cosima Rughiniș, Ileana-Cinziana Surdu, Adriana Bondor, Ramona Cantaragiu, Miriam Cihodariu, Daniela Gaba, Angelica Helena Marinescu, Cătălina Petre, Mădălin Rapan, Lucian Rotariu, Alina Stan, Balazs Telegdy, Elena Tudor, Cristian Constantin Vereș.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Elena Nikiforova, Asja Voronkova.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Aytül Kasapoğlu, Nilay Çabuk Kaya, Günnur Ertong, Yonca Odabaş, Zeynep Baykal, Gizem Güner.

Media Consultants: Gustavo Taniguti, José Reguera.

Editorial Consultant: Abigail Andrews.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय: नवउदारवाद पर प्रतिक्रियाएं **2**

रुसी समाजशास्त्रियों के साथ एक प्रेरणादायक सहयोग
सायमन क्लार्क, यू.के. से एक साक्षात्कार **4**

समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में – समाजशास्त्र से परे जाना
ऐलेन तौरेन, फ्रांस **7**

समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में – कानून एवं समाजशास्त्र के मध्य एक वार्तालाप
कल्पना कन्नाबिरन **9**

लोकतान्त्रिक संक्रमण की चुनौतियां
मैन्युएल एन्टोनियों गेरेटन, चिली से एक साक्षात्कार **12**

> उरुग्वे का सामाजिक प्रजातन्त्र

उरूग्वे – लेटिन अमरीका का अग्रणी
फेलिपे एरोसेना, उरूग्वे **15**

उरूग्वे की सरकारी शिक्षा कितनी सार्वजनिक है?
एड्रियाना मरेरो तथा **लिएन्ड्रो परेरा, उरूग्वे** **17**

उरूग्वे का करिश्मा : पुनर्वितरण और संघवाद का विकास
मार्कोस सुपरविएले तथा मारिएला क्वीनोन्स, उरूग्वे **19**

उरूग्वे का कृषक आंदोलन
डियेगो इ. पिनेरो, उरूग्वे **21**

> हंगरी का दक्षिणपंथी प्रोत्कर्ष

हंगरी में माफिया समाज का उदय
ज्योर्जी सपेली, हंगरी **23**

समकालीन हंगरी में वर्ग का भविष्य
एस्थर बास्था, हंगरी **25**

अभिजन/अभिजात्य वर्ग की (गैर) जिम्मेदारी पर लेख
ज्योर्जी लेंग्यिल, हंगरी **27**

> क्षेत्र आधारित टिप्पणियाँ

दक्षिण अफ्रीका : महिला खनिक एवं दबा हुआ आत्म (स्व)
असान्डा बेन्या, दक्षिण अफ्रीका **30**

कोते दी आइवर : मोबाइल फोन की प्रतीकात्मक राजधानी
जोरडाना मेटलोन, फ्रांस **33**

> सम्मेलन प्रतिवेदन

यूरोपियन समाजशास्त्र परिषद की सभा
जैनीफर प्लाट, यू.के. **35**

समापक घोषणा–पत्र
ALAS की 29वीं कांग्रेस, चिली में स्वीकृत **37**

सामाजिक रूपान्तरण एवम् डिजिटल युग
एलिजा पी. रीज, ब्राजील **39**

वैश्विक संवाद का रुसी दल
एलेना जाद्रावोमिस्लोवा, रुस **40**

> रूसी समाजशास्त्रियों के साथ एक प्रेरणादायक सहयोग

सायमन क्लार्क के साथ एक साक्षात्कार

80 के दशक में सायमन क्लार्क जो कि वारिक विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एक ब्रितानी समाजशास्त्री हैं अपने सैद्धान्तिक योगदान हेतु जाने जाते हैं। विशेषतः मार्क्स के विषय में उनका मौलिक विवेचन तथा आधुनिक समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र के उदारवादी आधारों की आलोचना क्लार्क को महत्वपूर्ण बनाता है। 1990 में क्लार्क ने सोवियत संघ की निर्णायक यात्रा की तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की एक दुर्लभ योजना के माध्यम से अनुसंधान के दो दशकों का उद्घाटन किया। रूसी समाजशास्त्र में एक नवीन सम्प्रदाय, जो रूपान्तरण के दौर में समाज का परीक्षण करेगा, के वे मुख्य प्रेरक बने। अपने सहयोगियों पीटर फेयरब्रदर आदि के साथ क्लार्क ने तुलनात्मक श्रम सम्बन्ध अनुसंधान केन्द्र (आइ एस आइ टी ओ) में रूसी समाजशास्त्र को एक नेटवर्क (जाल) के अन्तर्गत संगठित किया। यहाँ क्लार्क एवं उनके रूसी सहयोगियों ने एक श्रम साध्य विस्तृत अनुसंधान किया। यहाँ क्लार्क एवं उनके रूसी सहयोगियों ने एक ऐसे विस्तृत अध्ययन को प्रस्तुत किया जिसमें कार्य क्षेत्रों एवं गृहस्थियों पर आर्थिक सुधार के प्रभाव तथा श्रमिकों एवं उनके संगठनों की इस पर प्रतिक्रियाओं को अत्यन्त सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया गया है। अपने मापक स्तर, अन्तर्दृष्टि एवं मौलिकता की दृष्टि से यह अध्ययन विशिष्ट है तथा प्रभुत्वमूलक नव्य उदारवादी विश्वास को तत्काल एवं तत्परता से चुनौती देता है। आइ एस आइ टी ओ की शैली भी साथ ही स्वयं में विशिष्ट व महत्वपूर्ण है। यदि संस्तरण एवं अधीनस्थता सोवियत संगठन की मुख्य विशेषताएं हैं तो आइ एस आइ टी ओ में सायमन क्लार्क ने सहयोग व समन्वय के भाव को स्थापित करता है जो विश्वास, मित्रता एवं पारस्परिक शिक्षण के पक्षों पर आधारित है। यहाँ पर क्लार्क का साक्षात्कार उनके दो पूर्व विद्यार्थियों, साराह आश्विन जो लन्दन स्कूल ऑफ इकनामिक्स में शिक्षक हैं एवं वेलेरी याकुवोविच जो ई एस एस ई सी बिजनेस स्कूल फ्रांस में शिक्षक हैं, के द्वारा लिया गया है।

वेलेरी : 1980 के दशक के अन्त के दौर में अनेक पश्चिमी समाजशास्त्री सोवियत संघ में सामाजिक परिवर्तन के 'स्वाभाविक प्रयोग' का अवलोकन करने गये। लेकिन कुछ समाजशास्त्रियों, जो कोई भी हों, ने वहाँ एक नवीन शोध संस्थान की स्थापना की। आपकी चेतना में ये विचार कैसे आया?

सायमन क्लार्क समरा से अपने प्रशंसक समाजशास्त्रियों के साथ।

एस सी : मार्च 1990 में एनी फिजाकेलिया एवं मैं वारिक विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के एक समूह के साथ रूस गया। मेरे अन्दर तत्काल इस पक्ष को लेकर उत्तेजना हुई कि नवीन सम्भावनाओं का एक व्यापक अवसर मेरे सामने उपस्थित हो गया है। संयोगवश हम लोग श्वेतलाना नातालुश्को से मिले जो ''उच्चतर समाजशास्त्र कोर्स'' को चला रही थी जिसे गैलिना मिखाल्योवा ने हायर कामसोमोल स्कूल (जिसे इन्स्टीट्यूट ऑफ यूथ का नया नाम दिया गया है) में स्थापित किया गया था। इस कोर्स को चलाने का मुख्य उद्देश्य रूसी क्षेत्र के युवा समाजशास्त्रियों को प्रशिक्षित करना था। लोकतान्त्रिक चुनावों की अनुपस्थिति में जनमत सर्वेक्षण वैकल्पिक सामाजिक संगठनों हेतु महत्वपूर्ण उपकरण बन गये थे। इन संगठनों का निर्माण पैरेस्त्रोयिका के अन्तर्गत हुआ था (साथ ही उस दल एवं श्रमिक संघ संगठनों के लिए भी जो शक्ति को बनाये रखना चाहते थे)। अनेक समाजशास्त्री/सक्रिय कार्यकर्ता जो अपने समाजशास्त्रीय ज्ञान को विकसित करने के इच्छुक थे, मास्को, में जहाँ सापेक्षिक रूप से प्रगतिशील

> >

परिवेश था, समाजशास्त्र के अध्ययन हेतु आये। मुझे दुबारा दिसम्बर में एक सप्ताह के लिए व्याख्यानों हेतु आमन्त्रित किया गया। इन व्याख्यानों में वादिम बोरीसोव एवं ओलगा रोडिना विद्यार्थी के रूप में सम्मिलित थे जो आइ एस आइ टी ओ के मुख्य सम्बल बनने वाले थे। आगामी मार्च में मैं एवं पीटर फेयरब्रदर पुनः विद्यार्थियों के एक दल को लेकर गये एवं अनेक अन्य युवा समाजशास्त्रियों जिनमें तुम, वेलरी याकुवोविच, व्लादिमिर (''वोलोद्या'') इलिन एवं पीटर बिजायुकोव सम्मिलित थे, से सम्पर्क हुआ। उस समय दिल को सुख पहुँचाने वाले क्षेत्रों को देखा तथा वैकल्पिक श्रमिक आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं से मुलाकात हुई।

उस समय, जैसा कि तुमने भी कहा, अनेक पश्चिमी समाजशास्त्रियों ने सोवियत संघ में अपने शोध प्रारम्भ किये पर उनमें से अनेक ने अपने क्षेत्रीय कार्य को सोवियत अनुसंधान संस्थानों, सर्वेक्षण संगठनों अथवा स्नातक विद्यार्थियों को करने के अवसर दे दिये जिन्होंने निम्नस्तरीय परिमाणात्मक आंकड़ों (सोवियत संघ में गुणात्मक अनुसंधार गैर–वैज्ञानिक माना जाता था) का संकेन्द्रण किया एवं पुरोध शोधों की पुनरावृत्ति वाले प्रतिवेदन अधिकांशतः प्रकाश में आये। हम दोहरी प्रकृति के निम्न स्तरीय प्रदत्तों जिनकी विश्वसनीयता संदेहास्पद थी, के विश्लेषण के प्रति रूचि नहीं रखते थे और स्वयं कुछ अनुसंधान करने के इच्छुक थे। समय एवं भाषा हमारे सम्मुख अन्य अवरोध थे परन्तु वादिम, वोलोद्या एवं ओल्गा ने हमारे लिए विवेचनकर्ता का काम किया तथा साक्षात्कारों में सहयोग कर्ता बने। अब हमारे पास रूचि रखने वाले सजग शोधकर्ता थे जो नृवंशीय एकल अध्ययनों को सम्पन्न कर सकें। इस यात्रा के उपरान्त के वर्ष में हमने चार यात्रायें की तथा वादिम एवं वोलोदया के साथ रूस में चारों तरफ घूम कर पायलट अध्ययन किये, श्रमिक आन्दोलन के कार्यकर्ताओं से साक्षात्कार लिए एवं अन्य सम्भावित सहयोगकर्ताओं से सम्पर्क किया। जिनसे भी हम मिले उन्हें यही कहा कि हम सहयोग मूलक नृवंशीय अनुसंधान करने के इच्छुक हैं, परन्तु हमारे पास कोई आर्थिक संसाधन नहीं थे। यह कारण हमारे लिए एक अवसर बना कि हम उन लोगों को पृथक करें जो इस साझा अनुसंधान में केवल आर्थिक हित के कारण जुड़े थे और उन लोगों पर केन्द्रित करें जो इस परियोजना में अपनी रूचि के कारण सकारात्मक ढंग से सहभागिता करना चाहते थे। हमने इस आधार पर मास्को में एक अनुसंधान की दृष्टि से उत्कृष्ट टीम का गठन किया जिसमें स्किताइवकर, समारा एवं केमिरावो एवं दक्ष नेतृत्व देने वाले वादिम बोरिसोव, व्लादिमिर इलिन, इरीना कोजिना, पिट्र विज्युकोव एवं वैरोनिका काबालिना सम्मिलित थे।

बाद में हमने पर्म, येक्टेरिनबर्ग, सेण्ट पीटर्सबर्ग, उल्यानोवस्क तथा इवानोवो स्थानों पर अनुसंधान टीम का गठन किया। समूचा कार्यक्रम शोध टीम एवं शोध नेतृत्व के मध्य मित्रता एवं प्रतिबद्धता के साथ मिल जुल कर किया गया। हमारे पास कोई संस्थागत स्वरूप नहीं था पर हमने सदैव अपनी साझेदारी पर बल दिया और इस प्रयास ने सोवियत संघ एवं सम्बद्ध संस्थाओं के विघटन के उपरान्त एक अनौपचारिक संगठन का रूप ग्रहण किया और विभिन्न क्षेत्रों में इसे संस्थागत आधार भी प्राप्त हुआ। हमारे साझा कार्यक्रम को इस आधार पर एक संस्थागत पहचान प्राप्त हुई। अनेक प्रशासनिक कठिनाइयों से गुजरते हुए हमने इन्स्टीट्यूट फॉर कम्पेरेटिव लेबर रिलेशन रिसर्च (तुलनात्मक श्रम सम्बन्ध अनुसंधान संस्थान) (आइ एस आइ टी ओ) की स्थापना की। यह एक गैर लाभकारी सामाजिक संगठन है जिसके अपने बैंक खाते हैं जो सुसंगठित हैं, प्रबन्धन समिति है, निदेशक, पुस्तकालयकर्मी एवं टैक्स अधिकारियों के सम्मुख अधीनस्थता के रूप में व्यवस्थित ढाँचा है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि व्यवहार में आइ एस आइ टी ओ एक अनौपचारिक नेटवर्क (जाल) के रूप में सक्रिय है जो मित्रता, साझेदारी एवं अनुसंधान के प्रति प्रतिबद्धता से निर्मित है।

साराह : जैसा आपने कहा सोवियत संघ में गुणात्मक अनुसंधान को गैर–वैज्ञानिक माना जाता था। तो क्या आइ एस आइ टी ओ की टीम के सदस्यों को नृवंशीयता का अनुभव था या उन्हें प्रशिक्षण देने की आवश्यकता आपको हुई?

वेलेरी : जैसे मुझे याद है इस अनुसंधान की ''गैर–वैज्ञानिक'' प्रतिष्ठा के बावजूद 1990 के दशक के प्रारम्भ में रूस में गुणात्मक अनुसंधान के प्रति व्यापक उत्साह था। बिना गुणात्मक उपागम के किस अन्तर्दृष्टि को आप छोड़ जाते हैं कृपया बतलाइये?

एस सी : जब हमने पहली बार अपने शोध कार्यक्रम बनाये तो हमने मास्कों में अनेक समाजशास्त्रियों से बातचीत की। उनका मत था कि रूस के क्षेत्र में कोई समाजशास्त्री नहीं केवल ''क्षेत्रीय शोधकर्ता'' हैं। समाजशास्त्र सामाजिक दार्शनिकों एवं सामाजिक शोधकर्ताओं के मध्य विभाजित था। सामाजिक दार्शनिक स्वयं को वास्तविक समाजशास्त्री मानते थे। उन्होंने बिना अवसर गंवाये स्वयं को मार्क्सवाद–लेनिनवाद से पश्चिमी सामाजिक दर्शन की तरफ अग्रसर कर लिया परन्तु उन्होंने किसी की भी आनुभविक वैद्यता की जाँच नहीं की। सामाजिक अनुसंधान कर्ताओं का बल था कि गुणात्मक पद्धतियाँ (''लचीली'' पद्धतियाँ) भले ही स्वानुभाविक प्रकृति का महत्व रखती हों, केवल परिमाणात्मक पद्धतियाँ (''कठोर'' पद्धतियाँ) ही वास्तव में वैज्ञानिक हैं। हमने जिन युवा समाजशास्त्रियों विशेषतः रूस के क्षेत्र से सम्बद्ध युवा समाजशास्त्रियों से मुलाकात की ने गुणात्मक पद्धतियों में वास्तविक रूचि का प्रदर्शन किया। एक सीमा तक यह संसाधनों से जुड़ा पक्ष था क्योंकि मास्को स्थित संस्थानों के बाहर परिमाणात्मक अनुसंधानों हेतु बहुत कम आर्थिक संसाधन थे जबकि कोई भी गुणात्मक अनुसंधान कर सकता था यदि उसके पास समय की उपलब्धता है। लेकिन यह इसलिये भी था कि सोवियत भाग्यवाद एवं परिमाणात्मक अनुसंधान के राजनीतिकरण से उनका मोहभंग हो चुका था। किसी को यह विश्वास नहीं था कि परिमाणात्मक आंकड़े जिन्हें राज्य के अभिकरणों ने प्रकाशित किया है, सरकार की राजनीतिक दृष्टि के अनुरूप हैं। गुणात्मक अनुसंधान, व्यकितयों का अवलोकन व उनसे बातचीत वास्तविकताओं के उन स्तरों को बताती है, जो सोवियत प्रकाशनों ने कभी नहीं बताये अतः युवा एवं आलोचनात्मक समाजशास्त्रियों के लिए यह उत्साहमूलक स्थिति उत्पन्न कर सका।

जब हमने अपनी पहली परियोजना प्रारम्भ की तब हमने गुणात्मक पद्धतियों पर एक तीन दिवसीय सेमीनार का आयोजन मास्को के बाहर रेडियो मन्त्रालय के एक अवकाश केन्द्र (dom otdykha) में किया। जहाँ हम लाग केबिन्स के अन्दर सोये। इस जगह का तापमान कँपा देने वाला था। हमारा मुख्य संदेश यह था कि प्रत्येक साझेदार शोधकर्ता समझे कि गुणात्मक अनुसंधान अत्यन्त कठिन एवं व्यवस्थित होता है। गुणात्मक अनुसंधान के प्रविधिक तकनीकी पक्षों पर पीटर फेयरब्रदर ने एक अत्यन्त प्रभावी अविस्मरणीय बहस को प्रारम्भ किया। इस बहस में उपयुक्त व प्रचुर मात्रा में रिकार्डिंग उपकरणों की उपलब्धता, साक्षात्कार अथवा अवलोकन के उपरान्त तत्काल क्षेत्रीय नोट्स लेने की विद्या, साक्षात्कार की रिकार्डिंग से सम्बद्ध तकनीकी एवं आचारीय पक्षों इत्यादि के महत्व पर विमर्श हुआ। हम में से प्रत्येक उत्साही था और हमने गुणात्मक अनुसंधान के अत्यावश्यक आधारों को जल्दी ही जान लिया।

हमाने अनुसंधान के अधिकांश भाग विशेषतः औद्योगिक उद्यम से सम्बद्ध अनुसंधान तुलनात्मक एकल अध्ययनों पर आधारित थे। एक स्वीकृत अनुसूची के आधार पर निर्धारित एकल अध्ययनों का दायित्व प्रत्येक टीम का था। प्रारम्भ में हमने सेमीनार आयोजित की तथा उसमें सभी अनुसंधानकर्ताओं को सम्मिलित किया। इन सेमीनारों में निश्चित किया जाता था कि किससे साक्षात्कार लिया जायेगा, उदाहरण के लिए मुख्य वरिष्ठ प्रबन्धक, दुकान के मुख्य कर्ताधर्ता, अधिकर्मी एवं सामान्य श्रमिकों के निदर्श में से जिनमें एक मुख्य दुकान तथा एक सहायक दुकान से सम्बद्ध है। अवलोकन के किस स्वरूप को प्रयुक्त किया जावेगा उदाहरण के लिये दुकान के मुख्य कर्ताधर्ता के कार्यालय में बैठे व्यक्ति का, श्रमिक संघ के अध्यक्ष का या अधिकर्मियों के साथ जुड़ी इकाई का। तत्पश्चात् हमने

>>

साक्षात्कार निर्देशिक को निर्मित किया जो सूचना प्रदान करने वाली प्रत्येक श्रेणी के लिये थी एवं प्रत्येक उद्यम के लिए लिखे जाने वाले प्रतिवेदन का खाका तैयार किया। इस प्रकार हमने स्वयं को, जितना सम्भव था, सुनिश्चित किया कि समस्त एकल अध्ययन तुलनात्मक आधार पर किये जावें। प्रत्येक एकल अध्ययन प्रतिवेदन एवं उससे सम्बद्ध साक्षात्कार सामग्री तथा क्षेत्रीय नोट्स को समस्त अनुसंधान टीम्स (समूहों) को वितरित किया जाता था और टीम की बैठक में उस पर बहस की जाती थी। प्रत्येक तीसरे माह हम टीम के संचालकों की बैठक कर प्रगति का पुनरावलोकन करते थे तथा प्रत्येक वर्ष एक शोध सेमीनार का आयोजन करते थे जिसमें सभी सहभागी एकल अध्ययन प्रतिवेदनों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पनाओं का निर्माण एवं मूल्यांकन करते थे। प्रत्येक परियोजना हेतु एक अन्तिम/निर्णयात्मक सेमीनार आयोजित की जाती थी जिसमें प्रत्येक से अपेक्ष की जाती थी कि वह सभी एकल अध्ययन प्रतिवेदनों के आधार पर एक विश्लेषणात्मक लेख की प्रस्तुति करे। तत्पश्चात् इस परियोजना के आधार पर रूसी एवं अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन किये जाते थे।

मुझे संदेह है कि बिना किसी गुणात्मक उपागम के हम कोई अनतर्दृष्टि विकसित कर सकते हैं। लोग व्यक्तिगत रूप से जानते हैं कि सोवियत, रूसी संस्थाओं एवं संगठनों में क्या हुआ। परन्तु इस जानकारी/ज्ञान को कहीं भी संकेन्द्रित एवं वर्गीकृत नहीं किया गया। बिना किसी गुणात्मक अनुसंधान के हमारे पास यह विचार नहीं आ सकता कि सर्वेक्षण में क्या प्रश्न प्रस्तुत किये जावें साथ ही यह भी ज्ञान नहीं होता कि उत्तरों का विवेचन कैसे किया जावे। किसी भी परियोजना के अन्तिम चरण में परि–माणात्मक अनुसंधान उपस्थित होता है जब हम गुणात्मक अध्ययनों को केन्द्र में रख कर उस आधार की रचना करते हैं जहाँ निष्कर्षों को सामान्यीकृत किया जा सके। हम परिमाणात्मक पद्धतियों के विरोधी नहीं हैं पर हमें सन्देह थ कि उपलब्ध रूसी परिमाणात्मक आंकडों की वास्तविकता क्या है? हमारे अनेक सहयोगी जो साक्षात्कारकर्ता के रूप में सक्रिय थे, उन तरीकों को जानते थे जिन्हें साक्षात्कारकर्ता अनेक कारकों के चलते सम्मिलित कर लेता है। हमने भी प्रदत्तों/आंकड़ों में अनेक महत्वपूर्ण विसंगतियों को पाया जिन्हें हम स्वयं के अनुसंधान में प्रयुक्त कर सकते थे साथ ही अनेक प्रतिष्ठित सर्वेक्षणों में से भी उन्हें प्रयुक्त किया जा सकता था।

1998 में चार केन्द्रीय क्षेत्रों से सम्बद्ध श्रम बाजार से सम्बन्धित सर्वेक्षण, जिसका तुमने वेलेरी याकुवोविच ने निर्देशन किया था, उपलब्ध आंकड़ों के प्रति हमारी असन्तुष्टि का परिणाम था। तुमने कड़ी मेहनत से निदर्शन, साक्षात्कारकर्ताओं पर सख्त नजर एवं प्रदत्तों/आंकड़ों की संगतता हेतु परीक्षण के द्वारा इस सर्वेक्षण को मूर्त रूप दिया।

साराह : आइ एस आइ टी ओ के साथ आपने अप्रत्याशित रूप से अत्यधिक लेखन कार्य किया है। 18 पुस्तकें, अंग्रेजी में 55 निर्दिष्ट शोध आलेख एवं रूसी भाषा में अनगिनत प्रकाशन आपके साथ जुड़े हैं। आपको किन निष्कर्षों ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया?

एस सी : प्रारम्भ में संक्रमण के दौर में हम यह सोच रहे थे कि नवीन श्रमिक आन्दोलन क्या नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं, एवं हमारे अनुसंधान में हर स्तर पर हमें लोकतान्त्रिक एवं प्रभावशील श्रमिक संघ एवं श्रम आन्दोलन के रूप में विकास के समर्थन व्यक्त हो रहे थे। मैं सोचता हूं कि हमारे अधिकांश निष्कर्ष आकर्षण व सकारात्मकता के स्थान पर हमें निराश कर रहे थे। यू एस एस आर के विघटन के साथ थोड़ी सकारात्मकता का अहसास हुआ जब हर पक्ष सम्भव लगने लगा। इसके उपरान्त हमें हमारे सहयोगियों का नव्य उदारवाद के संदर्भ में सामना करना पड़ा। इन सुधारों का प्रतिरोध करना पड़ा जिन्होंने आम नागरिकों के जीवन व उनकी आशाओं को विघटित कर दिया। यह सब प्रतीकात्मकता से भी कहीं अधिक था। परम्परागत श्रमिक संगठनों में से कोई प्रभावी नेतृत्व नहीं था जबकि ''वैकल्पिक'' श्रमिक संगठन भ्रष्टाचार में बुरी तरह संलग्न हो गये थे। हालांकि कुछ लोग एवं लघु समूह प्रतिरोध कर रहे थे पर शीघ्र ही दमन मूलक दबाव एवं तटस्थता ने इस प्रतिरोध को हाशिये पर ला दिया।

हमारे अधिकतर अनुसंधानों ने उन सन्देहों की प्रभावी रूप से पुष्टि की जो अतीत के अनुभवों एवं अवलोकन से निर्मित हुए थे। लेकिन साथ में कुछ आश्चर्य भी उभरे। हमारी शुरूआती परियोजनाओं में से एक में हमने रूसी श्रमिकों से पूछा कि उन्हें किसने अभिप्रेरित किया। सैरगई आलाशीव ने यह परिकल्पना निर्मित की कि ''रूसी श्रमिक श्रम से प्यार करते हैं''। प्रारम्भिक स्तर पर हम लोग मुस्कराये परन्तु जो आलेख उन्होंने प्रस्तुत किया (इसका प्रकाशन मैनेजमैण्ट एण्ड इन्डस्ट्री इन रसिया : फार्मल एण्ड इनफार्मल रिलेशन्स इन द पीरियड ऑफ ट्रान्जिशन, 1995 में हुआ) के तर्क अत्यन्त प्रभावी, व्यवस्थित व अभूतपूर्व थे।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मेरा अनुमान है कि सबसे रूचिकर निष्कर्ष उस स्तर को बताते हैं जिन तक सोवियत संस्कृति, मानसिकता एवं व्यवहारों को पुनः प्रस्तुत किया गया है, वे चाहे अच्छे हों अथवा बुरे। यह पुनः प्रस्तुतियाँ संस्थाओं के समूचे परिवेश में हुयी हैं। हमने अपने अनुसंधान में इन स्थितियों को श्रमिक संगठनों एवं औद्योगिक प्रबन्धन तथा दुकान संचालन की संस्कृति में पाया। लेकिन इस प्रघटना को परम्परागत राज्य संरचनाओं की पुनः रचना में स्पष्टतया देखा जा सकता है।

कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष 1998 में गृहस्थ सर्वेक्षण के दौरान प्रकाश में आये। इस सर्वेक्षण से हमें उच्च गुणवत्ता मूलक परिमाणात्मक आंकडे प्राप्त हुए जिनसे हमने अनेक परिकल्पनाओं का परीक्षण किया। कीमारोवो की लेना वार्शावस्काया ने हमें अनेक में से एक सुझाव यह दिया कि घरेलू कृषि गरीबों की जीवन रेखा नहीं है जैसा कि अनेक विचारक दावा करते हैं। लेना वार्शावस्काया की दृटि से समय एवं मुद्रा धन की दृष्टि से घरेलू कृषि की कीमत बहुत अधिक है जबकि कृषि उत्पाद पर मिलने वाला लाभ बहुत कम है। इस तर्क की निरन्तरता में यह भी कहा गया कि सुखी लोगों (जो अच्छी राशि अर्जित कर लेते हैं) के लिए यह अवकाश गतिविधि है जो कि सोवियत की कार्य संहिता, प्रकृति के आदर्शीकरण एवं विनिमय की परम्पराओं के उदाहरणों से व्यक्त होती है।

एक अन्य मुख्य निष्कर्ष बाजार में पारिश्रमिक विभेद के निर्धारकों पर संस्थाओं के प्रभुत्व से सम्बद्ध है। सामान्यतः एक विचार, जो कि परम्पराओं के मजबूत समर्थन से जुड़ा है पर भुला दिया गया है, से औद्योगिक सम्बन्धों के विशेषज्ञ श्रम अर्थशास्त्रियों के विपरीत यह बताते हैं कि पारिश्रमिक देय एवं अदेय श्रम के घरेलू विभाजन की श्रम अर्थशास्त्र व्याख्या करने में असमर्थ हैं क्योंकि मेरा मत है कि समाज विज्ञानों की सर्वाधिक महत्व पूर्ण जिम्मेदारी है कि वे नव्य क्लासिकीय अर्थशास्त्र के विचारों के वैज्ञानिक पक्षों को चुनौती दें व उन्हें हतोत्साहित करें और यह बतायें कि ये विचार निरूद्देश्य एवं घातक विचारों का समर्थन करते हैं।

वेलेरी : अब आइ एस आइ टी ओ की क्या स्थित है?

एस सी : एक संस्थाके रूप में आइ एस आइ टी ओ तरलता की प्रक्रिया (क्षय प्रक्रिया) से गुजर रहा है क्योंकि रूसी राज्य जिन प्रशासनिक एवं वित्तीय कार्यप्रणालियों को चाहता वे धन व समय की दृष्टि से बहुत महंगी हैं, लेकिन अनौपचारिक सम्बद्धताएं निरन्तर बनी है। कुछ हद तक आइ एस आइ टी ओ अपनी सफलताओं के कारण संकट में आया है। इसके सदस्य रूसी विश्वविद्यालयों में सर्वोच्च स्तर के अनुसंधान एवं शैक्षणिक पदों हेतु सर्वाधिक चाहे जाने वाले आवेदक बन गये। बहुसंख्यक सदस्यों ने अकादमिक पद प्राप्त कर लिये हैं जिसके अन्तर्गत वे अपने कार्यों को जारी रख सकते है। मार्च 2014 में आइ एस आइ टी ओ की अन्तिम सेमीनार सम्भवतया मिश्र में होगी जिसमें सभी सहकर्मियों एवं मित्रों को आमन्त्रित किया जावेगा। आइ एस आइ टी ओ के प्रकाशनों को www.warwick.ac.uk/russia पर देखा जा सकता है। ■

> समाजशास्त्र के परे की गतिकी

ऐलेन तौरेन, इकोल डेस हुयेट्स इट्यूड्स इन साइंसेज सोश्यल्स, पेरिस, फ्रांस एवं पूर्व उपाध्यक्ष आई.एस.ए. 1974–78

समाजशास्त्र के विश्व में **ऐलेन तौरेन** पिछले चार दशकों से अत्यन्त प्रभावी व्यक्तित्व के रूप में स्थापित हैं। एक औद्योगिक समाजशास्त्री के रूप में स्वयं को प्रारम्भ करते हुए तौरेन आज सामाजिक आन्दोलनों के सिद्धान्तकार के रूप में जाने जाते हैं। समाज की सामूहिक स्व–निर्मिति के विचार को प्रस्तुत करते हुए तौरेन समाजशास्त्रीय हस्तक्षेप हेतु एक नवीन पद्धतिशास्त्र को प्रोत्साहित करते हैं। तौरेन एक ऐसे समाजशास्त्री हैं जिन्हें वैश्विक स्तर पर जाना जाता है। आज ऐसे समाजशास्त्रियों की संख्या बहुत कम है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में स्वतन्त्रता एवं शिष्टता के विस्तार हेतु सामाजिक आन्दोलनों की अर्थवत्ता को तौरेन ने स्थापित किया है। इस पक्ष को तौरेन ने अपने लेखन में भी व्यक्त किया है। उनकी पुस्तकों में द मे मूवमेंट ऑफ यूटोपियन कम्युनिज्म (1968), द पोस्ट इन्डस्ट्रियल सोसायटी (1968), द प्रोडक्शन ऑफ सोसायटी (1973), द वायस एण्ड द आई (1978), सालिडेरिटी : द एनालिसिज आफ ए सोश्यल मूवमैण्ट : पोलैण्ड 1980–81 (1983) (फ्रांन्कोइस ड्यूबेट, मिशेल विवोरका एवं यान स्ट्रेजलैकी के सहयोग से), द रिटर्न आफ द एक्टर (1984) एवं हाल में प्रकाशित द एण्ड ऑफ सोसायटीज सम्मिलित हैं। तौरेन ने समाजशास्त्रीय विश्लेषण एवं इ.एच.इ.एस.एस. में हस्तक्षेप हेतु पेरिस में एक केन्द्र की स्थापना की है जिसमें विश्व के सभी भागों के अनेक विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

ऐलेन तौरेन

मेरा प्रथम एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभिमुखन समाजशास्त्र के साथ उस समय हुआ जब विद्यालय व्यवस्था का मैंने विरोध किया क्योंकि यह व्यवस्था अपने प्रतिमानों को समर्थन देने की ज्यादा इच्छुक रहती है बजाय इसके कि वह युवाओं की विभिन्न आवश्यकताओं का सम्पोषण करे। मैं एक ऐसा विशिष्ट उदाहरण था जो एक असन्तुष्ट एवं अधिक सफल न होने वाले विद्यालयी विद्यार्थी के रूप में उपस्थित हुआ था परन्तु जो अन्त में देश की सर्वाधिक प्रतिष्ठित ''प्रतियोगी परीक्षा'' में अपनी योग्यता का लोहा मनवा सका और इस कारण प्रसिद्ध 'इकोल नार्मेल सुपरियूर' का विद्यार्थी बन गया। दो वर्ष के उपरान्त मैंने इस महत्वपूर्ण स्थान को छोड़ दिया और मध्य यूरोप में यात्री के रूप में तथा अर्द्धकुशल खान श्रमिक के रूप में एक वर्ष व्यतीत किया।

जॉर्जस् फ्रायडमैन, जो यूरोपियन औद्योगिक समाजशास्त्र, जो हाल में अस्तित्व में आयी है, से महत्वपूर्ण रूप से जुड़े हैं, ने मुझे एक समूह की सदस्यता लेने हेतु आमन्त्रित किया जो कि नवीन प्रौद्योगिकी के द्वारा प्रारम्भ किये गये विभिन्न उद्योगों में व्यावसायिक परिवर्तन के अध्ययन कर रहा था। उन्होंने मुझे एक मुख्य फ्रांसीसी ओटोमोबाइल कम्पनी के अध्ययन का प्रभारी बना दिया। इस राष्ट्रीयकृत कम्पनी का नाम रेनौल्ट कम्पनी था। इस विशाल निगम के अनेक संयन्त्रों में औद्योगिक संगठन के स्वरूप एवं रोजगार की विस्तृत प्रकृति का अध्ययन करने में मैंने एक वर्ष छहः माह का समय व्यतीत किया। अपनी पहली पुस्तक के रूप में, मैंने इस अत्यन्त गहन परियोजना के परिणामों को 1955 में प्रस्तुत किया। इस दौरान मैंने एक अन्य प्रतियोगिता जीती जो इतिहास विभाग में प्रोफेसर बनने से सम्बद्ध थी। पर मैं फ्रायडमैन को धन्यवाद दूँ उन्होंने मुझे समाजशास्त्र में पूर्णकालिक अनुसंधानकर्ता के रूप में चयनित किया जहाँ मैं अपना अनुसंधान समूह निर्मित करने के लिए पूर्ण स्वतन्त्र था। फ्रायडमैन ने मुझे विनम्रता से कहा कि यदि तुम इस कठिन प्रतियोगिता में सफल होते हो तो मैं तुम्हारे लिए अनुसंधानकर्ता का पद प्राप्त करूंगा और यदि तुम असफल होते हो तो फिर मैं वैसा ही करूंगा क्योंकि हमें अनुसंधानकर्ताओं की नवीन पीढ़ी की आवश्यकता है।

कुछ वर्षों तक फ्रेंच नेशनल सेण्टर फार साइंटिफिक रिसर्च (सी एन आर एस) में कार्य करने के उपरान्त मैंने एक वर्ष अमेरिका के हारवर्ड, कोलम्बिया एवं शिकागों में तथा एक अन्य वर्ष चिली में व्यतीत किया। चिली में मैंने औद्योगिक समाजशास्त्र के एक केन्द्र की स्थापना की तथा सबसे महत्वपूर्ण कार्य के रूप में एक युवा चिली जीव विज्ञानी से विवाह किया। 34 वर्ष की आयु में, मैं इकोलडेस हुयेट्स डेस साइंसेज सोश्यलस में पूर्ण प्रोफेसर के रूप में चुन लिया गया। इस केन्द्र का उस समय एक भिन्न नाम था। यहाँ मैंने अपनी पेशेवर जिन्दगी का शेष भाग व्यतीत किया, हाँ इस बीच मैंने कुछ वर्ष लैटिन अमेरिका में एवं कुछ सेमेस्टर्स यू.सी.एल.ए, बर्कले एवं न्यूयॉर्क नगर के न्यू स्कूल में भी बिताये।

>>

1966 में अधिकारिक अकादमिक व्यवस्था के प्रति विरोध की चेतना ने मुझे पेरिस के निकट स्थापित एक नवीन विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑफ नान्तेरे का भाग बनने को प्रेरित किया। मैंने यह नहीं सोचा था कि मैं अब अपने कुछ वर्ष यूरोप में विद्यार्थी आन्दोलन के केन्द्र में व्यतीत करने वाला हूँ जो स्वयं को बहुत तीव्रता से एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं राजनीतिक ड्रामा में रूपान्तरित कर रहा था। इस दौर में जिन विद्वानों ने पुस्तकें लिखी, मैं सोचता हूँ कि मेरी पुस्तक सर्वाधिक स्वीकारी गयी क्योंकि मैंने इसे 1964 में बर्कले के ''फ्री स्पीच मूवमैण्ट'' के उपरान्त की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना माना जो ''सामाजिक'' की अपेक्षा ''सांस्कृतिक'' आन्दोलनों का हिस्सा थी। इसके साथ ही मैंने इस सांस्कृतिक आन्दोलन एवं पुराने मार्क्सवादी विचारकों, विशेषतः ट्रास्की एवं माओ की विचारधाराओं जो इसकी राजनीतिक दृष्टि से विवेचना करती थी, के मध्य के अन्तर्विरोधों को रेखांकित किया। मेरे विचार में यह नवीन शराब को पुरानी बोतलों में डालने जैसा था। परिणामस्वरूप पुरातन विचारवादी प्रोफेसर्स एवं ''वामपंथी'' राजनीतिक समूहों के साथ मेरे वैचाारिक विवाद प्रारम्भ हुए। उस समय मैं एक अराजकतावादी एवं साम्यवाद विरोधी डेनियल कोहन–बैंनडिट के विचारों का गहन समर्थक था, जो नान्तेरे में, जहाँ मैं अध्यापन कर रहा था, सर्वाधिक प्रभावशाली था।

मैं बड़ी तेजी से इस विचार से प्रभावित हो रहा था व इसे स्वीकार रहा था कि सामूहिक व्यवहारों के अधिकांश स्वरूपों को कानून, प्रथा एवं प्रभावी मूल्यों की सहमति अथवा विमति के आधार पर पारिभाषित नहीं किया जा सकता। इस विचार ने मुझे दो भिन्न दृष्टिकोणों की रचना हेतु प्रेरित किया। पहला दृष्टिकोण सहभागिता के माध्यम से सामूहिक व्यवहार के अध्ययन पर आधारित हैं। अनेक घटनाओं में मैंने बिना किसी प्रश्नावली के प्रयोग के सामाजिक अथवा राजनीतिक आन्दोलन के सदस्यों के साथ पूरा वर्ष व्यतीत किया और सक्रिय कार्यकर्ताओं, उनके समर्थकों एवं उनके शत्रुओं के साथ बहसों के आयोजन किये। नान्तेरे के दस वर्ष के उपरान्त मैंने विद्यार्थी आन्दोलन, अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बद्ध यूनियन (श्रमिक संघ) श्रमिक, क्षेत्रीयता पर आधारित राष्ट्रीय आन्दोलन, 1980–81 का पोलेण्ड का ''सालिडेरनाक'' (Solidarno) आन्दोलन जो मेरे लिए महानतम खुशी थी, चिली की कोयला खदान एवं स्टील उद्योग के संगठित श्रमिकों का अध्ययन इस दृष्टिकोण पर आधारित थे। हाल ही में, अपने एक मित्र के साथ मैंने मैक्सिकों के दक्षिण पूर्व में स्थित चियापास में जापटिस्टा आन्दोलन के अध्ययन में एक लम्बा समय गुजारा। मैंने प्रत्येक अध्ययन में यह प्रयास किया कि आन्दोलन में सहभागिता कर रहे लोग अपने संघर्षों के अर्थों से उच्चतम सीमा तक चेतनशील हो जायें।

यह दृष्टिकोण प्रकार्यवादी अध्ययनों से स्पष्टतया विपरीत है जिनमें कर्ता(ओं) एवं व्यवस्था(ओं) को एक ही सिक्के के दो पहलुओं के रूप में देखा जाता है। इसके विपरीत जो मेरा दूसरा सैद्धान्तिक विचार है और जिसके पक्ष में, मैं ज्यादा से ज्यादा होता गया कि सामाजिक व्यवस्था का तर्क एवं सामाजिक कर्ताओं का तर्क अथवा कम से कम उन कर्ताओं का तर्क जिनकी क्रियाएं नवाचारी एवं आलोचनात्मक हस्तक्षेप के उच्चतम स्तर तक पहुँची हैं, के मध्य प्रत्यक्ष विरोधाभास है अर्थात् वे दोनों तक एक दूसरे के विपरीत हैं। व्यवस्थाएं स्वयं के एकीकरण एवं बाहय तथा आन्तरिक परिवर्तनों के साथ समायोजन के पक्षों पर बल देती हैं जबकि कर्ता स्वयं की क्रियाओं की स्वतन्त्रता, उनकी स्वायत्तता, उनकी शिष्टता एवं उनके उत्तरदायित्वों पर बल देते हैं। यह निश्चित रूप से होता है कि दो प्रकार के तर्क समान प्रकार के चुनावों हेतु आपस में मिल जुल जाते हैं। लेकिन उन समाजों में जहाँ नियन्त्रण की आन्तरिक व्यवस्थाएं सापेक्षिक रूप से निर्बल हों एवं जिसका पर्यावरण अनवरत से परिवर्तित होता हो, ये दोनों तर्क एक दूसरे के अन्तः विरोधी हो जाते हैं इसके बावजूद कि जनमत को प्रभावित करने वाले नवीन स्वरूप निरन्तर उत्पन्न होते जाते हैं। वैश्वीकरण अपने आप में जटिलताओं में वृद्धि करता है एवं इसके परिणामस्वरूप सामाजिक जीवन के किसी भी पहलू में बहुस्तरीय संघर्ष की उपस्थिति देखी जा सकती है।

हम सभी जानते हैं कि समाजशास्त्र औद्योगिक समाजों में उभरा था। इन समाजों का परिवेश एवं ये समाज स्वयं को उत्पादन के नवीन स्वरूपों, संगठन, वितरण एवं उपभोग के नवीन पक्षों के कारण रूपान्तरित करने में व्यापक रूप से सक्षम हुए हैं अर्थात सामाजिक एवं आर्थिक संसाधनों एवं पद्धतियों का प्रयोग कर रूपान्तरण की ये स्थितियाँ उभरी हैं। ऐसा पहली बार हुआ है कि समाज स्वयं में अपने आप को उत्पन्न करने एवं स्वयं को रूपान्तरित करने हेतु सक्षम मानने लगे हैं। दुर्खाइम के आधारभूतीय सिद्धान्त : सामाजिक तथ्यों की विवेचना सामाजिक तथ्यों के माध्यम से करें–के आधार पर इन पक्षों को अत्यन्त प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है। रूपान्तरण की दूसरी श्रेणी, जो समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, तार्किकीकरण एवं बाजारीकरण को व्यक्त करती है जो अब न केवल वस्तुओं के उत्पादन पर प्रभुत्व करती है अपितु अपने तर्कों को संचार एवं प्रतिनिधित्व पर आरोपित भी करती है ताकि सामाजिक एवं आर्थिककर्ताओं को इन नवीन एवं व्यापक क्षेत्रों से विलग किया जा सके। ये कर्ता कम शक्तिशाली हो गये हैं यहाँ तक कि उनके पास अब केवल यन्त्रपरक तार्किकता ही रह गयी है।

आज हमारा मुख्य लक्ष्य उन सामाजिक स्थितियों एवं सामाजिककर्ताओं को समझना है जो औद्योगिक समाज की स्थितियों व कर्ताओं से अत्यन्त गहराई तक भिन्न हैं। एक तरफ जहाँ निरंकुशतावादी शासन प्रणाली में विस्तार देखे जा सकते हैं वहीं दूसरी ओर पश्चिम में औद्योगिक पूंजीवाद जो पहली बार 1929 में एवं उसके बाद फिर 2007–08 में वित्तीय पूंजीवाद द्वारा प्रतिस्थापित हुआ है। वित्तीय पूंजीवाद का कोई आर्थिक प्रकार्य नहीं है वह तो केवल किसी भी साधन से लाभ अर्जित करने तक ही केन्द्रित है। कर्ता केवल इस 'शक्तिशाली सट्टेबाज पूंजी' का प्रतिरोध कर सकते हैं एवं विशुद्ध लाभ के उद्देश्य का नैतिक सार्वभौमिक मूल्यों द्वारा प्रतिरोध कर सकते हैं। युद्ध उपरान्त के एक लम्बे दौर में मानवाधिकार की अवधारणा हमारी कल्पना शक्ति को प्रभावित नहीं कर सकी पर अब हम पाते हैं कि मानवाधिकार एवं लोकतन्त्र अब केवल ऐसे मूल्य हैं जो सामाजिक–राजनीतिक शक्तियों को सक्रिय करते हैं की वे लोकतन्त्र विरोधी निरंकुशतावादी शासन प्रणालियों एवं 'सट्टेबाज पूंजीवाद' का विरोध करें।

हमने जहाँ तक सम्भव हुआ है औद्योगिक समाजों के विशिष्ट संदर्भों में कर्ताओं को व्यवस्थाओं के साथ रेखांकित किया है। 1989 में बर्लिन की दीवार के पतन एवं तियामिन चौक पर सामूहिक विध्वंस की घटनाओं के साथ 21वीं शताब्दी प्रारम्भ हो गयी थी। इन के उपरान्त अरब आन्दोलन के उभार आये। लोकतान्त्रिक कार्यप्रणाली प्रत्येक स्थान पर नवीन शक्तियों का समर्थन प्राप्त करती है। मैंने अपनी एक बड़ी पुसतक 'द एण्ड ऑफ सोसायटीज' में इस उपागम से सम्बद्ध सामान्य परिवर्तन के विश्लेषण का प्रयास किया है। इस पुस्तक मे मैंने उन ''समाजों'' की समाप्ति का तर्क दिया है जो स्वयं के आधार पर सोचती/विचारती एवं कार्य/क्रिया करती हैं। समाजशास्त्रियों को स्वयं सोचना चाहिए एवं स्वीकारना चाहिए कि समाज की अवधारणा अब उस विश्व से मेल नहीं खाती जिसमें हम रहते हैं। अतः समाजशास्त्र को हम अब ''राजनीतिक आचार शास्त्र'' का नाम दे सकते हैं साथ ही समाज विज्ञान भी कहीं विलुप्त नहीं होंगे। ■

> कानून एवं समाजशास्त्र के मध्य संवाद

कल्पना कन्नाबिरन, काउंसिल फॉर सोशल डवलपमेंट, हैदराबाद, भारत, योकोहामा वर्ल्ड कांग्रेस 2014 की कार्यक्रम समिति, आइ एस ए की सदस्या तथा वुमन एण्ड सोसायटी (महिला एवं समाज) (आर सी 32) के शोध समिति की सदस्य

कल्पना कन्नाबिरन समाजशास्त्र की प्रोफेसर एवं भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान काउन्सिल (हाई.सी. एस.एस.आर) द्वारा समर्थित एक स्वायत्तशासी अनुसंधान केन्द्र ''काउन्सिल फार सोश्यल डवलपमैण्ट'' हैदराबाद की निदेशक हैं। सन् 2003 में कानून के सामाजिक पक्षों के क्षेत्र में समाज विज्ञान अनुसंधान हेतु उन्हें वी के आर वी राव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वह एन ए एल एस ए आर यूनिवर्सिटी आफ लॉ की संस्थापक शिक्षकों में से एक हैं। यहाँ पर उन्होंने 1999–2009 की अवधि में लगभग एक दशक तक समाजशास्त्र एवं कानून का अध्यापन कार्य किया। साथ ही वे 1991 में स्थापित 'अस्मिता रिसोर्स सेण्टर फॉर वीमेन' की सह संस्थापक हैं। उनका लेखन कार्य 'गैर–भेदभाव' के सामाजिक आधार, महिलाओं के विरूद्ध हिंसा, संविधानवाद के प्रश्न एवं भारत में सामाजिक न्याय पर केन्द्रित हैं। हाल में उनकी पुस्तक 'टूल्स ऑफ जस्टिस : नान डिस्क्रिमिनेशन एण्ड द इण्डिन कान्स्टीट्यूशन (रुटलेज, नयी दिल्ली, 2012) का प्रकाशन हुआ है। सन् 2012 में कल्पना कन्नाबिरन को कानून विषय के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु अमृत्य सेन पुरस्कार, जो कि विशिष्ट समाज विज्ञान विशेषज्ञों को दिया जाता है, से सम्मानित किया गया है।

कल्पना कन्नाबिरन

> >

70 के दशक के उत्तरार्द्ध में हैदराबाद में मैंने स्नातक स्तर पर समाजशास्त्र का अध्ययन प्रारम्भ किया लेकिन यह मेरा सूचित किया चुनाव नहीं था। विषयों की संयुक्तता–अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र एवं भूगोल मुझे अस्पष्ट रूप से रूचिकर लग रहा था जो साहित्य, मनोविज्ञान एवं दर्शन विषयों की संयुक्तता से भिन्न थी और निश्चय ही मैं इन विषयों में आवेदन करने की इच्छुक नहीं थी। एक दृष्टि से यह त्रुटियुक्त चुनाव था। मैं राज्य संचालित विश्वविद्यालय के एक सरकारी महाविद्यालय उस्मानिया विश्वविद्यालय के निजाम महाविद्यालय में अध्ययन हेतु गयी। उसके उपरान्त स्नातकोत्तर डिग्री एवं एम. फिल डिग्री से सम्बद्ध अध्ययन हेतु मैंने हैदराबाद विश्वविद्यालय में और अन्त में समाजशास्त्र में पी एच डी डिग्री हेतु मैंने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। मेरे समय में स्नातक अध्यापन गैर–कल्पना मूलक था। ऐसा राज्य के विश्वविद्यालयों में होता है परन्तु ऐसा ही स्नातकोत्तर कक्षाओं के अध्ययन के दौरान मेरा अनुभव रहा।

सौभाग्यवश बी. ए. द्वितीय वर्ष के अध्ययन के दौरान मैं एक महिलावादी संगठन के घनिष्ठ सम्पर्क में आयी। स्त्री शक्ति संगठन नामक यह समूह घरेलू हिंसा एवं बलात्कार के विरूद्ध अभियान चला रहा था और मैं उसमें सहभागिता कर रही थी। नागरिकीय स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलनों जो 1977 से 1985 के मध्य अर्थात् आपातकाल के उपरान्त के दौर में राज्य की जन उपेक्षा प्रयासों के विरूद्ध थे, को मैंने सीखना प्रारम्भ किया। मैं सौभाग्यशाली थी कि नागरिकीय स्वतन्त्रताओं हेतु आन्दोलनों को मैंने बहुत नजदीकी से जाना क्योंकि मेरे पिता एक वकील थे तथा आन्ध्र प्रदेश सिविल लिबर्टीज कमेटी के अध्यक्ष थे। बाद में मेरे पिता पीपुल्स यूनियन फार सिविल लिबर्टीज के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। मेरी माँ, जो कि एक नारीवादी लेखक एवं कवि थीं, नागरिकीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की स्पष्ट आलोचक थी हालांकि वे बच कर आये लोगों एवं राजनीतिक विरोधियों को जो हमारे घर आते थे, को महत्वपूर्ण मदद प्रदान करती थीं। वे स्त्री शक्ति संगठन का एक महत्वपूर्ण भाग थीं एवं एक पुस्तक ''वी वर मेकिंग हिस्ट्री : लाइफ स्टोरीज ऑफ वीमैन इन द तेलंगाना पीपुल्स स्ट्रगल'' की सह लेखक भी थी।

राज्य निर्देशित हिंसा एवं सम्बद्ध प्रतिरोध के प्रभावों का मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया और इसकी मैं गवाह बनी। इन सब का समाजशास्त्र की मेरी समझ से गहरा सम्बन्ध है, साथ ही इस कारण मैंने समाज को भिन्न तरीके से सम्भवतया समझा। जिस क्षण से मैंने समाजशास्त्र को गम्भीरता से समझना शुरू किया, मैंने सदैव इसे कानून की समझ एवं रेडीकल (आमूलचूल परिवर्तन कारी) राजनीति की प्रतिबद्धता से जोड़ा। मैंने विधि का समाजशास्त्र नहीं जाना अपितु समाजशास्त्र एवं कानून को पूर्ण विषयों के रूप में जाना जो एक दूसरे के साथ संवाद करते हैं। इन तरीकों के कारण मैंने न्याय की अवधारणा को सूक्ष्मता से समझा। एक दुर्भाग्यपूर्ण बदलाव ने इस सम्बद्धता को और मजबूती से मेरे सामने रखा। मेरी एम. फिल कक्षा की निर्देशक (जो लगभग 30 वर्ष की थी) तथा उनके पति (जो उसी विभाग में शिक्षक थे) की घर में आग लगने की दुर्घटना से मृत्यु हुई। इस दर्दनाक दुर्घटना की गवाह उनका दो वर्ष का शिशु था। मैं उनकी पहली एवं आखिरी शोध विद्यार्थी थी साथ ही मैं उनकी मित्र भी थी। मेरी शोध निर्देशक पारिवारिक द्वन्द्व के कारण अत्यधिक तनाव के दौर से गुजर रही थी और इस तथ्य के साथ अनेक लोग परिचित थे। परिवार का समाज शास्त्र की कक्षाओं में मेरे सीखने के लिए कुछ नहीं था क्योंकि मुझे उपरोक्त अनुभवों ने बहुत कुछ सिखा दिया था। इन सब के साथ मेरी पकड़ केवल इस कारण सम्भव हो सकी कि मैंने विश्वविद्यालय के बाहर संघर्ष से स्वयं को सम्बद्ध रखा हालांकि मेरे शिक्षक इस ''सक्रियता'' के कारण मुझसे सदैव नाराज रहते थे।

संगठनात्मकता की राजधानी में मेरी सहभागिता तथा कानून के मेरे अनुभव जिनमें न्यायालयों की बहस तथा सम्बद्ध विवेचनों की रणनीति के अवयव सम्मिलित थे, ने मुझे बहुत जल्दी प्रेरित किया कि मैं हर वाद से सम्बद्ध कानून, संविधान एवं संविधान सभा की बहस एवं विधायकों की बहसों पर ध्यान दूँ। लेकिन साथ ही मेरी रूचि यह भी थी कि एक लोकप्रिय एवं रूपान्तरण मूलक संविधान वाद की सम्भावनाओं को भी तलाशा जाय। मेरी इस रूचि में कुछ सवाल निहित थे जैसे न्यायालय में तथा बाहर सामाजिक व राजनीतिक आन्दोलन संविधान का कैसे प्रतिनिधित्व करते हैं? संविधान वाद के इर्द गिर्द आन्दोलन कैसे संगठित होते हैं? आन्दोलनों ने किस प्रकार विधायिका की सक्रियता को प्रभावित किया है तथा ये सब द्वन्द्वात्मकता के मोड़ के अन्तर्गत् आन्दोलनों को क्या स्वरूप देते हैं? अनुसूचित जन जाति एवं अन्य परम्परागत जंगलवासी (जंगल अधिकार को मान्यता) अधिनियम 2006 इसका उदाहरण है। एक द्विपक्षीय सम्बन्ध, जो एक राज्य द्वारा उपेक्षित स्थिति के विरूद्ध संविधान को स्थापित करने हेतु आन्दोलनों के दबाव एवं आन्दोलनों पर राज्य की विश्वसनीयता ताकि विधेयक के प्रति सजगता के तार्किक पक्ष एवं जवाबदेह सरकार के मध्य पनपते हैं, उन अनेक रूचिकर सम्भावनाओं को अनुसंधान के क्षेत्र में प्रस्तुत करते हैं जिन पर गम्भीर कार्य किये जा सकते हैं। जैसे यौनिक आक्रमण के कारण सन् 2012 के उपरान्त नवीन कानून की रचना हेतु हाल के प्रयास। हम यह भी कह सकते हैं कि यदि न्याय को समाजशास्त्रीय विवेचन के केन्द्र में हम रखें तो समाजशास्त्रीय परियोजनाओं हेतु कानून के अध्ययन महत्व स्थापित कर देते हैं।

एक समाजशास्त्री के रूप में कानून के प्रति दृष्टिकोण से मैं सन्तुष्ट नहीं थी क्योंकि 1991 में एक महिला संगठन 'अस्मिता' की सह संस्थापक के रूप में मैंने पारिवारिक हिंसा एवं बलात्कार की शिकार महिलाओं के लिए कल्याणकारी सलाहकार के रूप में कार्य किया। समाज शास्त्र में पीएच डी की उपाधि एवं कानून की समझ ने मेरी मदद नहीं की जब विभिन्न वादों का प्रतिनिधित्व कर रहे कानूनविदों से मैंने उत्तर जानने चाहे। इस असहायता को समाप्त करने हेतु, जो मुझे पेशेवर विशेषज्ञों से प्राप्त हुई थी, मैंने विधिशास्त्र में स्नातक एवं तत्पश्चात् स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। मैंने कानून के पेशे को नहीं अपनाया पर अब मैं अब न्यायालयों में जा सकती थी ताकि विभिन्न (संवैधानिक) पक्षों पर वकील, न्यायाधीश, वादी, कानून के विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान को समझा जा सके। यह इसलिए उपयुक्त था ताकि सीमित सोच एवं संवैधानिक कानून जिसको व्यवहार व पेशे में प्रयुक्त किया जाता जाता है, के परे जाकर मूलभूत अधिकारों की समझ को व्यापक किया जा सके। मेरा केन्द्र बिन्दु यह है कि लोगों एवं समुदायों के कष्ट एवं नुक्सान को कम किया जा सके। विशेषतः वे लोग एवं समुदाय जो निर्बल हैं।

दूसरी ओर मुझे यह भी ज्ञात है कि समाजशास्त्रियों की विधि सम्बन्धी समझ बहुत सीमित है। हालांकि समाजशास्त्र की चिन्ता के एक विषय में औपचारिक एवं प्रथागत कानून के परिवेश भी सम्मिलित हैं। इस तथ्य के बावजूद कि प्रारम्भिक पश्चिमी मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र कानून एवं समाज के मध्य सम्बन्ध एवं उनके संक्रमण का गहराई से परीक्षण करते हैं। मैलिनोस्की, दुर्खाइम एवं वेबर इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। भारत में समाजशास्त्र इस दृष्टि से अनेक स्तरों पर एक बन्द समुदाय हो गया है। इस बन्द स्वरूप को

>>

मैंने अपनी शिक्षा के दौरान भी पाया। साथ ही मेरा यह अनुभव अनुसंधान एवं लेखन के प्रारम्भिक स्तर के दौरान भी रहा। भारत में समाजशास्त्र के व्यवहार का एक बड़ा भाग उदाहरण के लिए ''जाति'' पर केन्द्रित रहा हैं इसमें अधिकांश अध्ययनों में विचारधाराओं को पुनः स्थापित करने की कोशिश है। ये विचारधारायें किसी सिद्धान्त को आधार बना कर प्रभुत्व की संरचना को प्रस्तुत करती है। ये प्रस्तुतियाँ अपने दृष्टिकोण को प्रभावशीलता एवं अनुभव के साथ जोड़कर व्यक्त की जाती है। इस प्रक्रिया को दूसरा रूप देने में एक लम्बा समय लगा है। परिणामस्वरूप आज हम कक्षाओं एवं शोध पत्रिकाओं में भिन्न प्रकार के दृष्टिकोण पाते हैं।

मेरा स्वयं का कार्य इन परिपाटियों से नितान्त भिन्न है। मेरे अध्ययन का एक भाग आपराधिक विधिशास्त्र के ऐतिहासिक उद्भव पर केन्द्रित है साथ ही औपनिवेशिक काल में इस क्षेत्र में हुआ विकास इस अध्ययन में सम्मिलित है। इसमें यौनिक उत्पीड़न, यौन–कार्य मृत्युदण्ड, समलैंगिकता के अपराधीकारण एवं किन्नरों के अपराधीकरण से सम्बद्ध समकालीन बहसें सम्मिलित हैं। समाजशास्त्र में सम्मिलित विधि सम्बन्धी अध्ययन विधेयकों की राजनीति, न्यायालयों की कार्य प्रणाली, विवेचनात्मक रणनीति को अपना भाग बनाते हैं और इन पक्षों में निहित सम्भावनाओं को प्रस्तुत करते हैं। ये अध्ययन अन्ततः उन प्रणाली मूलक कानूनों की विधि शास्त्र के अन्तर्गत सक्रियता के उन पक्षों को आगे बढ़ाते हैं जिनसे विधिशास्त्र में प्रभुत्व की विचारधारा स्थापित होती है और ये पक्ष हमारी रूचिमूलक समझ में सम्मिलित हो जाते हैं। हम इन प्रणाली मूलक कानूनों व प्रभुत्व की विचारधारा की समझ के द्वारा यह जान जाते हैं कि कानूनों की समझ के बावजूद व उन्हें लागू करने पर भी मानवाधिकारों का उल्लंघन कैसे होता है और साथ ही सामाजिक क्षेत्रों एवं न्याय की उपलब्धता के मध्य सम्बन्धों का परीक्षण भी होता है।

मेरे अध्ययन का दूसरा परन्तु सम्बद्ध भाग हिंसा के अन्वेषण की मेरी रूचि पर आधारित है। लिंग, जाति, विकलांगता एवं अल्पसंख्यकों (यौनिक एवं धार्मिक) से सम्बद्ध मेरे अध्ययनों के केन्द्र में भेदभाव, स्वतन्त्रता के ह्रास एवं हिंसा के मध्य सम्बन्धों के पक्ष हैं। मैं विशेषतः उन सैद्धान्तिक रणनीतियों को समझने की इच्छुक हूँ जो न्यायालयों द्वारा दिये गये संवैधानिक विवेचनों से अलग हैं। उदाहरण के लिए हम उन विभिन्न स्वरूपों को समझें जो स्वतन्त्रता के ह्रास को विभिन्न समूहों में व्याप्त भेदभाव के द्वारा उभारते हैं। अस्पृश्यता (जाति) यौनिक नियन्त्रण (महिलाएं) दवाबमूलक विस्थापन (जनजाति) नरसंहारिक हिंसा एवं आवासमूलक संकेन्द्रण जो गन्दी बस्तियों संकेन्द्रण के समकक्ष है (धार्मिक अल्प संख्यक) एवं अवरोधक मूलक स्वतन्त्रता/मुक्ति से सम्बद्ध प्रतिमानों को लागू करने में इन्कार (विकलांगता से जुड़े लोग) को समझना इस संदर्भ में समीचीन है। सामाजिक रूपान्तरण का विचार किस प्रकार क्रान्तिकारी हिंसा, गान्धीवादी अहिंसा एवं जाति से प्रतिरोध के अम्बेडकरवादी प्रारूपों से सामन्जस्य स्थापित करता है? का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। संविधान के निर्माता एवं जाति विरोधी दार्शनिक के रूप में अम्बेडकर एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व है जिन्हें मुख्य धारायी अकादमिक स्पेस में हाँसिये पर रख दिया गया है। हक कैसे एक बौद्धिक इतिहास को पुनः जीवित कर सकते हैं जिसके चारों तरफ संवैधानिक चिन्ताएं एवं सवाल घूमते हैं?

न्याय का प्रश्न–जो कि समाजशास्त्र एवं कानून जैसे अन्तः सम्बद्ध विषयों से रचित होता है–जो एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में दो विचारों को आगे बढ़ाता है। पहला अम्बेडकर का विचार जो यह तर्क देता है कि जन नैतिकता को संवैधानिक नैतिकता प्रतिस्थापित करे। यह अवधारणा पिछले 6 दशकों से ठण्डे बस्ते में थी पर सन् 2009 में यौनिक/लैंगिक अल्पसंख्यकों के अधिकारों को दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा नाज फाउण्डेशन सम्बन्धी वाद के निर्णय में स्थापित कर इस अवधारणों को पुनः जीवित कर दिया है? अम्बेडकर ने तो केवल इसका एक खाका खींचा था। इसके आधार क्या हैं तथा समाज विज्ञानों के अन्तर्गत न्याय के महत्वपूर्ण स्थान को यह निर्णय कैसे आगे बढ़ाता है के पक्षों पर विमर्श आवश्यक हैं। अम्बेडकर के विचार से सम्बद्ध यह अनुरोध न्याय की विवेचना में निहित असम्भव अथवा गैर–काल्पनिक अन्तः सम्बन्धों के पक्षों को जो महत्वपूर्ण हैं की उपेक्षा कर देता है। दूसरा केन्द्र बिन्दु जो मुझे महत्वपूर्ण लगता है, का सम्बन्ध विद्रोह के विचार से है जिसमें अवज्ञा, आलोचनात्मकता एवं प्रत्यावर्तनता के अवयव सम्मिलित हैं। इस विचार को संवैधानिक नैतिकता एवं न्याय के अन्तर्गत सामान्यतः परखे जाने की जरूरत है। इन सबसे वह दृष्टि विकसित होती है जो सामाजिक रूपान्तरण हेतु सामाजिक आन्दोलनों को आगे बढ़ाती है तथा विभिन्न क्षेत्रों में आमूलचूल परिवर्तनकारी संघर्ष के प्रारूप को उभारता है। ऐतिहासिक अन्याय का सामना कर रहे समुदायों द्वारा संवैधानिक नैतिकता के निम्न वर्गीय विवेचनों की सम्भावनाएं उपरोक्त निर्वचनों से उभरती है। समुदायों के साथ ही रहे अन्यायायों के विरोध में सक्रिय कार्यकर्ताओं को ये निर्वचन समझ देते हैं और उन परिभाषाओं को सामने लाते हैं जो अब तक उपेक्षा का शिकार रही हैं। ■

> चिली में तख्ता पलट के चालीस वर्ष उपरान्त

मैनुअल एंटोनिया गैरेटन से साक्षात्कार

भाग II – लोकतान्त्रिक संक्रमण की चुनौतियाँ

जून 2013 में मैन्युएल एन्टोनियो गारेटन जनता को नये संविधान का घोषणा–पत्र प्रस्तुत करते हुए।

मैनुअल एंटोनिया गैरेटन का साक्षात्कार उस केन्द्र बिन्दु की निरन्तरता बताता है जो लोकतान्त्रिक राजनीति हेतु तानाशाही की विरासत पर आधारित है। बहुस्तरीय अकादमिक गतिविधियों के अतिरिक्त प्रोफेसर गैरेटन एक सघन राजनीतिक जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं। 1964 में गैरेटन कैथोलिक विश्वविद्यालय के विद्यार्थी संगठन (संघ) के अध्यक्ष बने और वहाँ से अपना राजनीतिक जीवन प्रारम्भ किया। तानाशाही के दौरान उन्होंने लेखन कार्य किया तथा अकादमी के परे अध्यापन कार्य किया, नवीन पीढ़ियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। इन नवीन पीढ़ियों को बाहुल्यता वादी शिक्षा एवं सूचनाओं की उप–लब्धता कम थी गैरेटन सामाजिक लोकतान्त्रिक परियोजना को पुनः स्थापित करने में सक्रिय रूप से सहभागी थे। वे समाजवादी दल की केन्द्रीय समिति के सदस्य बने। तानाशाही के बाद उन्होंने उन सार्वजनिक बहसों में सहभागिता की जो लोकतन्त्र की ओर संक्रमण से सम्बद्ध थी; गैरेटन शिक्षा विभाग के प्रथम मन्त्री के सलाहकार थे, संस्कृति से सम्बद्ध आयोग के समन्वयक बने तथा उच्च शिक्षा हेतु आयोग के सदस्य बने। हाल के वर्षों में एक नवीन संविधान को आगे बढ़ाने की गतिविधियों में सक्रिय रहे। एक समाज वैज्ञानिक के बौद्धिक परिप्रेक्ष्य से प्रेरित राजनीतिक जीवन गैरेटन को स्वरूप प्रदान करता है।

एम बी : साक्षात्कार (जी डी 3.5) के पहले भाग में आप साल्वाडोर एलेण्ड एवं यूनिडाड की असफलताओं की जो उनके पतन हेतु उत्तरदायी बने। अब हम तानाशाही के पतन के विषय में बात करेंगे। यह कैसे हुआ? यह कैसे हो सकता था?

एम ए जी : मैं एक स्पष्टीकरण से अपनी बात प्रारम्भ करूँ। यूनिडाड पाप्यूलर की असफलताओं अथवा समस्याओं के पक्ष उसके पतन हेतु उत्तरदायी नहीं है अपितु अमेरिका के समर्थन से नागरिकीय अधिकारों के षड़यन्त्र एवं सैन्य हस्तक्षेप उसके पतन हेतु उत्तरदायी हैं। 1980 में तानाशाही ने पूर्णतया एक नवीन संविधान लागू किया जिसने दो राजनीतिक व्यवस्थाओं को उभारा। पहला जो 1980 से 1988 तक रहा जबकि दूसरा 1988 के उपरान्त उभरा। पहली व्यवस्था में तानाशाही

> >

का सूक्ष्म संरचनाओं तक प्रवेश हुआ पर उसमें संविधान प्रयुक्त हुआ। दूसरी व्यवस्था में कठोरता के साथ निरंकुशतामूलक नागरिकीय शासन सैन्य बल के वीटो (अन्तिम शक्ति के अधिकार) के साथ उद्देश्य मूलक तरीके से लागू हुआ जिसे 'प्रतिबन्धित लोकतन्त्र' या 'संरक्षणात्मक लोकतन्त्र' जैसा आप कहना चाहें लागू करने की संज्ञा दी जाती हैं। लेकिन एक स्तर से दूसरे स्तर तक जाने के क्रम में तथा एक नेता अर्थात पिनोशे को शक्ति में बनाये रखने के लिए आप को कुछ प्रणालियों की आवश्यकता होती है।

एम बी : क्या यह वह स्थित है जहाँ जनमत संग्रह के सवाल उभरते हैं, क्या मैं ठीक कह रहा हूं?

एम ए जी : हाँ, उन्होंने जनमत संग्रह की प्रणाली को चुना, परंतु इससे एक समस्या उत्पन्न हुयी। विपक्ष ने पहला, संगठनों और व्यक्तियों पर नियंत्रण रखने व उन्हें भागीदार बनाए रखने तथा दूसरा, संरचनात्मक रूपांतरण के तेजी से बदलते संदर्भों, कमजोर होते संघों और अन्य क्षेत्रों में, विरोध के विभिन्न क्षेत्रों को एक–दूसरे से तथा सामाजिक क्षेत्रों से जोड़ने हेतु व्यापक संगठनात्मक शक्ति को विकसित किया। 1982–83 के आर्थिक संकट ने गतिशीलता के चक्र को प्रारम्भ किया जिसने लोगों को एक साथ करने (एकजुट करने), अपने भय से उबरने और एक राजनीतिक गठबंधन को विकसित करने पर प्रभाव डाला, परंतु बिना यह सोचे कि तानाशाही से कैसे छुटकारा मिल सकता है। उसी समय कम्यूनिस्ट, जो कि समाजवादी विपक्ष का हिस्सा नहीं थे, विद्रोह के द्वारा तानाशाही से छुटकारा पाना चाहते थे। पिनोशे की हत्या करने का उनका प्रयास असफल हो गया। जब तक विपक्ष की कोई स्पष्ट रणनीति नहीं बनी तब तक पिनोशे को सत्ता में बनाये रखने के लिए तानाशाही ने जनमत संग्रह करवाया। यद्यपि यह एक बहुत कठिन निर्णय था, विपक्ष ने जनमत संग्रह का विरोध करने का निर्णय किया। तानाशाही के समर्थकों में से एक दक्षिणपंथी नागरिक ने स्वीकार किया कि जनमत संग्रह की प्रणाली सत्ता की बहुत बड़ी गलती थी जो विपक्ष के हाथों में थी। वे केवल एक बात जानते थे कि चुनाव जीतने के लिए क्या किया जा सकता है?

शासन के शक्ति स्त्रोतों तथा सभी चालों के बावजूद विपक्ष की निरन्तरता बनी रही अर्थात् तानाशाही ने जिन माध्यमों से स्वयं को मजबूत करने के प्रयास किए वे असफल सिद्ध हुए। जहाँ तक विरोध का सवाल है जब तक यह मताधिकार के 'ना' करने से जुड़ा है, यह महत्व नहीं रखता कि उनके भावी कार्यक्रम क्या हैं।

एम बी : आत्महत्या करने की प्रवृत्ति को समाप्त करने का तानाशाही प्रणाली का यह एक अनोखा ढंग है। लोकतंत्र की स्थापना के लिए जनमत संग्रह के क्या परिणाम हुए?

एम ए जी : इसका एक परिणाम तो तानाशाही से छुटकारा पाना था परंतु इसके संस्थागत ढाँचे या इसके आर्थिक प्रारूप से नहीं। जो कि बहुत महत्वपूर्ण है। यह विश्व का एकमात्र ऐसा देश है जिसने एक लंबे तानाशाही शासन के बाद, तानशाही द्वारा निर्मित संविधान के साथ, अपने संविधान का निर्माण नहीं किया। यह लैटिन अमेरिका में लोकतंत्र के संक्रमण का एकमात्र ऐसा मामला/उदाहरण है जिसमें संविधान सभा नहीं थी।

परंतु यह अपरिहार्य नहीं था। जनमत संग्रह और उसके बाद चुनाव जीतने के बाद, शासन गठबंधन, निरंकुशता–मूलक प्रतिगमन के डर के बिना राजनीतिक प्रणाली को बदलने की ओर अगला कदम था।

एम बी : और क्या राजनीतिक प्रणाली में इस प्रकार के परिवर्तनों से नव्य–उदारवादी आर्थिक प्रारूप में बदलावों के साथ यह आगे बढ़ सका?

एम ए जी : आप राजनीतिक प्रारूप में परिवर्तन किए बिना पहले आर्थिक प्रारूप में बदलाव नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए, यहाँ तक कि आप वर्तमान संविधान के अंतर्गत राज्य का एक उद्यम भी स्थापित नहीं कर सकते। याद रखना कि यह सच्चे अर्थ में नव्य–उदारवाद है–थैचरवाद से ज्यादा शुद्ध क्योंकि यह तानाशाही के दौरान उभरा था। अब, 20 साल बाद आपके पास जो है उसे मैं गठबन्धन के सफलता जाल की संज्ञा देता हूं। उन्होंने 19 चुनाव जीते और देश की प्रति व्यक्ति आय 5000 डॉलर से 15000 डॉलर हो गयी, प्रगति का एक दूसरा सूचक यह भी है कि आज विश्वविद्यालय में 70 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे हैं जिनके पिताओं ने उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। यह स्थिति एक व्यापक रूपांतरण को बताती है।

इसलिए गठबंधन का कहना है, सुनिए, हमने खराब नहीं किया है। हमें एक अच्छी सफलता मिली है। तो फिर हम क्यों कोई आधारभूतीय परिवर्तन करें? हम क्यों संविधान को परिवर्तित करें? हमारा चिली अब लोकतांत्रिक है और यही एक बहुत महत्वपूर्ण रूपांतरण है। इसके साथ ही वे यह भी दावा करते हैं कि उन्होंने नव्य उदारवाद को सुधारा है पर इसे सुधारने में उन्होंने इसे और भी मजबूत किया है। अर्थात् नव्य–उदारवाद की वैधता पुनर्स्थापित हुयी है। दूसरे शब्दों में, इस रूपांतरित समाज के पिनोशे के साथ, तानाशाही के सामाजिक–आर्थिक प्रारूप के साथ एवं इसके गैर–लोकतांत्रिक शासन के साथ सम्बंध तोड़ने में वे असफल हो रहे हैं। सरकार लोकतांत्रिक हो सकती है, राजनीति लोकतांत्रिक हो सकती है लेकिन शासन लोकतांत्रिक नहीं है।

एम बी : इसका क्या अर्थ है? इसका क्या अर्थ है कि एक गैर–लोकतांत्रिक शासन के अंतर्गत लोकतांत्रिक राजनीति कार्यरत है? यह तो एक लेनिनवादी सूत्र लगता है।

एम ए जी : मेरा अभिप्राय है कि प्रथम, संविधान कभी भी लोकतांत्रिक तरीके से स्वीकृत नहीं हुआ हैं। अतः इसकी उत्पत्ति वैध नहीं है और दूसरा, संविधान ने एक राजनीतिक व्यवस्था को स्थापित किया जहाँ अल्पसंख्यक तानाशाही को समर्थन देते हैं और बहुसंख्यक के पास, जो समान रूप की मतदान की ताकत थी वह उसके खिलाफ थी। चुनाव व्यवस्था एक चुनाव क्षेत्र में बहुत कठिनाई उत्पन्न करती है कि एक ही दल के दो प्रत्याशियों को चुनती है यहाँ तक कि दल भारी बहुमत से जीत जाता है। परिणामस्वरूप कांग्रेस के सदस्य हमेशा दो गुटों में विभाजित रहते हैं। परंतु संविधान को परिवर्तित करने के लिए आपको 75 प्रतिशत बहुमत की आवश्यकता है। अतः यह असंभव है। तो फिर यह संविधान किनके लिए हैं? क्या यह आर्थिक प्रारूप को बनाए रखने के लिए है? इसमें एक पंक्ति में जीने का अधिकार दिया हुआ है और तीन पृष्ठों में सम्पत्ति अधिकार की चर्चा है।

एम बी : तो सामाजिक आर्थिक व्यवस्था के बारे में इतना बुरा क्या है? ये सभी संकेतक सफलता की तरफ ही तो इशारा करते हैं।

एम ए जी : मुझे लगता है कि यह पूर्णरूपेण असफल है। जो कुछ भी अच्छा हुआ है वह आर्थिक प्रारूप के कारण नहीं है। यह ताम्बे की कीमतों के कारण हुआ है और गठबंधन की उन नीतियों से हुआ जो निर्धनता पर आक्रमण करती हैं। आर्थिक संकट का समाधान इस प्रारूप में नहीं है यह तो सरकार की चक्रियता विरोधी नीतियों के कारण है।

एम बी : इसलिए प्रारूप इतना बुरा नहीं है क्या यह बिना किसी प्रभाव का है?

एम ए जी : नहीं, नहीं। 70 के दशक में चिली लैटिन अमेरिका में दूसरा सबसे बड़ा समान आय वितरण वाला देश था। सन् 2000 में ब्राजील के बाद यह दूसरा सबसे बड़ा असमान आय वितरण वाला देश था (उरूग्वे

>>

हमेशा से सबसे समतावादी था)। स्वीडन में, करों से पहले, आय वितरण चिली की तुलना में अधिक असमान था परंतु करों के बाद चिली में आय–वितरण विश्व में सबसे खराब में से एक था जबकि स्वीडन में सबसे श्रेष्ठ में से एक था। दूसरा, पड़ोस, वर्ग, आय या किसी अन्य उपाय से मापें, चिली से अधिक पृथकतावादी शिक्षा प्रणाली अन्य कहीं नहीं है। यह सुनिश्चित है, वहाँ अध्ययन करने वाले छात्र कम थे, परंतु उसके बाद 75 प्रतिशत सार्वजनिक प्रणाली में थे, आज यह आँकड़ा 35 प्रतिशत से कम है। इसलिए आपके पास एक समाज नहीं है, आपके पास राज्य द्वारा कुछ सुधार के साथ प्रस्तुत एक बाजार है। यहाँ राज्य व समाज के बीच एक महत्वपूर्ण अन्तराल रहा है। यदि चीनी और ताँबा गायब है, तो देश भी गायब हो जायेगा। यह प्रारूप वस्तुओं के निर्यात पर और लोगों के ऋण पर आधारित है। यहाँ विश्व में सबसे खराब श्रम संबंधी कानून हैं। आपके पास सामूहिक सौदेबाजी के तहत 8 प्रतिशत श्रम–शक्ति है। यह स्वदेशी लोगों अर्थात् मापुचे, के लिए बिना किसी नीति वाला एकमात्र देश है और यह एक ऐसा देश है जो अवसाद विरोधी दवाओं से प्यार करता है।

एम बी : परंतु इससे पहले आप यह नहीं कह रहे थे कि निर्धनता का उन्मूलन हो चुका है?

एम ए जी : यदि किसी मानक (स्टैण्डर्ड) मापन का प्रयोग किया जाता, तो तानाशाही के तहत निर्धनता 50 प्रतिशत से लगभग 15 प्रतिशत तक कम हो जाती। परंतु, आप जानते हैं, वे लोग जो आज गरीबी रेखा से ऊपर हैं, कल गरीबी रेखा के नीचे भी जा सकते हैं। यहाँ सामाजिक सुरक्षा की कोई सार्वजनिक प्रणाली नहीं है।

एम बी : ठीक है, आपने अपना पक्ष रखा। अब हमें छात्र–आंदोलन की बात करनी चाहिए। किस हद तक यह इन असमानताओं को प्रतिबिंबित करता है? और किस हद तक छात्र अपनी राजनीतिक योजना बनाते हैं?

एम ए जी : छात्र आंदोलन की विभिन्न व्याख्याएँ है। यहाँ कुछ ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि यह एक पूर्णतः मध्यवर्गीय आंदोलन है। छात्र असंतुष्ट है क्योंकि उन्होंने बहुत कुछ पाया है और वे सभी और अधिक पाना चाहते हैं। असंतोष प्रत्येक सामाजिक आंदोलन का एक महत्वपूर्ण आयाम है, परंतु यह कुछ भी स्पष्ट नहीं करता। यदि हम असंतोष के विषय में बात कर रहे हैं तब सब से ज्यादा अभिभावक नाखुश है क्योंकि वे अपने बच्चों का छात्र शुल्क (फीस) देने के लिए ऋण ग्रस्त हो जाते हैं।

छात्रों की सबसे महत्वपूर्ण मांग सार्वजनिक शिक्षा से सम्बद्ध है जिसमें तीन तत्व शामिल हैं। पहला, सार्वजनिक शिक्षा की प्रणाली बहुमतवादी और प्रभुत्ववादी होनी चाहिए। आप निजी शिक्षा को भी स्थान दे सकते हैं परंतु उसे नियंत्रित किया जाना चाहिए। दूसरा, कानून लाभ केन्द्रित स्कूलों के पक्ष में नहीं होना चाहिए और वर्तमान प्रणाली, जिसमें राज्य स्कूल व्यवस्था में और यहां तक कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उद्यमियों को निजी लाभ हेतु सब्सिडी देता है, को प्रतिबंधित करना चाहिए। तीसरी मांग, मुक्त सार्वजनिक उच्च शिक्षा और बिना सब्सिडी के निजी उच्च शिक्षा से सम्बद्ध है।

परंतु आप व्यापक कर सुधार किए बिना प्रत्येक के लिए मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था नहीं कर सकते। यदि बुर्जुआ/पूंजीपति वर्ग के बच्चे मुफ्त विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त करते हैं, हर किसी की तरह, ऐसा केवल तभी हो सकता है जब वे इसके लिए उच्च करों का भुगतान करते हैं। इस आर्थिक प्रारूप के बदलने का मतलब है कि राजनीतिक व्यवस्था को बदलने की आवश्यकता है।

एम बी : इसलिए आप कह रहे हैं कि यह एक क्रांतिकारी मांग है?

एम ए जी : मैं मानता हूं कि यह बेहतर स्थितियों की माँग करने से अलग एक आधारभूत मांग है। मुझे ऐसा लगता है कि तानाशाही से विरासत में प्राप्त राज्य व समाज के बीच सम्बंधों को तोड़ने के लिए, सरकार या दलों का उपयोग किए बिना, चिली में छात्र आंदोलन ने वही भूमिका निभायी जैसी वेनेजुएला और बोलीविया में निभायी थी और इसलिए इस अर्थ में यह क्रांतिकारी है, परंतु पद्धति के संदर्भ में यह क्रांतिकारी नहीं है। छात्र–आंदोलन का एक अन्य आधारभूत पक्ष, मेरी राय में, यह है कि समकालीन चिली के इतिहास में पहला सामाजिक आंदोलन है जो कि राजनीतिक व्यवस्था के साथ ऐतिहासिक परतों/पर्तों पर आधारित नहीं है जिसका मैंने ऊपर उल्लेख किया हैं।

एम बी : तो एक आर्थिक प्रारूप पर आधारित निजी शिक्षा को संविधान व सम्बद्ध राजनीतिक व्यवस्था में बदलाव किए बिना नहीं किया जा सकता और ऐसे परिवर्तनों, बदले में, के लिए राजनीति व समाज के बीच सम्बंधों के पुनर्निर्माण की आवश्यकता होती है। परंतु मैनुअल एंटोनियो, संभवतः इसे तोड़ने का कार्य कौन कर सकता है–वह जो पहले ही ब्राजील, वेनेजुएला और बोलीविया में कर चुका है–क्या वे हमें एक उत्तर–पिनोशे बाजार समाज से एक अधिक लोकतांत्रिक समाज की ओर ले जायेंगे?

एम ए जी : चिली में सभी ऐतिहासिक परियोजनाएं दलों और आंदोलनों के गठबंधन के माध्यम से बनायी गयी थीं जैसे–लोकप्रिय मोर्चा (कम्यूनिस्ट, समाजवादी और रेडीकल्स) के द्वारा 'औद्योगीकरण', ईसाई लोकतंत्र (चर्च एवं किसान आंदोलन) के द्वारा 'कृषि सुधार', लोकप्रिय यूनीडाड (समाजवादी, कम्यूनिस्ट व अन्य दल) के द्वारा 'समाजवाद'। गठबंधन और कम्यूनिस्ट पार्टी द्वारा तानाशाही के विरूद्ध संघर्ष किया गया परंतु आज वह गठबंधन लोकतंत्र लाने के लिए पर्याप्त नहीं है, इसके लिए आंदोलनों के साथ पुनः जुड़ने की आवश्यकता है। ऐसा समय आया जब यह संभव लगने लगा था परंतु वे असफल हुए। अभी हाल ही के राष्ट्रपति चुनाव ने एक नयी संभावना को जन्म दिया है। मिशेल बेचलेट बड़े भारी बहुमत के साथ चुनी गयी और उनके कार्यक्रम का प्रारम्भिक बिंदु एक नया संविधान है। सामाजिक एकजुटता के साथ उसके वादे का संयोजन एक लोकतांत्रिक, सहभागी और संस्थागत घटक प्रक्रिया को प्रारम्भ कर सका, जो एक जनमत संग्रह के साथ शुरू होती है। एक नया लोकतांत्रिक संविधान व एक संविधान सभा राजनीति व समाज के बीच नए सम्बंध, नए दल और अन्य बनायेगी।

एम बी : मैनुअल एंटोनियों, यह अद्भुत था–आपने तख्तापलट के बाद से 40 वर्षों तक का सब समेट लिया। यह मेरे लिए एक सही शिक्षा थी और हमारे पाठकों के लिए भी सही साबित होगी। आपका बहुत–बहुत आभार। ■

> उरूग्वे लेटिन अमरीका का अग्रणी

फेलिपे एरोसेना, रिपब्लिक विश्वविद्यालय, माण्टेविडियो, उरूग्वे

मोन्टेवीडियो में विधान महल के बाहर मारिजुआना को वैध बनाने के लिए प्रदर्शन।

तीन लाख की आबादी वाले एक छोटे देश, उरूग्वे ने दुनिया को 2013 में दो कानून पारित कर हैरान कर दिया है। पहला, समलैंगिकों के मध्य विवाह को अनुमति देने वाला और दूसरा, मारिजुआना को वैद्यता प्रदान करना। यदि हम इसमें 2012 में पारित गर्भपात के गेर अपरा–धीकरण वाले तीसरे कानून को जोड़ते हैं तो यह कहना गलत नहीं होगा कि यह देश अब पश्चिम का अगुआ है।

उरूग्वे के समान विवाह कानून के पहले अनुच्छेद के अनुसार, ''सिविल विवाह, कानूनी तौर पर, दो विषम या सम लिंगों के मध्य एक स्थायी जोड़ है।'' इस नये कानून के तहत, अगस्त 2013 में हमने पहले दो पुरूषों के मध्य विवाह देखा, तत्पश्चात कई पुरूषों और महिलाओं में भी देखा। उरूग्वे के साथ साथ, दक्षिण अमरीका के दो अन्य देश, उसके पड़ोसी, ब्राजील और अर्जेन्टीना में भी समान कानून है। इसके अलावा, विश्व के सिर्फ बारह अन्य देश : स्वीड़न, नार्वे, फ्रांस, स्पेन, आईसलैंड, बेल्जियम, लक्समबर्ग, हॉलैण्ड, डेनमार्क, पुर्तगाल, कनाड़ा और दक्षिण अफ्रीका (इनमें से अधिकांश पश्चिम यूरोप में स्थित हैं) अधिकारिक तौर पर समलैंगिक विवाह को स्वीकारते हैं। मेक्सिको, संयुक्त राष्ट्र अमरीका एवं यू. के. में यह अधिकार सिर्फ कुछ क्षेत्रों में ही मौजूद है। यदि, जॉज गुर्ल्हमे मरक्योर के वर्गीकरण को मानते हुए, हम लेटिन अमरीका को 'दूसरे पश्चिम' के रूप में स्वीकारते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि आज तक समलैंगिक विवाह निश्चित तौर पर पाश्चात्य ही हैं। ऐसा निश्चित तौर पर इस क्षेत्र को अधिक मुखर धर्मनिरपेक्षता, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया और अधिकारों के विस्तार के कारण है।

मारिजुआना के नियमन का प्रस्तावित कानून दिसम्बर 2013 में पारित हुआ। इस कानून के अनुसार, ''राज्य मांग और इसके उत्पाद (derivatives) के रोपण, खेती, कटाई, उत्पादन, अधिग्रहण, भंडारण, विपणन एवं वितरण और आयात–निर्यात के नियंत्रण और नियमन की जिम्मेदारी ग्रहण करेगा।'' मारिजुआना उत्पादक क्लब और छः पेड़ प्रति घर तक घरेलू खेती भी अब कानूनी होगी। दुनिया के किसी भी अन्य देश ने राज्य को मारिजुआना के उत्पादन, वितरण और बिक्री पर सार्वजनिक नियन्त्रण नहीं दिया है। अपेक्षित परिणाम दो तरफा हैं। पहला, मारिजुआना उपभोक्ताओं को नशीले पदार्थों की तस्करी से और उसके साथ सम्बन्धित हिंसा और उत्पीड़न से दूर करना

>>

है। दूसरा, यह स्वयं नशीले पदार्थों की तस्करी से लड़ने की एक अप्रत्याशित रणनीति का शुभारंभ करता है। उरूग्वे राष्ट्रपति जॉज मुजिका तर्क देते हैं कि यदि दशकों के दमन ने इस समस्या को सुधारा नहीं है तो नये समाधान की कोशिश करने का समय आ गया है। यदि उरूग्वे प्रयोगशाला सकारात्मक परिणाम दिखाती है तो अमरीकी देशों के संगठन (OAS) के अन्य देश, जो स्वयं भी विकल्प तलाश रहे हैं, समान रणनीति को अपनाने के बारे में गंभीरता से विचार करेंगे।

2012 में उरूग्वे ने गर्भावस्था के स्वैच्छिक समापन के कानून को भी पारित किया जिसका दूसरा अनुच्छेद कहता है, ''गर्भावस्था के पहले 12 सप्ताह के दौरान गर्भ के स्वैच्छिक समापन को दंडित नहीं किया जायेगा'', (क्यूबा, गुआना, प्यूरटो रीको और मेक्सिको शहर के साथ) इस क्षेत्र में, उरूग्वे लेटिन अमरीका के कुछ ही क्षेत्रों में से है जो महिलाओं के गर्भपात के अधिकार को स्वीकृति देते हैं।

देश के सभी स्वास्थ्य संस्थाओं को यह सेवा प्रदान करने के लिए महिला की इच्छा अकेले ही पर्याप्त आधार प्रदान करती है। संसद ने इस कानून को पाँच वर्ष पूर्व ही पारित कर दिया था परन्तु तबारे वाजेक, पूर्व राष्ट्रपति, जो पेशे से कैंसर विशेषज्ञ थे, ने इसके विरूद्ध वीटो किया। इस कानून के पक्ष में दो तर्क मुख्य हैं। पहला, महिलाओं द्वारा अपने गर्भधारण के बारे में निर्णय लेने का अधिकार और दूसरा उच्च गुणवत्ता और महँगी पद्धति के भुगतान में असक्षम कम आय वाली महिलाओं को गर्भपात की सुविधा प्रदान कर उनकी जान जोखिम में डालने वाले भूमिगत क्लिनिक के नेटवर्क को खत्म करना।

ये तीनों कानून इसलिए पारित हुए क्योंकि वर्तमान सत्ताधारी फ्रेंते एम्पलियो (व्यापक मोर्चा) दल के पास मौजूदा संसद में एक पूर्ण अधिकारिक बहुमत है। इस सत्तारूढ़ दल, वस्तुतः में केन्द्र से लेकर वाम तक दलों एवं समूहों का गठबंधन, का गठन 1971 में हुआ और यह 2005 में पहली बार सत्ता में आया और इसने पुनः 2010 में चुनाव जीता। इस बीच इन कानूनों के प्रति विपक्षी दलों का समर्थन अलग अलग है। जहाँ समान विवाह के कानून को कानून निर्माताओं का व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ, दूसरे दो कानून अधिक विवादास्पद रहे हैं और लगभग आधे विधायकों ने इनका विरोध किया। इस तरह के मतभेद बड़े पैमाने पर जनसंख्या में इसी तरह के पैटर्न को दर्शाते हैं।

ये कानून स्पष्टतया देश की वामपंथी सरकार को प्रतिबिंबित करते हैं जो पिछले आठ वर्षों से विधायी बहुमत के साथ शासन में है और जिसके कारण ऐसी पहलों को संसद में पारित कराने की अनुमति मिलती है। परन्तु यह केवल एक सतही व्याख्या होगी। अधिक गहरे समाजशास्त्रीय स्तर पर, इन कानूनों में उरूग्वे समाज की कौन सी गहरी ताकतें अभिव्यक्ति पा रही हैं? हम उन्हें ऐसे देश में जो स्वयं को सांस्कृतिक रूप से रूढ़िवादी में परिभाषित करता है और जहाँ महाद्वीप पर सबसे पुरानी आबादी है, में कैसे समझ सकते है?

यहाँ कम से कम चार प्रासंगिक कारक हैं। पहला, उरूग्वे समाज महाद्वीप पर और शायद दुनिया में सबसे धर्मनिरपेक्ष में से एक है। इतिहासकार कार्लोस रियल द एजुआ ने जैसा लिखा, उरूग्वे लेटिन अमरीकी कैथोलिक आसमान में सबसे मद्धिम सितारा है। द्वितीय, देश में बीसवीं सदी के प्रारंभ में ऐसा समय रह चुका था जिसमें अपने समय में अग्रणी (avante garde) समझे जाने वाले कानून, मौत की सजा खत्म करना (1907), महिलाओं द्वारा पहल किये गये तलाक को स्वीकार करना (1913), आठ घंटे कार्य के दिवस को अनिवार्य करना (1915) और महिला मताधिकार को मान्यता (1927) को अपनाया था। पिछली सदी के प्रारंभिक दशकों में देश ने इतनी प्रगति की कि कई इस बात से चिंतित थे कि देश समाजवादी बन रहा है। तीसरा, यद्यपि आबादी अपेक्षाकृत पुरानी है, आबादी का एक बड़ा हिस्सा 1960 के दशक के सांस्कृतिक, यौन और राजनैतिक क्रांति के दौरान परिपक्व हो गया। चौथा, देश कई दशकों में एक बहुत ही सकारात्मक दौर से गुजर रहा है : इसका राजनैतिक लोकतंत्र परिपक्व है (समकालीन लोकतंत्रों के सभी अंतर्राष्ट्रीय सूचकों के अनुसार), पिछले दस वर्षों में अर्थव्यवस्था औसतन 5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से बढ़ी है और धन के पुर्नवितरण करने वाली सशक्त सामाजिक नीतियों के फलस्वरूप समाज अधिक समतावादी और कम गरीब हुआ है। उरूग्वे सिर्फ बीसवीं सदी से तुलनीय एक ऐसे काल में जी रहा है जब पृथ्वी पर कल्याण की सर्वाधिक अच्छी परिस्थितियाँ मानी जाती थी।

निकट भविष्य में ऐसा संभव है कि कई पाश्चात्य देश यहाँ वर्णित उपायों के समान उपाय पारित करेंगे और अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि उरूग्वे अधिकारों के अधिक सामान्य विस्तार का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। साथ ही, ऐसे कानून कई देशों में गंभीर बाधाओं का सामना कर सकते हैं। भिन्न सांस्कृतिक परम्पराओं के साथ कई देशों में इन्हें घृणा से देखा जा सकता है। ■

> उरूग्वे की सरकारी शिक्षा कितनी सार्वजनिक है?

एड्रियाना मरेरो, यूनिवर्सिटी ऑफ द रिपब्लिक, माण्टेविडियो, उरूग्वे एवं सदस्य, आई. एस. ए. के शिक्षा का समाजशास्त्र (RC 04), समाजशास्त्रीय सिद्धान्त (RC 16) और महिला एवं समाज (RC 32) की शोध समितियाँ, एवं **लिएन्ड्रो परेरा,** यूनिवर्सिटी ऑफ द रिपब्लिक, माण्टेविडियो, उरूग्वे

उरुग्वे की संसद का घेराव करते हुए विरोधी/प्रतिवादी शिक्षक।

एक देश उरूग्वे है, जहाँ हर उम्र के 80 से 90 प्रतिशत विद्यार्थी सरकारी शिक्षा प्राप्त करते हैं। जी हाँ सरकारी। निजी शिक्षा 15 प्रतिशत से ज्यादा का प्रतिनिधित्व नहीं करती है और यह दर ऐतिहासिक रूप से बहुत कम बदली है। शिशु विद्यालय (प्री–स्कूल) से विश्वविद्यालय तक, जिसमें स्नातकोत्तर एवं डाक्टोरल स्तर भी सम्मिलित है, सरकारी शिक्षा पूर्णतः निशुल्क है। निशुल्क होने के साथ विश्वविद्यालय शिक्षा में बिना किसी वर्जनीय परीक्षा या कोटा के खुला प्रवेश है ताकि कोई भी उच्च विद्यालय से पास किया हुआ इसमें नामांकन करा सकता है। इसके अलावा, लेटिन अमरीका में धार्मिकता के बावजूद, 1917 से उरूग्वे सरकारी शिक्षा धर्मनिरपेक्ष रही है और उन्नीसवीं शताब्दी में भी धार्मिक शिक्षा एक ऐसा विकल्प था जिसके लिए माता–पिता मना कर सकते थे। इसके अतिरिक्त उरूग्वे में बीसवीं सदी के प्रारम्भ से महिलाएँ पुरूषों से शैक्षिक उपलब्धियों में आगे निकल गई हैं। आज उनमें पुरूषों की अपेक्षा शिक्षा का उच्च स्तर पाया जाता है। विश्वविद्यालय एवं तृतीयक नामांकन का लगभग तीन–चौथाई और स्नातकों का और अधिक प्रतिशत का प्रतिनिधित्व महिलाएँ करती हैं। यह ''शैक्षिक स्वर्ग'' MIT प्रोग्राम 'एक लेपटॉप एक बालक' को अपनाने वाला दुनिया का पहला देश था। इस कार्यक्रम के माध्यम से वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा द्वारा हर विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी और शिक्षक को राज्य से इंटरनेट सहित एक लेपटॉप कम्प्यूटर मिलता है। राष्ट्रीय फूल (सिबो) के सम्मान में, ''सीबल योजना''[1] गरीबतम को भी लेपटॉप घर ले जाने में सक्षम बनाती है जहाँ वे उन्हें सीखने, साझा करने और खेलने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

हम यह मान सकते हैं कि सरकारी, निशुल्क और खुलेपन की विशेषता वाली व्यवस्था निम्न जनसंख्या वृद्धि (0.19% प्रति वर्ष) वाले देश और जहाँ केवल 22 प्रतिशत आबादी 15 वर्ष के नीचे हैं, समशीतोष्ण जलवायु एवं बिना भौगोलिक या सांस्कृतिक बाधाओं के क्षेत्र में, समावेशी शिक्षा और न्यायसंगत शैक्षिक परिणामों को प्रदान करने में सक्षम होगी। परन्तु ऐसा नहीं है।

उरूग्वे के लिए 2012 की PISA (अंतराष्ट्रीय विद्यार्थियों के आकलन का कार्यक्रम) रिपोर्ट के अनुसार, उरूग्वे सामाजिक–सांस्कृतिक विकास में लगातार सुस्पष्ट असमानता दर्शाता है। जहाँ, 'काफी प्रतिकूल' सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों में शैक्षणिक संस्थाओं में दाखिला लेने वाले 89 प्रतिशत विद्यार्थी लेवल 2 के नीचे आते हैं, सिर्फ 'अत्यधिक अनुकूल' परिस्थिति वाले 13% विद्यार्थी इस रैंक के नीचे हैं। गणित की परीक्षा में दोनों चरम स्थितियों के मध्य दूरी 170 अंक के अंतर जितनी विस्तृत है, जिसने उरूग्वे को उच्च शैक्षिक असमानता वाला देश बना

> >

दिया है। PISA के चारों परीक्षा चक्र, जिनमें उरूग्वे ने भाग लिया, में यह परिणाम लगातार स्थायी रहा है।''

सरल रूप में, सर्वाधिक सौभाग्यशाली बच्चे, औसत रूप से, नार्वे (489) या फिर अमरीका (481) के औसत से उँचा स्कोर करते हैं, जबकि गरीबतम कतार (376), इंडोनेशिया (375) या पेरू (368) से भी बहुत कम अंक प्राप्त करते हैं और इससे अधिक, उच्चतम अंक लाने वाले विद्यार्थियों में से 75% निजी विद्यालय में पढ़ते हैं।

यदि PISA परीक्षा के परिणाम पाठकों के लिए विश्वसनीय नहीं है–वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय तुलना करते समय न्यायोचित आपत्तियाँ हो सकती हैं, चाहे वे उपकरण द्वारा स्वीकृत आंतरिक तुलना में कम हो – हम देश के अंतर्गत आन्तरिक रूप से उत्पन्न की गई सूचना का भी लाभ ले सकते हैं। उरूग्वे में शिक्षा के उच्च स्तरों पर, गरीबतम विद्यार्थी उत्तरोत्तर रूप में कम हो जाते हैं – मुख्यतः विद्यालय छोड़ने वालों और कक्षा पुनरावृत्ति की उच्च दर के कारण। राष्ट्रीय सांख्यिकीय संस्था के पारिवारिक सर्वेक्षण (2012) के अधिकारिक तथ्यों के अनुसार, 6–11 वर्ष के 95.3% बच्चे प्राथमिक विद्यालय जाते हैं, 12–14 वर्ष के 73.8% माध्यमिक विद्यालय जाते हैं और 15–17 वर्ष के सिर्फ 51.4% उच्च विद्यालय जाते हैं। अंत में 18–24 वर्ष के युवा लोगों में केवल 23.7% विश्वविद्यालय में दाखिला लेते हैं। पारिवारिक आय बिन्दु आधारित क्वीनटाइल में असमानता एक ही दिशा में दिखती है। उच्चतम क्वीनटाइल में तीन वर्ष की आयु पर दक्ष में से नौ बच्चे विद्यालय जाते हैं जबकि न्यूनतम क्वीनटाइल में यह दर दो में से मात्र एक है। 22 वर्ष की आयु तक, उच्चतम क्वीनटाइल वाले 57% युवा लोग, न्यूनतम के 9% की तुलना में विश्वविद्यालयों में दाखिला लेते हैं।

तो इसमें यहाँ गलत क्या है? यह कैसे संभव है कि सिद्धान्तों पर आधारित शैक्षणिक व्यवस्था, जो समावेश और समानता को सुनिश्चित करने का प्रयास करती हैं, के इतने असमान और विशिष्ट परिणाम हों?

हमारा मानना है कि समस्या को ''सरकारी'' के अर्थ में ढूँढा जा सकता है। जिस शिक्षा को उरूग्वे ''सरकारी'' कहता है वास्तव में उसका ''सरकारी'' जैसा कि लोकतांत्रिक और बहुसंख्यक समाजों में समझा जाता है, से बहुत कम नाता है। शिशु विद्यालय (प्री–स्कूल) से विश्वविद्यालय तक सारी औपचारिक शिक्षा का दो स्वायत्तशासी संस्था नेशनल एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ पब्लिक एजुकेशन (ANEP) और द यूनिवर्सिटी ऑफ रिपब्लिक द्वारा प्रबंधन किया जाता है। दोनों संस्थाएँ औपचारिक राजनीति से अलग हैं। यद्यपि कार्यपालिका शाखा में शिक्षा मंत्रालय सम्मिलित है, व्यवहारिक रूप से इसका शैक्षणिक मामलों में कोई दखल नहीं है। यद्यपि संविधान कहता है ''संप्रभुता राष्ट्र में निवास करती है।'' यह मत प्रत्येक पाँच वर्ष में होने वाले अनिवार्य चुनाव के दौरान मत पत्रों में अभिव्यक्त होता है, परन्तु शिक्षा नीति के प्रति उरूग्वे लोगों की इच्छा न तो द्विसदनीय व्यवस्थापिका या फिर कार्यपालिका शाखा जहाँ शिक्षा मंत्रालय के हाथ बँध हुए है, के द्वारा अभिव्यक्त होती है।

इसी दौरान शिक्षा को शासित करने वाली संस्थाओं, जिनमें संविधान के द्वारा अत्यधिक स्वायत्तता प्रतिस्थापित है, में कारपोरेट हित हावी हो गये हैं। अनिवार्य शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण के लिए उत्तरदायी ANEP उन प्रक्रियाओं द्वारा शासित होती है जो मिलकर शिक्षण की गुणवत्ता को घटाने और व्यवस्था को आत्म–संदर्भित और प्रयासहीन बुलबुले के रूप में बंद करने का काम करती हैं। एक तरफ को, शिक्षक–प्रशिक्षण अभी भी पारंपरिक मॉडल को बिना शोध के बारे में जाने हुए अपनाती है।

दूसरी तरफ, शिक्षक के विकास या प्रतिस्पर्धा का मूल्यांकन किये बिना सामान्य वरिष्ठता के आधार पर पदोन्नति दे दी जाती हैं। नये शिक्षकों की भर्ती ANEP को चलाने वाले उन्हें लोगों द्वारा बंद रखी जाती है जो विश्वविद्यालयों द्वारा शिक्षकों का सत्यापन नहीं होने देते हैं। जैसे कि यह काफी नहीं था, शिक्षकों को हटाना भी एकदम नामुमकिन है। माध्यमिक शिक्षा में शैक्षिक व्यवस्था का वास्तविक समस्या है–एक तिहाई से भी अधिक कक्षाएँ शिक्षक अनुपस्थिति के कारण नहीं होती और करीबन 40% विद्यार्थी कक्षा की पुनरावृत्ति करते हैं। प्राथमिक शिक्षा, जहाँ शिक्षक अनुपस्थिति कम है, में भी कक्षा पुनरावृत्ति की उच्च दर पायी जाती है। 2013 में उच्च वेतन के लिए संघर्ष, जो 2005 में वामपंथी सरकार द्वारा शासन में आने के पश्चात् तेजी से बढ़ा, इस बिन्दु तक बढ़ा कि आज शिक्षक का शुरूआती वेतन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर के वेतन से दुगुने से भी ज्यादा है, ने सबसे गरीब विद्यार्थियों को कुल मिलाकर एक महीने से भी अधिक समय बिना कक्षाओं के छोड़ दिया। इसमें तानाशाही–पश्चात काल में आने वाली सरकारों जिनमें वाम भी सम्मिलित है, द्वारा प्रस्तावित सुधारों की कोशिशों के विरोध में की गई अन्य हड़ताले शामिल नहीं हैं। निजी विद्यालय जो शिक्षक अनुपस्थिति के प्रति कम उदार हैं, इस के बावजूद कि वे उन्हें सरकारी विद्यालयों की तुलना में कम वेतन देते हैं, इस तरह के कार्पोरेट आक्रमण का शिकार नहीं हुए हैं। इस दृष्टिकोण से, उरूग्वे शिक्षा थोड़ी ही ''सरकारी'' है।

समाज और राज्य शक्ति में मध्यस्थता करने वाले क्षेत्र के रूप में सरकारी के प्रति लगाव और उरूग्वे पहचान को आकार देने में सरकारी शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका और साथ ही बाजार तंत्र[2] के प्रति नागरिकों के अविश्वास के बारे में जागरूक होने के कारण शिक्षक संघों ने, जिसे हम ''पुनःसामन्तीकरण'' कह सकते हैं, के निर्माण में योगदान दिया है। युद्ध 'क्रंदन के साथ, सरकारी शिक्षा' के बैनर को लहराते हुए, उन्होंने अपने कॉर्पोरेट हितों को बिना समझौते के बनाये रखने के अपने अधिकार को विशेषाधिकारों एवं सुविधाओं से जो शैक्षिक असमानता के समक्ष गैर–जिम्मेदारी को जन्म देते हैं एवं जिन बच्चों को सबसे अधिक आवश्यकता है, के शिक्षा के अधिकार का उल्लंघन करते हैं, को व्यक्त करते हैं। बिना एक भी छूट के शिक्षा के बारे में निर्णय लेने के अधिकार का दावा करने वाले संघ दूसरे नागरिकों को आलोचना करने, बहस करने और प्रस्ताव बनाने के अधिकार देने से मना करते हैं। अतः उरूग्वे अपनी सरकारी शिक्षा के बारे में दलाली कर सकता है लेकिन वह उतनी सरकारी नहीं है, जितनी लगती है। ■

[1] "Ceibal" (meaning a group of ceibos), is the acronym for "Conectividad Educativa de Informática Básica para el Aprendizaje en Línea" or "Educational Connectivity and Basic Information Technology for Online Learning."

[2] As an illustration, it's worth remembering how, in 1993, in the middle of a process of privatization that affected the whole world, the citizens of Uruguay voted with a 72% majority to repeal a law that enabled privatization of public companies.

> उरूग्वे का करिश्मा

पुर्नवितरण और संघवाद का विकास

मारकोस सुपरविले, रिपब्लिक विश्वविद्यालय, माण्टेविडियो, उरूग्वे एवं आई. एस. ए. की श्रम की शोध समिति (RC 30) के बोर्ड सदस्य और **मारिएला क्वीनोन्स,** रिपब्लिक विश्वविद्यालय माण्टेविडियो, उरूग्वे

"समानता में सुधार लाना एक सशक्त राजनैतिक इच्छाशक्ति के बिना संभव नहीं हो सकता था"

वर्ष 2009 में निर्वाचित, उरूग्वे की दूसरी वामपंथी सरकार ने अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के सभी व्यावसायिक श्रेणीयों में न्यूनतम मजदूरी तय करने हेतु मजदूरी परिषदों और त्रिपक्षीय व्यवस्था द्वारा अपनी श्रम समर्थक नीतियों को गहरा किया है। ऐसा करने में, इसने उन्नत आय पुर्नवितरण को प्रोत्साहित करने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हाल के वर्षों में वास्तविक मजदूरी 4% प्रति वर्ष की दर से बढ़ी है और न्यूनतम मजदूरी 250% से बढ़ी है। 2004 में वामपंथी सरकार के आगमन से पहले, औसत वेतन न्यूनतम मजदूरी का 6.5 गुना था जबकि आज औसत वेतन न्यूनतम मजदूरी का केवल तीन गुना है। पुर्नवितरण की नीतियाँ रोजगार के स्तर में कमी लाती हैं वाले पारंपरिक ज्ञान के विपरीत, 2004 में पहली वामपंथी सरकार के सत्ता में आने से पहले बेरोजगार की दर 13.7% से दूसरी बार शासन में आने के दौरान औसतन 61% तक गिर गई।

इसके अलावा, इस अवधि के दौरान उपलब्ध नौकरियों ने ज्यादा अच्छे काम की पेशकश की। अनौपचारिक श्रम में कमी आई जिससे सामाजिक सुरक्षा में नामांकन बढ़ा और सभी वैधानिक श्रम अधिकारों के लाभार्थियों की संख्या में विस्तार हुआ। लाभ या अच्छी गुणवत्ता रोजगार के साथ पूर्णकालिक रोजगार 2004 में कुल रोजगार प्राप्त में 55% से 2011 में 69% हो गये। इस अवधि में, युवा रोजगार भी बढ़ा और श्रम असंतोष कम हुआ। यह सुनिश्चित है कि श्रम असंतोष अभी भी श्रम सम्बन्धों के चक्र, वे जो लोक सेवकों द्वारा सार्वजनिक बजट पर वोट के साथ जुड़े हैं और जो निजी श्रमिकों के सामूहिक सौदेबाजी समझौतों की अवधि से जुड़े हैं, के साथ घटते–बढ़ते रहते हैं परन्तु मोटे तौर पर और दीर्घ काल के दौरान श्रम संघर्ष कम हुआ है।

यह सब अधिक विकसित देशों में होने वाले संकट के विरोध में चलने वाली एक बहुत अनुकूल आर्थिक स्थिति के कारण संभव हुआ। इस तरह का अप्रत्याशित लाभ सामाजिक पुर्नवितरण में सुधार लाने के लिए एक आवश्यक शर्त था लेकिन यह अपने आप में पर्याप्त नहीं होगा। समाज में समानता में सुधार लाना एक सशक्त राजनैतिक इच्छा शक्ति के बिना नहीं हो सकता था। विशेष रूप से वे योजनाएँ जिनके नाटकीय परिणामों से गरीबी 40% से 12% और अत्यधिक गरीबी 4.5% से 0.5% तक घटी।

जैसा कि हमने नोट किया है, इस प्रक्रिया में केन्द्रीय भूमिका निभाने वाला सामाजिक तंत्र तथाकथित मजदूरी परिषद था। ये परिषद,

> >

जिनका उरूग्वे में लंबा इतिहास है, प्रथम वामपंथी सरकार द्वारा पुर्नगठित किये गये और ये उनके दूसरे काल के दौरान नीति के रूप में आरोपित हो गये। यूनियन बाद की दरों में घातीय वृद्धि ने इन परिवर्तनों को प्रभावी बनाने में योगदान दिया। निस्संदेह, 2005 से यूनियन बाद आज तक कुल 3,50,000 सदस्यों के साथ, लगभग 300% बढ़ गया है। केन्द्रीय संघ का अनुमान है कि 2013 के अंत तक यह आंकड़ा 3,80,000, देश की लगभग 12% आबादी या नौकरीपेश श्रम का 24% तक पहुँच जायेगा। वहाँ न केवल सदस्यता में विशाल वृद्धि हुई अपितु उन क्षेत्रों में, जहाँ पहले कोई संघ नहीं था, जैसे ग्रामीण क्षेत्र या घरेलू कार्य, नये संघों का निर्माण हुआ।

संघों की गतिविधियों में विस्फोटक वृद्धि के कई परिणाम हुए। एक तरफ, इसने शास्त्रीय संघ विचारधारा को प्रवाहित कर दिया। पारंपरिक रूप से उरूग्वे के संघ न केवल राज्य और निगमों से अपितु राजनैतिक दलों से भी कम से सावयवी रूप से, जिसमें वाम दल भी सम्मिलित हैं–अलग रहे हैं। परवर्ती का प्रभाव वामपंथी प्रवृत्तियों वाले नेता जो आम सदस्यों द्वारा लोकतांत्रिक चुनाव द्वारा ही ऐसे पद पर पहुँच सकते थे, के माध्यम से संचालित होता था। उरूग्वे संघवाद की अन्य परम्परा है कि प्रत्येक कम्पनी या उत्पादन के क्षेत्र का अपना स्वयं का विशिष्ट संघ होता है जो संघों को स्थानीय मुद्दों से नाता रखने वाले लघु राजनैतिक व्यवस्था में परिवर्तित कर देता है जो कि व्यापक राजनैतिक क्षेत्र में विभाजनकारी हो सकता है। परिणामस्वरूप, केन्द्रीय उरूग्वे संघ – PIT-CNT में हमेशा संघीय प्रवृत्तियों की व्यापक श्रृंखला निहित रही है हालाँकि सभी वामपंथी हैं।

विडम्बना यह है कि इन लोकतांत्रिक परम्पराओं के माध्यम से, नीचे से उत्पन्न होने वाले नये नेताओं ने ऐतिहासिक वामपंथ से अपने आप को आवश्यक तौर पर संरेखित नहीं किया जिसके कारण संघवाद ने अपनी कुछ राजनैतिक सम्बद्धता खो दी। वैचारिक स्तर पर, कुछ क्षेत्रों में, कुछ उग्रवादी संघ धाराऐं उत्पन्न हुईं और ताकतवर सरकारी–विरोधी पदों के रूप में विकसित हो गये। अन्य क्षेत्रों में, देश को आधुनिक बनाने और समाज के निम्नतम तबके की स्थिति में सुधार लाने हेतु संघीय शिकायतों को व्यापक राजनैतिक रणनीति के साथ जोड़ने वाली परम्पराओं को तोड़कर कार्पोरेट बयानबाजी प्रबल हो गई। ये नई संघीय प्रवृत्तियाँ, जो कुछ परिस्थितियों में अत्यधिक उग्र साबित हुई, पुराने प्रतिमानों को चुनौतियाँ देते हुए और भावी सरकार के साथ नये सम्बन्धों के निर्माण के साथ, संघवाद के व्यापक संगठन में बदलाव लाती हुई प्रतीत होती हैं। व्यवहार में, एक नई कार्पोरेट शिकायत प्रक्रिया विकसित और यहाँ तक कि कुछ क्षेत्रों में हावी भी हो गई है। ये प्रक्रिया इन शिकायतों को दुनिया के किसी व्यापक सोच के साथ जोड़े, जैसा पारंपरिक संघों में था, बिना ही मजदूरी में वृद्धि की तरफ पूर्णतः अभिमुखित है। शायद, हम भी एक नये वामपंथ को देख रहे हैं जो पारंपरिक संघ संरचना के भीतर कार्य करता है या वैकल्पिक रूप से जो कार्य की दुनिया के आधार पर समाज की एक नई दृष्टि के लिए नयी संरचना का निर्माण करता है। ■

> उरूग्वे का कृषक आंदोलन

डियेगो इ. पिनेरो, रिपब्लिक विश्वविद्यालय, माण्टेविडियो, उरूग्वे

परम्परागत मवेशियों के बडे चकों को चराने से लेकर ... बहु–राष्ट्रीय लुगदी उद्योग तक। चित्र एमिलियो फर्नान्डेज द्वारा।

नव उदारवादी सुधारों के बीस वर्ष पश्चात, पारंपरिक दलों के निर्देशन के तहत उरूग्वे में 2002 में एक गहन आर्थिक और सामाजिक संकट आया। 2005 में वामपंथी फ्रेंते एम्पलियो (व्यापक मोर्चा) ने चुनाव जीता और देश के पुर्ननिर्माण का दुरूह कार्य शुरू किया। आने वाले वर्षों में अर्थव्यवस्था में महाद्वीप पर सबसे उच्च दर पर वृद्धि हुई, जबकि पुर्नवितरण नीतियाँ गरीबी और अभाव में अप्रत्याशित दरों पर कमी लाने में सफल हुईं। इनमें से कई उपलब्धियाँ कृषि क्षेत्र, जिसमें इन दिनों वृहद संरचनात्मक परिवर्तन हुए थे, में सशक्त वृद्धि का परिणाम थी।

उरूग्वे के ग्रामीण समाज की संरचना में बीसवीं सदी के दौरान बहुत थोड़ा ही परिवर्तन हुआ था। उसके शिखर पर थे अपेक्षाकृत बड़े पशुधन और कृषक प्रतिष्ठानों के मालिक जो निर्यात के लिए माल उत्पादन में संलग्न थे। पूंजीवादी कृषि के शीघ्र निर्माण के कारण, मजदूर श्रमिकों ने ग्रामीण श्रम शक्ति को अधिक श्रम प्रदान किया परन्तु उसी समय वहाँ बड़ी संख्या में यूरोपीय मूल के पारिवारिक उत्पादक (किसानों से अधिक कृषक) थे जो आंतरिक बाजार के लिए भोजन का उत्पादन करते थे। नई सदी के प्रारम्भ में सामाजिक संरचना के बड़े हिस्से में एक सतत प्रक्रिया के द्वारा क्रांतिकारी परिवर्तन हुए जिनका मैं यहाँ वर्णन करूंगा।

पिछली सदी के अंत से, विश्व में भोजन, फाइबर और जैव ईंधन के उत्पादन के लिए कच्चे माल की माँग में लगातार वृद्धि हुई है। उभरती अर्थव्यवस्थाओं की विशाल आबादी के नये उपभोक्ता के रूप में समावेश होने के कारण इन उत्पादों की कीमतें बढ़ी है। उच्च मांग वाली वस्तुओं के उत्पादक के रूप में, उरूग्वे ने भूमि उपयोग में वृद्धि की तीव्रता को अनुभव किया है। उरूग्वे ने अनाज और तिलहन उगाने के लिए नई जमीनों के शोषण में वृद्धि को पशुधन की उत्पादकता में वृद्धि के साथ जोड़ा जिसके परिणामस्वरूप कृषक उत्पादों के उत्पादन और निर्यात में वृद्धि हुई। उत्पादन के इन स्वरूपों, जिन्हें अधिक पारंपरिक समझा जा सकता है, में हमें वानिकी को जोड़ना चाहिए। सरकारी अनुदानों, जो 1987 में शुरू हुए, के कारण आज एक लाख हैक्टेयर से भी अधिक वन हैक्टेयर है। यहाँ बहुराष्ट्रीय कार्पोरेशन द्वारा निर्मित और संचालित दो लुगदी उत्पादन संयत्रों में टिम्बर का उत्पादन होता है। एक और घटक जो विभिन्न प्रकार के उत्पादन के स्वरूपों के सापेक्ष संतुलन को प्रभावित करता है वह राज्य की तेल कम्पनी के नेतृत्व में जैव ईंधन का उठान है।

कृषक जगत में होने वाले परिवर्तनों का स्पष्ट संकेत भूमि की कीमतों से मिलता है। पिछले दशक से भूमि की औसत कीमत सात गुना बढ़ गई हैं। परन्तु सबसे बड़े खेतों (2500 हैक्टेयर से ऊपर) के लिए यह वृद्धि बारह गुना है जिसके कारण दोनों ही छोटे और बड़े उत्पादकों ने अपनी जमीनें बेच दीं। इसका परिणाम भूमि का बढ़ता संकेन्द्रण और विदेशी स्वामित्व में वृद्धि है। 2011 की कृषि संगणना के नवीनतम प्रारंभिक आँकड़े दर्शाते

> >

आज का जैव–तेल, कल की भूख?
चित्रण आर्बू द्वारा।

हैं कि यदि वर्ष 2000 में 57,131 कृषि भूखंड थे, ग्यारह वर्ष बाद सिर्फ 44,890 रह गये। यद्यपि गायब होने वाले 12,241 भूखण्डों के 91%, 100 सतह हैक्टेयर से भी कम थे, ऐसे संकेतक हैं जो इस बात की ओर इंगित करते हैं 70 और 80 के दशक में न सिर्फ छोटे भूस्वामियों का बल्कि पशुधन के स्थानीय मालिकों का भी विस्थापन हुआ।

भू–स्वामियों की एक नई श्रेणी के समेकन का निर्विवाद रूप से सांस्कृतिक प्रभाव पड़ा है जो कम से कम विदेशी स्वामित्व के साथ जुड़ा नहीं है। 2011 की उसी संगणना के प्रारंभिक आंकड़े दर्शाते हैं कि 2000 में जहाँ उरूग्वे की 90% जमीन उरूग्वे में शारीरिक रूप से रहने वाले व्यक्तियों के पास थी, ग्यारह वर्ष पश्चात यह अंक 54% तक गिर गया। 2011 तक उरूग्वे की 43% भूमि कानूनी 'व्यक्तियों', मुख्यतः 'बेनामी सोसाइटी', जिनमें से ज्यादातर अन्य राष्ट्रों के नागरिक और निगम थे, के हाथों में चली गई।

अतः हम विस्तृत पशुधन संपत्ति के वर्चस्व वाले परिदृश्य से अनाज और वन खेती के विशाल भूभाग, जैव ईंधन के उत्पादन, बड़े निगमों का प्राधान्य, बड़ी मशीनरी को अपनाना, ग्रामीण आबादी का शहरों और छोटे कस्बों की तरफ क्रमिक पलायन, भूमि की उच्च सघनता, विदेशी स्वामित्व इत्यादि वाले परिदृश्य की तरफ चले गये हैं। ऐसा इस सीमा तक हो गया कि आज का कृषक समाज बीसवीं सदी के अंतिम छमाही में जो था, उससे पूर्णतः भिन्न लगता है।

कृषि एवं परिदृश्य के नाटकीय परिवर्तन एक दूसरे से सम्बन्धित कई प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप हुए हैं। पहला, नियामक ढाँचे में परिवर्तन ने कृषक उद्यमों की एक विस्तृत श्रृंखला में वित्त पूंजी के प्रवेश की सुविधा प्रदान की। दूसरा, फर्मों के अन्तर्गत संगठनात्मक परिवर्तनों, विशेष तौर पर 'नेटवर्क उद्यमों' के निर्माण ने पूंजी को असाधारण संविदात्मक लचीलेपन के साथ संचालित करने के संसाधन उपलब्ध कराये। तीसरा, कृषि कार्य को उन ठेकेदारों को जो कृषि मशीनरी की सेवा अपने सामाजिक नेटवर्क के माध्यम से कामगारों की भर्ती और प्रबंधन द्वारा करते हैं को अधिकाधिक आउटसोर्स किया गया है। चौथा, परिशुद्ध कृषि के कारण आने वाले प्रौद्योगिक परिवर्तनों ने उत्पादकों की एग्रोकेमिकल और नई मशीनरी के साथ आनुवांशिक रूप से संशोधित बीजों पर निर्भरता बढ़ा दी है। पशुधन सम्पत्ति के सन्दर्भ में, इसमें टीकाकरण, पशु स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए नये उत्पाद, खाने के उपकरण इत्यादि सम्मिलित हैं।

इसी समय नई सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (कम्प्यूटर, इंटरनेट एक्सेस, सेलुलर फोन इत्यादि) के आगमन ने कृषक कम्पनियों के प्रबंधन को गहराई से परिवर्तित किया। ढाँचेगत सुधार और मोटरसाइकिल के इस्तेमाल के विस्तार के साथ मिलकर इन तकनीकों ने श्रम शक्ति के संयोजन को बदल डाला। ऐसा उन्होंने कामगारों को एक दूसरे से और नगरीय क्षेत्रों से जोड़कर जिससे 'देश' और 'शहर' के मध्य सांस्कृतिक सीमाओं का स्थानांतरण हुआ, किया। कृषि और ग्रामीण समाज की संरचना के इस पुनर्विन्यास ने नये कलाकार और नये गठबंधनों का निर्माण किया जो लंबी कृषि परम्परा वाले देश जो अपने लोकतंत्र, समानता और वहनीयता में सुधार की आकांक्षा रखता है, में जाँच की माँग करते हैं। ■

> हंगरी में माफिया समाज का उदय

ज्योर्जी सपेली, इओटिओस लोराण्ड विश्वविद्यालय, बुडापेस्ट, हंगरी

व्यापक रुप से पढी जाने वाली Heti Világgazdaság (World Economy Weekly) के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित शासक दल (Fidesz) को एक माफिया के रुप में दर्शाते हुए।

वर्ष 1989 के अद्भुत वर्ष के बाद से हंगरी में 20 से अधिक वर्ष बीत चुके थे जब समाजवादी राज्य का अस्तित्व अचानक समाप्त हो गया और उदार सिद्धांतों पर आधारित एक नयी व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह एक बाजार अर्थव्यवस्था और लोकतंत्र के लिए संक्रमण काल का प्रारम्भ था। जैसा कि माईकल बुरावे और कैथरीन वरडेरी ने 'अनसर्टेन ट्रांजीशन' (अनिश्चित संक्रमण) के परिचय में लिखा है, इस प्रक्रिया के अनुभवकर्त्ता/अवलोकन करने वाले, अपनी विवेचना के आधार पर विभाजित थे, वे 'इतिहास का अंत' और 'उत्तर–आधुनिकता के नए अज्ञात पथ' की व्यापक विवेचनाओं के बीच फंसे थे। यद्यपि वास्तविकता कुछ और ही थी।

कुछ रेडीकल बुद्धिजीवियों और भली भाँति परिचित उच्च श्रेणी के कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ताओं के अलावा इस प्रक्रिया के किसी भी एजेण्ट को नई व्यवस्था के संक्रमण से वास्तव में कोई उम्मीद नहीं थी। सामान्य मनुष्य निश्चित रूप से परिवर्तन के पक्ष में नहीं थे और उन्होंने जल्दी ही अनुभव किया कि व्यवस्था की नवीनताएं, विशेषतः उद्यमिता और बेरोजगारी, उनके अनुरूप नहीं थीं।

समाजवादी राज्यों में गिने जाने वाले देशों के बीच हंगरी को कृषि क्षेत्र में एक निश्चित प्रकार की उद्यमशीलता के लिए जाना जाता था। इवान सेलेनी की पुस्तक 'सोशलिस्ट एन्टरप्रिन्योरस्' के अनुसार, हंगरी के समाजवादी राज्य की लगभग 10 प्रतिशत जनसंख्या उद्यमी गतिविधियों में संलग्न थी। हालांकि, पश्चिमी पूंजीवाद के संदर्भ में उद्यमिता को केवल अस्वीकार ही नहीं किया जाता था अपितु इसे एक अपराध माना जाता था। सेलेनी का 'अवरोधित बुर्जुआकरण' का सिद्धांत असत्य सिद्ध हुआ। पूर्व–समाजवादी उद्यमियों ने जल्दी ही यह अनुभव किया कि नई–वितरण व्यवस्था के अन्तर्गत उद्यमिता बहुत जोखिम पूर्ण थी और इसलिए अधिकांश उनमें से असफल भी रहे। प्रतिभा या उपलब्धि के बजाय नेटवर्क के आधार पर सफलता प्राप्त करना आकस्मिक था। अनेक नए उत्तर–समाजवादी उद्यमियों ने भूतपूर्व 'समाजवादी उद्यमियों' के बजाय भूतपूर्व उच्च स्तरीय कर्मचारियों से अनुभव ग्रहण किए।

उनमें से अनेक श्रमिक वर्ग या मध्य वर्ग और निम्न श्रेणी के पदों से आए कर्मचारियों ने बेरोजगारी का सामना किया। एक 'अभावग्रस्त अर्थव्यवस्था' से एक 'अधिशेष अर्थव्यवस्था'

> >

की ओर संक्रमण की स्थिति में दिवालिया राज्य की अर्थव्यवस्था के लगभग डेढ़ लाख पूर्व कमर्चारियों को अपना रोजगार खोने पर मजबूर कर दिया। धनी और निर्धन के बीच आय व उपभोग के आधार पर अन्तर, विशेष रूप से, हाल के वर्षों में बहुत महत्वपूर्ण हुए हैं। हाशिए पर स्थित जनसंख्या जिसमें रोमा, दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली बुजुर्ग पीढ़ी और बेघर लोग शामिल हैं, बड़े पैमाने पर सभी समाज के साथ चलने की उम्मीद खो चुके हैं। नृजातीय और क्षेत्रीय असमानताएं इतनी घुलमिल गई हैं कि जिसके परिणाम स्वरूप उतर–हंगरी में बस्तियों की तरह के आवास उभर कर आए हैं। भेदभाव व निर्धनता की संस्कृति ने रोमा अल्पसंख्यकों का जीवन दुखद बना दिया।

भौतिक असुरक्षा के अतिरिक्त, ज्ञानमीमांसीय असुरक्षा की भावना भी यहाँ है जो कि विश्व दृष्टि और विचारधाराओं से प्रतिस्पर्धा करने के अवसरों के साथ उभरी है। समाजवाद में रहने वाले वाक्लाव हावेल के एक प्रसिद्ध फल विक्रेता ने तर्क दिया कि 'असत्य का जीवित रहना असत्य की दुनिया को निर्मित करता है' (Living a lie is living a lie)। क्या फर्क पड़ता है कि वे सत्ता में थे या नहीं, समाजवाद के पक्ष और विपक्ष दोनों ही सहमत थे कि सत्य और असत्य अस्पष्ट थे। दलगल राज्य से राजनीतिक बहुलवाद की ओर संक्रमण के साथ ही सत्य व असत्य के बीच का विभाजन गायब हो गया–एक ऐसा विभाजन जो कि संक्रमण से पूर्व लगभग स्थायी लग रहा था। अनभ्यस्त लोग सत्य और असत्य के बीच चुनने की प्रतिस्पर्धा से विमुख हो गए। विचारों की स्वतंत्रता उन नागरिकों के लिए एक दुःस्वप्न बन गई जो कि चिंतन करने से डरते थे।

इन दोनों प्रकार की असुरक्षाओं ने उदारवाद के विरूद्ध एक लोकतांत्रिक विद्रोह का नेतृत्व किया। 2010 में राष्ट्रवादी गठ बंधन की भारी जीत के साथ लोकतंत्र ने अपने उत्पादों को ही समाप्त कर दिया। संक्रमण की 25वीं वर्षगांठ पर यह संभव है कि हंगरी में समाजवादी राज्य की वापसी हो जाए, लेकिन इस बार यह राष्ट्रीय समाजवाद के रूप में दिखाई देगा।

बेलिन्ट मगयार के अनुसार, आज के हंगरी समाज को 'माफिया राज्य' के रूप में संबोधित किया जा सकता है जो कि निकट समूहों में विभाजित है जिसमें सामाजिक सम्बंध बहुत गहरे हैं परंतु विभिन्न समूहों के बीच सम्बंध मुश्किल से ही हैं। या इसे समाजशास्त्रीय संदर्भ में देखने पर मार्क ग्रेनोवेटर कहते हैं कि मजबूत संबंधों की व्यापकता ने माफिया राज्य को उभारा, बदले में, कमजोर संबंधों पर आधारित सामाजिक संगठनों के विकास को अवरूद्ध किया। परिणामस्वरूप कमजोर सम्बंधों पर आधारित नागरिक–समाज संगठनों की अनुपस्थिति ने राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा और अर्थव्यवस्था के विकास को अवरूद्ध किया।

अपनी वैधता को सुरक्षित रखने के प्रयासों में 'माफिया राज्य' के नेताओं ने आवश्यक रूप से एक राष्ट्रवादी विचारधारा का सहारा लिया। गैर–माफिया समूह जो वस्तुओं और सेवाओं के पुनः वितरण की प्रणालियों पर नियंत्रण रखते हैं, प्रतीकात्मक वस्तुओं के रूप में पुनर्वितरण में अपना हिस्सा प्राप्त करते हैं–राष्ट्रवादी विचारधारा के संदेश को अनेक बार दोहराया कि हंगरी के लोग जन्मजात स्वतंत्रता सेनानी होते हैं, आंतरिक और बाह्य शत्रुओं, जो कि षडयंत्र में शामिल होते हैं, से लड़ाई करते हैं। आंतरिक शत्रु अर्थात् यहूदी को परिभाषित करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे स्थायी हो चुके हैं और एक लंबे समय से जाने जाते हैं। हालांकि, बाह्य शत्रु बदल चुके हैं चूंकि तुर्क, हब्सबर्ग या रुसीयों के बाद अब कोई लक्ष्य नहीं है। नया बाह्य शत्रु अब ब्रुसेल्स है। यूरोपीय संघ हंगरी के राष्ट्रवादी असंतोष का केन्द्र बन चुका है। यह एक विडम्बना है या शायद इतनी विडम्बना नहीं है कि यूरोपीय संघ विरोधी बयानबाजी यूरोपीय संघ के विभिन्न स्त्रोातें से देश में धन/वित्तीय सहायता आने के प्रति झूठी अज्ञानता का प्रदर्शन करते हैं।

माफिया राज्य ने तीन सामाजिक समूहों को विकसित किया। एक समूह सत्तारूढ़ राजनीतिक परिवारों के निकट परिवेश से सम्बद्ध था। दूसरा समूह उन लोगों से निर्मित था जो सरकार के राष्ट्रवादी संदेश का पालन करने के इच्छुक थे। वे सत्तारूढ़ दल द्वारा निर्मित सहयोग प्रणाली में सहभागिता करने के लिए तैयार थे। इस उत्साह के लिए अनेक कारण जिम्मेदार थे; उत्कट साम्यवाद–विरोध, नौसिखियाओं की भर्ती का अभियान, समाजवादी राज्य की पूर्व सत्ता के तहत अन्याय के अनुभव, या फिर केवल पेशावाद। हंगरी का तीसरा समूह नए प्रवासियों से निर्मित हैं जिनकी संख्या में पिछले कुछ वर्षों में वृद्धि हुयी है। एग्नेस हार्स द्वारा किये गये एक अध्ययन के अनुसार, ये लोग उच्च शिक्षित, युवा हैं जो पश्चिमी ट्रांसडेन्यूबिया (आस्ट्रिया से सटा हुआ) तथा उत्तरी हंगरी के पुराने औद्योगिक क्षेत्र में रहते हैं तथा उत्प्रवास को आधार प्रदान करते हैं।

हालांकि उनके लिए जो हंगरी में रहते हैं वर्तमान स्थिति से बाहर निकलने के लिए कुछ हद तक सामाजिक विश्वास को पुनः स्थापित करने अर्थात् समाज के सदस्यों के बीच, जो एक–दूसरे से अजनबी थे, सहयोग विकसित करने के अलावा उनके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था। घनिष्ठ सम्बंधों की कैद से बाहर आने तथा कमजोर सम्बंधों पर आधारित कई नए समुदायों को निर्मित करने का कार्य होना चाहिए। ■

> समकालीन हंगरी में वर्ग का भविष्य

एस्थर बारथा, इओटिओस लोराण्ड विश्वविद्यालय, बुडापेस्ट, हंगरी

परित्यक्त औद्योगिक खंडहर – जहां कभी श्रमिकों की फौज हुआ करती थी, वहां अब ताक–झांक करते कुत्ते घूमते हैं। चित्र बलाज् गार्दी द्वारा।

पहला सवाल मन में आता है कि क्या उत्तर–औद्योगिक समाज में वर्ग की अवधारणा की कोई प्रासंगिकता है या वास्तव में वर्ग की वापसी के लिए किसी प्रकार की अकादमिक बहस शुरू होगी? पूर्वी यूरोप में वर्ग की अवधारणा समाजवादी राज्य के विकास से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध थी जिसने श्रमिक वर्ग के शासक वर्ग में बदलने की घोषणा की थी।

1989 में समग्र विश्व में साम्यवादी शासनों के अंतिम और तेजी से पतन ने आधिकारिक श्रमिक वर्ग के इतिहास की वैध व्याख्या की उपेक्षा की। तत्कालीन समय की इन घटनाओं ने मार्क्सवादी सोच/दृष्टिकोण की प्रभावी प्रवृत्तियों में उपस्थित वर्ग–स्थिति तथा वर्ग–चेतना के मध्य एक सरल समानता को अस्वीकार कर दिया। जबकि 1989 में वहाँ कुछ ऐसे पूर्वी यूरोपीय बुद्धिजीवी भी थे जो कि श्रमिकों द्वारा नियंत्रित[1] समाजवादी लोकतंत्र की चर्चा कर रहे थे तथा अनेक सुधारकों से निर्मित अन्य समूह पूंजीवाद व समाजवाद के मध्य एक 'तीसरा मार्ग' तलाश कर रहे थे और कुछ बुद्धिजीवी एक मिश्रित अर्थव्यवस्था और मजबूत श्रम संघों पर आधारित सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना का रास्ता ढूंढ रहे थे। बहुत हद तक यह उम्मीद भी की जा रही थी कि श्रमिक वर्ग पूंजीवाद की बहाली का या यहाँ तक कि एक सुधारवादी सामूहिक विकल्प का समर्थन नहीं करेंगे। बेशक यह उम्मीद गलत साबित हुई और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के प्रारम्भ का विरोध करने वाला श्रमिक वर्ग अपेक्षाकृत कम प्रभावी सिद्ध हुआ। वास्तव में, पूर्वी यूरोप कोई एक अकेला देश नहीं था जहाँ स्थापित प्रणाली के विकल्प के रूप में श्रमिकों ने किसी भी प्रकार की लोकतांत्रिक समाजवादी व्यवस्था का समर्थन किया था। न ही पूर्वी यूरोपीय राजनीतिक व बौद्धिक परिवेश सत्ता परिवर्तन के बाद वर्ग की अवधारणा की समीक्षा के लिए तैयार था, वर्ग सिद्धांत के सभी स्वरूप अत्यधिक अविश्वसनीय माने जाने लगे और श्रमिक वर्ग वस्तुतः समाजवादी राज्य के अतीत के साथ गैर–आलोचनात्मक रूप से सम्बद्ध था तथा बौद्धिक अभिजन

>>

के रूप में 'बुर्जुआकरण' के भविष्य की तैयारी कर रहा था जिसने औद्योगिक श्रमिकों की सामाजिक और राजनीतिक भूमिकाओं के महत्व को कम कर दिया।

तो फिर पूर्वी यूरोप में वर्ग की अवधारणा पर पुनर्विचार करना आवश्यक क्यों हैं? 'बुर्जुआकरण' की प्रक्रिया ने पश्चिम के उन्नत/विकसित पूंजीवादी देशों में मध्य–वर्गों के जीवन स्तर को तेजी से बदलने तथा सार्वभौमिक रोजगार और सामाजिक सुरक्षा का प्रबन्ध करने का लोगों से वादा किया, जिसका उन्होंने समाजवाद के अंतर्गत अनुभव किया था। समाजवादी राज्य के पतन के 20 वर्षों के बाद इस प्रक्रिया की असफलता जनता के सामने स्पष्ट हो गयी। उत्तर–समाजवादी पूंजीवाद के बाद से निजीकरण ने सामाजिक अविश्वास में वृद्धि की और समाजवादी राज्य की तुलना में सामाजिक और भौतिक असमानताओं को हर जगह व्यापक रूप से उत्पन्न कर दिया। भारी उद्योगों की संख्या में व्यापक कमी के परिणामस्वरूप व्यापक बेरोजगारी उत्पन्न हुयी जबकि घरेलू उद्योगों पर विदेशी पूंजी ने अनुचित प्रतिस्पर्धा थोप दी जिसमें पूंजी और ढांचागत निवेश की बहुत ज्यादा जरूरत थी। पश्चिमी लेखकों ने भी पूर्वी यूरोप[2] के लिए एक नई 'औपनिवेशिक' योजना के रूप में नव्य–उदारवादी पूंजीवाद की आलोचना की।

इस सवाल के जवाब में कि हंगरी में उत्तर–समाजवादी पूंजीवाद ने किस प्रकार की नयी संरचनात्मक स्थिति उत्पन्न की; हम कह सकते हैं कि पश्चिमी रूझानों के अनुरूप–इसने औद्योगिक क्षेत्र की हिस्सेदारी को कम किया तथा अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी में महत्व पूर्ण वृद्धि की। इसके अतिरिक्त आउटसोर्सिंग ने पूर्व और पश्चिम के मध्य संरचनात्मक असमानताओं को पुनः मजबूती प्रदान की जो कि पश्चिमी यूरोप की तुलना में हंगरी में पूंजीपतियों की सापेक्षिक रूप से कम मात्रा तथा अकुशल श्रमिकों की अधिक मात्रा को व्यक्त करता है। सलाई (Szalai) का तर्क है कि समकालीन हंगरी समाज की विवेचना के लिए एक दोहरे मॉडल की आवश्यकता है जिसमें वह बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कर्मचारियों तथा घरेलू क्षेत्र के कर्मचारियों के मध्य अन्तर करते हैं। बाद वाले समूह अर्थात घरेलू क्षेत्र के कर्मचारियों को कम भुगतान किया जाता है, अक्सर अनौपचारिक रूप से कार्यरत छोटी–मोटी घरेलू मरम्मत करने वालों का अत्यधिक शोषण होता है और उनकी अगले दिन की उपस्थिति को सुनिश्चित करने के लिए उनका एक दिन का भुगतान रोक लिया जाता है। जबकि पहले वाले समूह अर्थात् बहु–राष्ट्रीय कंपनियों के कर्मचारियों को नये श्रमिक अभिजात वर्ग के रूप में देखा जा सकता है। उसी समय में सलाई ने हंगरी के श्रमिक वर्ग के विभेदित चरित्र पर बल दिया, उनके अनुसार बहुत ही सतही वर्ग–चेतना (यहां तक कि न के बराबर) और स्थानीय श्रम संघों की कमजोरी जैसी चारित्रिक विशेषताओं ने हंगरी के श्रमिक वर्ग के 'स्वयं के लिए वर्ग' में परिवर्तित होने में बाधा उत्पन्न की और इससे स्पष्ट है कि श्रमिकों के हितों का प्रतिनिधित्व[3] करने में भी बाधा उत्पन्न हुई।

हालांकि, स्वीकृति की तो बात ही क्या, असमानता के ये नए स्वरूप हंगरी समाज द्वारा संस्थागत रूप से स्वीकृत नहीं थे। मेरे श्रमिक वर्ग के साथ साक्षात्कार[4] के दौरान उन्होंने यह बताया कि 'इस बाजार अर्थव्यवस्था ने हमें बाहर कर दिया है'। श्रमिक वर्ग 'इस पूंजीवाद' से अत्यधिक निराश थे। उनका कौशल और ज्ञान नयी शासन व्यवस्था के द्वारा कम करके आंका जा रहा था और उन्होंने माना कि यद्यपि कादर शासन के तहत लोग समान नहीं थे, परंतु 1989 से सामाजिक–भौतिक असमानताओं में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुयी है। मेरे अनेक उत्तरदाताओं ने यह शिकायत की कि उनके बच्चे मैनेजर (प्रबंधक), डॉक्टर (चिकित्सक) और वकील के बच्चों के साथ प्रति–स्पर्धा करने में असमर्थ हैं जो कि अपना वयस्क जीवन ज्यादा बेहतर सुविधाओं (निजी भाषा पाठ्यक्रम, खेल कक्षाओं, नृत्य स्कूल, स्की शिविरों इत्यादि) के साथ प्रारम्भ करते हैं।

नई सत्ता की यह आलोचना, हालांकि, पूंजीवाद विरोधी आलोचना का पूरी तरह से अनुवाद करने में असफल रही है। आम तौर पर, कर्मचारी/श्रमिक राज्य से अपेक्षा करते हैं कि वह बहुराष्ट्रीय कंपनियों की अनुचित प्रतिस्पर्धा से घरेलू उत्पादकों की रक्षा करेंगे। उन्होंने एक सकारात्मक विकल्प के रूप में एक मजबूत राज्य व एक 'तीसरा मार्ग' राष्ट्रीय पूंजीवाद के रूप में प्रस्तुत किया। इस प्रतिक्रिया के लिए एक मजबूत पूंजीपति विरोधी सार्वजनिक क्षेत्र की कमी, श्रमिक वर्ग की अवधारणा का महत्वहीन होना तथा साथ ही गहन ऐतिहासिक–आर्थिक कारणों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिसके कारण क्षेत्र का पिछड़ापन अभी भी बना हुआ है।

हालांकि, राजनीतिक भ्रष्टाचार, वर्ग विभाजन का विस्तार, निम्न वर्ग का विस्तार, श्रम संघों का कमजोर होना इत्यादि हंगरी जैसी प्रवृत्तियां विकसित पश्चिमी देशों, जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका में भी देखी जा सकती हैं। क्या यह हो सकता है कि उत्तर–समाजवादी देश पश्चिमी देशों के लिए दर्पण के रूप में अथवा एक मॉडल के रूप में काम कर रहे हों और सामाजिक व आर्थिक समस्याओं के वैश्विक रूपांतरण के साथ–साथ वर्ग के पतन के राजनीतिक परिणामों की ओर संकेत कर रहे हों, जो कि कर्मचारी/श्रमिक वर्ग के मध्य नृजातीय–लोकलुभावन विचारधाराओं को उत्पन्न करते हैं? यह तर्क देना एक चलन सा बन गया है कि उत्तर–औद्योगिक समाज में इसकी कार्पोरेट संस्कृति (निगमीय संस्कृति) के साथ–साथ प्रतिभा, उपलब्धि और परिश्रम यह तय करते हैं कि कौन सफलता प्राप्त करेगा ताकि 'समान प्रतियोगिता' सामाजिक रूप से स्वीकार्य व्यावसायिक और भौतिक असमानताओं को निर्मित करे। यही उत्तर–समाजवादी पूंजीवादी विचारधारा भी कि जिसने अधिकारिक मार्क्सवाद–लेनिनवाद की तरह ही मोहभंग उत्पन्न किया। पहला, प्रतियोगिता समान नहीं और दूसरा, क्रूर पूंजीवादी प्रतियोगिता ने व्यापक सामाजिक और भौतिक असमानताओं को उत्पन्न किया जिसे लम्बे समय तक लोगों ने स्वीकार नहीं किया। वास्तव में, विभिन्न लोगों ने व्यापक सामाजिक न्याय के लिए निरंकुशता को भी स्वीकार किया। उम्मीद है यह एक लोकतांत्रिक पश्चिम होगा जो कि पूर्व के भविष्य के लिए दर्पण या प्रतिबिम्ब का काम करेगा क्योंकि अन्य कोई रास्ता नहीं है। ■

[1] In Hungary the idea of democratic socialism without the Hungarian Socialist Workers' Party (the former Communist Party) was represented most completely by the Leftist Alternative Union (*Baloldali Alternatíva Egyesület*). After the political failure of its project, the intellectual heritage of this school was continued by the journal *Eszmélet* (Consciousness) launched in 1989. The internationally most well-known intellectual of this circle is Tamás Krausz.

[2] For a review of the literature see: Swain, N. (2011) "A Postsocialist Capitalism," *Europe-Asia Studies*, 63:9, pp.1671-1695.

[3] Szalai, E. (2004) "Tulajdonviszonyok, társadalomszerkezet és munkásság," *Kritika*, 33:9, pp.2-6.

[4] For a summary of this research see: Bartha, E. (2012) "'Something went wrong with this capitalism': Illusion and doubt in a Hungarian (post)industrial community," in: Mathijs Pelkmans (ed.) *Ethnographies of Doubt*. London: I.B. Tauris, pp.191-225.

> अभिजन/अभिजात्य वर्ग की (गैर) जिम्मेदारी पर लेख

ज्योर्जी लेंग्यिल, कारविनस विश्वविद्यालय, बुडापेस्ट, हंगरी

हंगरी के प्रधान मंत्री की खेलों में विशेष अभिरुचि है....

हंगरी के प्रधानमंत्री को खेलों, विशेष रूप से फुटबाल के खेल से बहुत अधिक लगाव है। वह अक्सर अपने भाषण को 'आगे बढ़ो हंगरी' (फारवर्ड हंगरी) के सम्बोधन के साथ समाप्त करते हैं, यह मंत्र उन्होंने बुर्लस्कोनी से ग्रहण किया था। हंगरी में आजकल फुटबाल का खेल लगभग उपेक्षित–सा है। इसलिए राजनीतक अभिजन कुछ हद तक कमजोर पड़ने लगे हैं। प्रधानमंत्री के बचपन के प्रिय स्थान पर, जो उनके प्रांतीय सदन के बिल्कुल निकट है, एक स्टेडियम बनाया जा रहा है जहाँ एक नियोजित संकीर्ण रेल मार्ग से पहुँचा जा सकता है। बहुत–से लोग इससे नाखुश हैं और अन्य नहीं। वे कहते हैं, ''हमने जो कुछ भी संचित किया है, उसपर गर्व करो।'' उप–प्रधानमंत्री, जब वह एक ग्रामीण कस्बे में एक राजनीतिज्ञ थे, ने स्पष्ट रूप से कहा था, ''यदि तुम्हारे पास कुछ नहीं है तब तुम्हारा मूल्य क्या है।''

यह सोच हंगरी में विलम्ब–समाजवादी राज्य युग में उभर सकती है। 70 के दशक से, युद्धकालीन अभावों के बाद का दशक, वितरण संबंधी दायित्वों और बलपूर्वक सामूहीकरण/एकत्रीकरण ने सहकारी और गृहस्थ भूमि के आभासी बाजार की सहजीविता (साथ–साथ उपस्थिति), पुनर्वितरण और दूसरी अर्थव्यवस्था के माध्यम से लोगों को अपनी दशा सुधारने का अवसर दिया। परिणामस्वरूप हंगरी के गांवों में बहुमंजिला मकान बनने की शुरूआत हुई। अनेक घर कम गर्म और रहने में असुविधाजनक थे परंतु ये मकान प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण थे। वर्तमान सत्तारूढ़ अभिजन के लिए स्टेडियम प्रतिष्ठा का प्रतीक थे।

> >

उन्हें उसके स्वामित्व की आवश्यकता नहीं थी, उनके लिए इतना ही पर्याप्त था कि अन्य देशों के सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों, पिरामिड और विजय स्तम्भ की तरह उनके नाम भी स्टेडियम से जुड़े।

हालांकि, हंगरी के राजनीतिक अभिजनों की मुख्य समस्या घमण्ड, लालच और अरूचि होना नहीं हैं। मुझे डर है कि हंगरी के लोकतंत्र का एकीकरण खतरे में है–इसे हंगरी के राजनीतिक अभिजन वर्ग की मुख्य जिम्मेदारी माना जा रहा है। यह देखने के लिए किसी का संभ्रातवादी होना आवश्यक नहीं है कि सामाजिक विकल्पों को डिजाइन करने अथवा तैयार करने में अभिजन वर्ग की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है और जब भी ये संस्थाएं गंभीर और महत्वपूर्ण मामलों में नियमों का उल्लंघन करती हैं राजनीतिक अभिजन, यदा–कदा लोकतांत्रिक संस्थाओं के साथ समायोजन करने को प्रेरित करते हैं।

ऐसे दो उल्लंघनों की संक्षिप्त चर्चा यहां की जा सकती है। पहला उदाहरण अभिजन वर्ग की बस्ती की निंदा से सम्बद्ध है। व्यापक बदलाव से पहले अभिजन वर्ग के प्रतिस्थापन में वृद्धि ने तीव्रता से और बिना किसी व्यापक सामाजिक आघातों के राजनीतिक रूपांतरण की प्रक्रिया को उत्पन्न करने में सहयोग दिया। बदले में इसने राज्य के समाजवादी अभिजन वर्ग और बढ़ते लोकतांत्रिक विरोध के 'अभिजन वर्गों' के बीच समझौता करने में सहायता की। 1989 की बैठक में अभिजन बस्ती का एक तंत्र गठित किया गया जिसके तहत अभिजन वर्ग संरचना को विकसित करने के लिए एक आम सहमति बनी। मूलभूत स्वतंत्रता, बहुदलीय प्रणाली और निजी सम्पत्ति के प्रति सम्मान के साथ संसदीय लोकतंत्र के नियमों की अनुपालना के लिए एक व्यापक सहमति बनी। कर्त्ताओं ने एक–दूसरे की वैधता और खेल के नियमों को पारस्परिक रूप से स्वीकार किया। राजनीतिक अभिजन वर्ग के उस विभाजन ने, निम्नलिखित पक्षधर हितों को, सहमति से एकजुट हुए अभिजनों के क्रियात्मक नियमों को फिर से तैयार किया या अपने प्रतिद्वंद्वी की वैधता, जो मामूली–सी परेशानी पैदा कर रही थी, की आसानी से अनदेखी कर दी या उसे अस्वीकार कर दिया।

नियम उल्लंघन का दूसरा महत्वपूर्ण उदाहरण चुनाव प्रचार के दौरान एकत्र किये गये चंदे से सम्बद्ध है जो कि कानूनी रूप से स्वीकृत राशि से बहुत अधिक है। पार्टी चंदा, विशेष रूप से, प्रचार अभियान चंदा अस्पष्ट है, इसकी कानूनी व गैर–कानूनी परिभाषा स्पष्ट नहीं है, जिसका निर्धारण हंगरी के राजनीतिक अभिजन वर्ग के दृष्टिकोण से होता है। एक पारदर्शी अंतर्राष्ट्रीय संगणना के आधार पर पूर्व के चुनावों में दोनों महत्वपूर्ण दलों ने–वर्तमान सत्तारूढ़ फिडेस्ज Fidesz तथा विपक्षी समाजवादी–ने कानूनी रूप से स्वीकृत राशि से लगभग तीन गुना अधिक खर्च किया था। अन्य विशेषज्ञों ने अनुमान लगाया कि यह खर्चा बहुत ज्यादा था। राजनीतिक वित्तीय अथवा आर्थिक गतिविधियों को संशोधित करने के लिए विभिन्न प्रस्ताव रखे गये ताकि प्रचार अभियान सम्बंधी चंदे/खर्चे को अधिक पारदर्शी बनाया जा सके, परंतु कोई भी प्रस्ताव पारित नहीं हुआ। यह विशिष्ट रूप से हंगरी की प्रघटना नहीं है, परंतु यहां, लोकतंत्र का एकीकरण अब खतरे में है। प्रत्यक्ष रूप से, शासक अभिजन पार्टी चंदे के विषय में भ्रम की स्थिति बनाये रखने में रूचि रखते हैं। अभिजन अनुभव करते हैं कि इस स्थिति को समर्थन प्राप्त नहीं है परंतु फिर भी उसकी उपेक्षा करते हैं। संक्षेप में, स्पष्ट रूप से यह देखा जाता है परंतु इसकी विवेचना विचारधारायी संदर्भ में की जाती है।

एक भूतपूर्व समाजवादी प्रधानमंत्री, जिसने अपने मंत्रीत्व काल में एक नये दल का गठन किया था, ने दो बड़े विरोधी दलों के आर्थिक मामलों की पूर्व विसंगतियों को उजागर किया परंतु उन्होंने कहा कि न्यायालय में मूर्त साक्ष्य प्रस्तुत करने से पहले वे इन दोषों का इंतजार कर रहे थे जो उनके विरूद्ध लगे थे। यह बहुत ज्यादा सपष्ट नहीं था कि सच बोलने से उन्हें कौन रोकता है। पूर्व प्रधानमंत्री ने बताया कि बड़े व्यापार का एक क्रूर हिस्सा स्वयं राजनीति में, सर्वप्रथम उनके विरोधी दल समाजवादी दल, ऐसा करने से रोक रहा था। भूतपूर्व लोकतांत्रिक विपक्ष का एक भूतपूर्व सदस्य तथा पूर्व मंत्री यह तर्क देते हैं कि वर्तमान शासक/सत्तारूढ़ अभिजन ने एक माफिया राज्य का निर्माण किया, सरकार बनाने के लिए अर्थव्यवस्था में हेर–फेर किया जा सकता है और नियमों व कानूनों की सहायता से अपने ग्राहकों को राजस्व का पुनर्वितरण किया जा सकता है।

हंगरी में अराजकता या तानाशाही नहीं है। हालांकि, दोनों उभर सकते हैं, तानाशाही के उभरने के अवसर ज्यादा हैं। अपने दो–तिहाई संसदीय बहुमत (वास्तव में योग्य मतदाताओं के संदर्भ में अल्पसंख्यक) के साथ, संकीर्ण सरकार ने एक नया संविधान, एक नया मीडिया कानून, एक नया चुनाव अधिनियम और एक नये श्रम कानून को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया और यह सब बिना किसी व्यापक समर्थन के पारित हो गया। इन अधिनियमों की सहायता से पूर्व में प्राप्त अधिकारों व हकों में व्यापक मात्रा में कटौती की गई, न्यायिक समीक्षा को अवरूद्ध कर दिया और लोकतांत्रिक अवरोधों व संतुलन को चुनौती दी। यूरोपीय संघ का प्रभाव बहुत ही सीमित दिखाई देता है और साथ ही आलोचनात्मक बुद्धिजीवियों की आवाज भी मंद हो गयी थी। प्रधानमंत्री के प्रबंधन की शैली अधिकारवादी एवं कठोर है, दीर्घकालिक संकटों के कारण लोग अनिश्चितताओं से भयभीत थे इसलिए उन्होंने सामाजिक सुरक्षा और व्यापक समानता के लिए आहवान किया।

यह लोकलुभावन आडम्बरों को प्रोत्साहित करता है जिससे 'आर्थिक स्वतंत्रता' के लिए स्वयं ही संघर्ष उत्पन्न हो जाता है, अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक हिस्सेदारों के प्रति कठोरता प्रदर्शित करता है तथा विशेष कर मुख्यतः विदेशी स्वामित्व के बैंकों व अन्य आर्थिक शाखाओं पर कर लगाने का बहाना बन जाता है। यह भी संभव है कि यह केवल आडम्बर न हो बल्कि शासक अभिजन वास्तव में ऐसा सोचते हों कि देश को उपनिवेश बनने से बचाने के लिए उन्हें बाह्य राजनीतिक और आर्थिक अवरोधों से लड़ना होगा और साथ ही उन्हें देश के बाह्य ऋणों में भारी कटौती अर्थात् कुल घरेलू उत्पाद (जी. डी. पी.) का 80 प्रतिशत तक कटौती करनी होगी क्योंकि ''कुछ लोग लम्बे समय तक ऋण से मुक्त नहीं हो पाते।'' हालांकि, समाजशास्त्री ऐसी सामाजिक तकनीकों का प्रयोग करना अच्छी तरह से जानते हैं जिससे भ्रम और विदेशी शत्रुओं को उत्पन्न करके एकता को मजबूती दी जा सकती हैं। पिछले चुनावों के परिणामस्वरूप, एक सह–उत्पाद के रूप में, हंगरी की संसद में अपरिचितों के प्रति भय व प्रजातीय दल उभर कर आये।

हंगरी की दो–तिहाई से अधिक वयस्क जनसंख्या विदेशी भाषा का प्रयोग नहीं करती। राज्य मीडिया संपूर्ण हंगरी राष्ट्र के विरूद्ध सरकार की विदेशी आलोचना को अपराध के रूप में प्रस्तुत करता हैं स्वतंत्र मीडिया का बहुत बड़ा हिस्सा सनसनीखेज पत्रकारिता के रूप में काम करता है जो कि विश्व को नायक व खलनायक के बीच संघर्ष के रूप में प्रस्तुत करता है। आजकल हंगरी के राजनीतिक अभिजन अत्यधिक विभाजित होने के कारण इस तरह के विरोधी विवेचन व प्रदर्शन के पात्र हैं। हालांकि यह सोचना गलत है कि 1989 में जिस सहमतिजन्य मॉडल (प्रारूप) की कल्पना की गई थी, उसे प्रतियोगितामूलक बहुमतवादी मॉडल (प्रारूप) ने आसानी से प्रतिस्थापित कर दिया है।

>>

प्रधानमंत्री ने इस विभाजन से उबरने की अपने मंशा को न छुपाते हुए, 'शक्तियों के एक केन्द्रीय क्षेत्र' को निर्मित किया या, दूसरे शब्दों में, आने वाले अनेक चुनावों के लिए उन्होंने अपनी सत्तारूढ़ स्थिति को मजबूत कर लिया। वह यह दावा करते हैं कि अपने सांस्कृतिक दायित्वों का पालन करना अभिजनों के लिए अपरिहार्य है। उन्होंने यह उदाहरण पेश किया कि किस तरह 'अच्छे से, उदारता से और रूचिपूर्ण' ढंग से जीते हैं। यह, बाद में, एक भूतपूर्व राजनीतिक सिद्धांतकार, इस्तवन बीबो, के लिए एक शाब्दिक संकेत है, जिन्होंने अभिजन के सामाजिक दायित्वों पर बल दिया। अब तक के अभिजन व्यवहार के उदाहरण भविष्य का कोई आशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत नहीं करते। आलोचकों ने जो कुछ उनमें पाया व औसत–दर्जे की स्वार्थपरकता और जोड़–तोड़ करने की कला के द्वारा शासक अभिजन ग्राहकों को राज्य भूमि के पट्टे देने में और तम्बाकू दुकानों के वितरण में छूट देने में संलग्न है। बीबो के एक खण्डनात्मक लेखक, युवा ज्योरगी ल्युकाक्स, ने दोस्तोवस्की नायक के दावे की धैर्यपूर्वक निंदा की कि वे सच का नेतृत्व करते हैं जबकि कुछ समय बाद वह पाते हैं कि यह एक स्वीकार्य समाधान है। अभी तक यह प्रयास असफल रहा था।

2014 के बसतं में, हंगरी में चुनाव होंगे। इसमें कोई संदेह नहीं कि वे मुक्त चुनाव होंगे। हालांकि, निष्पक्ष चुनाव होने पर कुछ संदेह है और फिर इन चुनावों को नियंत्रित भागीदारी के नियमों द्वारा नियमित किया जायेगा, तात्पर्य यह है कि शासक अभिजन मीडिया और मतदाताओं को अपने पक्ष में करने के लिए अपनी अत्यधिक शक्ति का दुरूपयोग करेंगे।

प्रधानमंत्री राजनीतिक चिंतकों की तुलना में आमजन का उल्लेख करना पसंद करते हैं। अपने एक वार्षिक प्रतिवेदन में उन्होंने एक आइस हॉकी खिलाड़ी के बोन मोट bon mot का उल्लेख किया जिसने कहा था अच्छा खेलने का रहस्य 'वहाँ खेलने का अभ्यास करो जहाँ खेल होने जा रहा है, न कि वहाँ जहाँ हो चुका है।' यह बिल्कुल सही उदाहरण है जिसने प्रधानमंत्री को अहसास कराया कि एक राजनीतिज्ञ का कार्य जनता की वास्तविक आवश्यकताओं को उजागर करना है तथा न केवल वर्तमान को अपितु भविष्य की जरूरतों और संभावनाओं को भी महत्व देना हैं। हालांकि ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री ने इस मानवीय खेल के लिए उचित शैली का चयन नहीं किया, जबकि यह लक्ष्य को देखने तथा इसकी ओर बढ़ने के सही तरीके का दिखावा करते हैं, वह बर्फ के मैदान को अत्यधिक छोटा कर देते हैं और उसके सारे नियमों को पुनः लिखते हैं, यहाँ खेल टीमों को मैदान में पुनः प्रवेश करने का मौका मिलता है, वही खेल अब दोबारा नहीं होगा।

यह एक झूठा आश्वासन है कि जहाँ तक संभव होगा अब मुक्त चुनाव होंगे, अभिजनों को निकट लाने, दलों का विरोध करने के लिए अपने पदों का बहिष्कार करने का एक मौका है ताकि उनमें सहमति बनायी जा सके–जो कि संगठित लोकतंत्र की एक पूर्व–शर्त है। यह एक झूठा आश्वासन है क्योंकि इस प्रक्रिया में एक लम्बा समय लगेगा और अब तक यह भी स्पष्ट नहीं है कि कौन अभिजनों को इस लक्ष्य की ओर प्रेरित करेगा। ■

> दक्षिण अफ्रीका
महिला खनिक एवं दबा हुआ आत्म (स्व)

असान्डा बेन्या, विटवाटर्सरेन्ड विश्वविद्यालय, जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका

असान्डा तथा चट्टान में छेद करने वाला एक चालक काम से अवकाश लेते हुए।

दक्षिण अफ्रीका के बड़े एवं उच्च मशीनी खान उद्योग, जिसमें प्लेटिनम व सोना मुख्य हैं, में 48000 से अधिक महिलाएं भूमिगत व्यवसाय से जुड़ी हुई हैं। ये महिलाएं मुख्यतः मूल कार्यबल का हिस्सा होती हैं। उनका कार्य खनिक एवं सामान्य श्रमिक के रूप में ढांचों को स्थापित करना एवं जल तथा वायुसंचालन पाईप लगाना अथवा भूमिगत कार्यों के लिए प्रयुक्त होने वाली मशीनों को चलाना होता है।

सन् 2008 में मैंने 3 महीने की अवधि में दक्षिण अफ्रीका की एक प्लेटिनम खान में नृवंश विज्ञान शास्त्री के तौर पर भूमिगत महिला खनिकों के मध्य रह कर एवं कार्य करके एक अध्ययन आरम्भ किया। इस अध्ययन का उद्देश्य भूमिगत कार्यों में संलग्न महिलाओं की चुनौतियों का समझना था। इसके पश्चात् एक लंबी अवधि के लिए मैंने 2011 से 2012 तक अपने आपको भूमि के भीतर की दुनिया में समाहित करते हुए एक विंच (हस्तघर्घरी) ड्राइवर के रूप में टूटी हुई चट्टानों को साफ करने एवं उन्हें धरती की सतह पर पहुंचाने तथा ड्रिलिंग की सतह तैयार करने का कार्य किया।

चूंकि मेरी पारी सुबह तड़के 4:00 बजे शुरू होती थी इसलिए मुझे अपना खान–छात्रावास सुबह 3 बजे छोड़कर खान के मार्ग (शॉफ्ट) के लिए लिए रवाना होना पड़ता था। खान से दूर रहने वाली महिला श्रमिकों को तो और भी जल्दी सुबह 2 बजे निकलना होता था। उन महिलाओं को सार्वजनिक यातायात अधिकतर बस द्वारा गांव से शहर

> >

असान्डा एक विन्च को चलाते हुए।

तथा फिर टैक्सी से खान–छात्रावास पहुंचना होता था, जहां से उन्हें कम्पनी की बस द्वारा अपनी अपनी शाफ्ट पर ले जाया जाता था। यह एक लंबी, खतरनाक एवं महंगी यात्री होती थी जिसमें श्रमिकों के वेतन का एक तिहाई हिस्सा जो कि लगभग 120–150 डॉलर था, मासिक खर्च हो जाता था।

शॉफ्ट पर पहुंचने से ही संघर्ष समाप्त नहीं हो जाता था बल्कि और बढ़ जाता था जबकि हमें धरती की सतह से 2–3 कि. मी. अंदर स्टोप्स पर ले जाया जाता था। लिफ्ट के आकार के बराबर पिंजरे को पकड़कर हमेशा एक कटु अनुभव, आक्रामक घटना जो दलदल में फंसी जैसी, जिसमें 50 या अधिक कामगार आप से जकड़े हो, से समाप्त होने जैसा है। इतनी सी जगह में जहां आपके पांव हवा में लटके हुए हो एक व्यक्ति को साँस लेने के लिए भी मानो अपने से सटे हुए व्यक्ति की साँस से गुजरना होता था। पिंजरे के अंदर लाईट का बंद होना एक अलिखित नियम था। अंधेरे के भीतर कई मजदूर बहुत निकट होने का फायदा उठाते हुए महिलाओं के वक्ष को मसल दिया करते थे क्योंकि उन्हें मालूम था कि वे वहां से दूर नहीं जा सकती या फिर लाईट जलाकर उस व्यक्ति को देख व पहचान नहीं सकतीं।

जब आप भूमि के भीतर प्रवेश करते हो तो वहां एक अलग ही दुनिया होती है–अंधेरी, धूल से भरी, गर्म एवम् आर्द्रता सहित बाहर निकली हुई चट्टानों एवं कीचड़ से युक्त। स्टोप्स बहुत छोटे होते हैं कई बार 1.2 मीटर तक के, जिसमें आपको घुटने के बल चलकर निकलना होता है आपके आसपास अस्थिर चट्टानें होती हैं जो कि भयानक रूप से कभी भी गिर सकती हैं। कई बार हमें 8 घंटों तक इन्हीं स्टोप्स के अंदर रहना होता था, घुटनों के बल काम करते हुए तथा ड्रिलिंग के दौरान चट्टानों को गिरने से बचाने के लिए उन्हें रोकते हुए। इन सुरंगों के बीच मुझे अहसास हुआ कि मौत कभी भी आ सकती है।

विंच ऑपरेटर (चालक) के रूप में जमीन के भीतर काम करते हुए मेरा काम पम्प द्वारा पानी को निकालना व मलबे को अलग करना, माल को चट्टान ड्रिल ऑपरेटर तक देना या अन्य साथियों की सहायता करना था। विंच (भारी भार वाहक मशीन) चलाना एक संवेदनशील एवं खतरनाक कार्य है जिसमें रस्सियों के सहारे विंच को नियंत्रित करना होता है तथा इस काम में हाथों की गति में एक बार भी अकुशलता से गति असंतुलन होने से नुकसान हो सकता है। विंच चलाने की कला में दक्षता औपचारिक प्रशिक्षण के स्थान पर कौशल व ज्ञान पर अधिक निर्भर करती है।

यद्यपि सभी मजदूरों के पद एवं दायित्व स्पष्टतः रूप से निर्धारित होते हैं लेकिन हम औरतों को ''वास्तविक'' मजदूर (कामगार) यानी 'पुरूष' के सहायक के रूप में ही देखा जाता था। यह सामान्य सी बात थी कि रॉक (पत्थर) ड्रिलिंग ऑपरेटर आपको लैम्प जलाकर बुलाए तथा अपनी ड्रिलिंग छड़ को पकड़ने को कहे या अन्य मजदूर आपको ''सहायक'' कहकर बुलाए तथा हिलती हुई दीवार को रोकने के लिए बोल्ट पकड़ाने को कहे। इन कामों को काम नहीं मानकर 'सहायता' कहा जाता था, जबकि यही काम अगर वास्तविक मजदूर यानी 'पुरूष' कर रहे हों तो उन्हें 'कार्य' कहा जाता था। कई बार हम महिलाकर्मियों को सफाई करने अथवा पुरूष साथियों को पानी पिलाने की जिम्मेदारी

>>

भी दी जाती थी। हर शिफ्ट के अंत में, ड्रिलिंग के पश्चात्, ड्रिल किए गए छेदों में बारूद भरने तथा ब्लास्टिंग के तारों को जोड़ना होता था।

मैंने बहुत जल्दी ही जान लिया कि वहाँ महिला के रूप में जिंदा रहने के लिए मुझे मोटी चमड़ी का होना होगा। मोटी चमड़ी के साथ साथ भूमिगत रहते हुए मुझे अपने 'आप' को बचाए रखना भी सीखना था। धरती पर प्रशिक्षण के दौरान ट्रेनिंग सेंटर (प्रशिक्षण केन्द्र) में जो मुझे औपचारिक नियम बताए गए थे उनसे अलग अनौपचारिक नियम भी थे, जिन्हें अलग ही तर्कों के आधार पर भी पालन करना होता था, जो कि जमीन के अन्दर पुरूषों द्वारा ही परिभाषित किए गए थे। इन तर्कों से बाहर जाकर काम करना यह माना जाता था कि आप अवैध मजदूर हो। अपने को स्वीकार्य बनाने तथा वास्तविक खान मजदूर माने जाने के लिए मुझे कैसे चलना, बोलना, काम करना, माल ले जाना व लैम्प को काम में लेना है आदि भी सीखना पड़ा। इस समूह के साथ काम करते हुए मैंने जमीन के अंदर काम में लाई जाने वाली कई अन्य 'भाषाएं' जानीं। जमीन के अंदर बोली जाने वाली भाषा 'फनाकलो' (fanakalo) के अतिरिक्त मुझे अन्य भाषाएं भी सीखनी पड़ीं, जो कि ड्रिलिंग के दौरान स्टोप्स, लैम्प व ग्लोब आदि के लिए इस्तेमाल की जाती थी।

पिंजरे में होने वाली हिंसा तथा स्टोप्स की भयावह स्थितियों से बचाव के लिए जो तरीके अपनाए जाते हैं वो मैं प्रारम्भ में जान नहीं सकी। उसको देखते हुए साथी मजदूरों ने मुझे बताया कि यदि धरती के भीतर जिन्दा रहना है तो तुम्हें अपने 'आत्म' (स्व) को भूलना होगा तथा अन्यों ने कहा कि यदि अपने 'आत्म' को साथ लेकर भूमि के अन्दर जाओगी तो तुम्हारे द्वारा दुर्घटना हो सकती है। मैं सोचा करती थी कि मैं अपने 'आप' को भूल कर भूमि के अन्दर कैसे जा सकती हूं? शीघ्र ही मैंने जान लिया कि अपने 'आत्म' को भूलने का अर्थ स्वयं को एक अलग पहचान देना या फिर कम से कम अपने स्वयं की पहचान एवं उससे अलग तरह के व्यवहार में तालमेल स्थापित करना है। कामगार इसे आपकी 'भूमिगत आत्म' कहा करते हैं–ऐसी 'आत्म' जो खतरा लेने के लिए तैयार हो, ऐसी सोच जो चट्टान के गिरने के खतरे अथवा परिवार के बारे में सोचने से रोके, ऐसा 'आत्म' जो पिंजरे के भीतर

खनन की शब्दावली

Cage (पिंजरा): एक घिरा हुआ चबूतरा जिसे कि श्रमिकों तथा सामग्री को जमीन के नीचे पहुंचाने में काम लिया जाता है – जो कि एक लिफ्ट के समान है।

Lashing/shovelling: टूटी हुई चट्टानों को साफ करने की एक ताकतवर प्रकिया जिसमें कि अक्सर एक बेलचे का प्रयोग किया जाता है।

Stope: एक द्वार अथवा कमरा जिसे कि खुदाई की प्रकिया तथा कच्ची धातुओं को निकालते वक्त बनाया जाता है।

Winch: एक मशीन जो कि एक धूमते हुए ढोल (पीपा) तथा एक रस्सी से बनी होती है तथा जिसका उपयोग कच्ची धातुओं को छीलने तथा उनको खनन किये हुए क्षेत्रों से बाहर निकालने में किया जाता है।

की हिंसा, यौन शोषण तथा भूगर्भीय घटनाओं को संस्कृति का हिस्सा स्वीकारे। इस संस्कृति के हिस्से के रूप में इस उद्योग में सालाना 120 मौतों को ''ज्यादा बुरा नहीं'' माना जाता है जब तक कि वह किसी आपके परिचित की नहीं हुई हो या किसी आपके सहकर्मी की हो। उस स्थिति में भी आप केवल 2 दिन परेशान होते हैं, एक वह जबकि उस सहकर्मी की देह को लेने जाने की शीघ्रता होती है तथा अगले दिन जब उसकी मृत्यु का शोक मनाया जाता है। उसके पश्चात/ आपको अपने भूमिगत आत्म की और लौट आना होता है तथा उत्पादन बढ़ाने और अस्थिर चट्टानों को दिशा देने के काम में लग जाना होता है। धरती की सतह पर लौटकर मुझे भूमिगत कार्य के भीतर विरोधाभास पर आश्चर्य होता है–मृत्यु की संभाव्यता की मुक्ति व सम्मान के रूप में देखना तथा मेरे भीतर के दो आत्म–भूमिगत आत्म ''जो कि गिरती चट्टानों के खतरों को उठाने को तैयार तथा मेरी धरती के ऊपर अपना आत्म। यद्यपि मेंने यह कार्य अपने शोध हेतु किया किन्तु अनेक लोग इसे अपने बच्चों को पालने, सिर ढंकने के लिए छत तैयार करने तथा बच्चों को स्कूल पढ़ाने के लिए करते हैं। अतः मे मैं निष्कर्ष रूप से यह कह सकती हूं कि अपने जीवन को खतरे में डालने का मुक्तिदायी एवं सम्मानजनक पुरस्कार यही है कि इसके द्वारा अपने बच्चों को स्कूल पहुंचाने के लिए समर्थ हो पाना है। ■

> कोते दी आइवर
मोबाइल फोन की प्रतीकात्मक राजधानी

जोरडाना मेटलोन, इंस्टीटयूट फॉर एडवान्सड स्टडी, टूलूज, फ्राँस

मोबाइल फोन प्रस्थिति के चरम प्रतीक के रुप में।

अदजामे के काले बाजार[1] में पुराने और चुराये गये मोबाइल फोन वाला हिस्सा अत्यन्त दयनीय नजारा है। प्रमुख सड़क के दोनों ओर सैंकड़ों लोग एकल पंक्ति में कतार लगा कर खड़े होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पास एक या कई फोन होते हैं जिन्हें वे वहाँ से गुजरने वालों को, अलग दिखने की लालसा में दिखाते हैं। वे खुसुर–पुसुर करते हैं, फुफकारते हैं या आवाज देते हैं; कुछ अपने चेहरे या हाथों से मूक अपील करते हैं। अन्य लोगों के पूछने से पहले ही अपने प्रारंभिक मूल्य से नीचे सौदेबाजी करते हुए पीछा करते हैं। ये फेरीवाले आयु और पहनावे से गंदी टी–शर्ट और डरे हुए चेहरे लिये किशोरों से सहज, आत्म–जागृत बीस या तीस वर्षीय और अपने यौवन को पार कर चुके शरीफ, अनौपचारिक फ्राइडे टाइप टी–शर्ट और पतलून पहने थके हारे पुरूष की श्रंखला में पाये जाते हैं। ये डायनोसोर के अवशेष, ऐसी तकनीक द्वारा लैस प्रामाणिक स्मार्टफोन जिसका इस्तेमाल आबिदजान की जनसंख्या का केवल एक अंश ही करेगा, की बिक्री करते हैं। यदि आपूर्ति माँग के बारे में कुछ भी संकेत देती है, आबिदजान में मोबाइल फोन का बाजार, कोते दी आइवर, काफी लोकप्रिय है।

2008 से 2009 तक अर्द्ध बेरोजगारों की आजीविका और जीवन शैली पर अनुसंधान करते हुए मैंने शहर की मोबाइल फोन संस्कृति में एक विशिष्ट रूप से समृद्ध स्त्रोत पाया। शहर के चारों तरफ सबसे बड़ी फोन कम्पनी के बिल बोर्ड पर प्यार करती सुन्दर स्त्रियों के साथ फैशनेबल पुरूष और एक फोन वाले म्यूजिक विडियों पर चित्रों की नकल उकेरी गई थी। ये विचारोत्तेजक छवियाँ काफी प्रभावी हैं : देश भर में 22. 4 लाख की आबादी में 17 लाख से भी अधिक मोबाईल टेलीफोन उपभोक्ता हैं जबकि 42% आइवर निवासी गरीबी की रेखा के नीचे निवास करते हैं। कीमतों की पूर्ण श्रंखला के साथ व्यापक रूप से उपलब्ध, मोबाइल फोन गहन परिधिय आबादी में सामान्य तौर पर उपलब्ध हैं जो उन्हें कार्यात्मक उपकरण रूप से कम और प्रतीकात्मक रूप से अधिक प्रयोग में लाते हैं। सस्ते फोन भी, अपनी सीमित कार्यात्मक क्षमताओं के बावजूद चमकीली सजावटी परत की पेशकश कर सकते हैं, यह ऐसा तथ्य है जो विपणकों से छुपा नहीं है और वे शुरूआती मॉडल को चमकीले रंगों या धातु की फेसप्लेट से अलंकृत करते हैं। सबसे सस्ता पुराना फोन 500 FCFA तक में बिक सकता है।[2]

आर्थिक तंगी में 23 वर्षीय जूस विक्रेता, केलिस से जब मैं मिली, वह कानों में हेड़फोन लगाए आई फोन के विज्ञापन के समान लग रहा था। यह सिर्फ एक अभिव्यंजना थी : उसका फोन काफी समय से बिना बैट्री के था और वह नया खरीदनें में अक्षम था। एक्सेसरी हालांकि उसे 27,000 FCFA की अग्रिम राशि में मिली और वह बकाया 40,000 FCFA किश्तों में चुका रहा है।[3] विशेष रूप से युवा पुरूषों में फोन अत्यन्त आवश्यक एक्सेसरी

> >

है। माक्विसों (मुक्ताकाश बार) में, मालिकों के पीने के दौरान फोन शांत या फिर संगीत बजाते हुए, मेज पर प्रमुख रूप से प्रदर्शित किये जाते हैं। प्रस्थिति सूचक के रूप में ये आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी की दुनिया तक पहुँचने और दृश्यता प्राप्त करने के अपेक्षाकृत लोकतांत्रिक साधन हैं और ये आबिदजानी समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सफल हो गये हैं।

फोन परिधीय जीवन की गुमनामी का प्रतिरोध करते हैं। आबिदजान के चारों ओर एक नाम और फोन नम्बर और कभी कभी सिर्फ एक फोन नम्बर आम भित्तिचित्र हैं। सड़क के किनारे थड़ियों पर, टैक्सियों के पीछे और मक्विस (maquis) की मेजों पर नम्बर अंकित होते हैं, शायद इस धुंधली आशा में कि कहीं कोई एक अच्छे आनंदमय समय के लिए उत्सुक है। आबिदजान के विदेशी दूतावास में से एक में कार्यरत मेरा मित्र, कार्य के अंतिम दिवस के दिन अपनी कमीज पर अलविदा के संदेश नहीं अपितु फोन नम्बर अंकित करके साथ लौटा। अनौपचारिक, अपंजीकृत, दस्तावेज बिना, अदृश्यता की आड़ में जीवन जीने वाली आबादी के लिए फोन नम्बर प्रलेखन के स्वरूपों में से एक है। ये आधुनिकता के साथ साथ स्थानीय और दूरस्थ सामाजिक नेटवर्कों में भागेदारी का संकेत देते हैं और इनकी 'सम्पर्क सूची' प्रस्थिति को इंगित करती है। एक बार बातचीत के दौरान स्थानीय संगीतज्ञ डाउ एमसी ने एक पत्रिका, जिसमें न्यूयॉर्क शहर में प्रस्तुति देने वाले एक आइवरी कलाकार पर लेख था, निकाली। उसने मुझे उस व्यक्ति का अमरीका का नम्बर अपने फोन में दिखाया और डींग हाँकी कि उसका दोस्त उसे अक्सर फोन करता है। जब ऐसा सार्वजनिक रूप से होता है तो आस पास के लोग इस तथ्य के साक्षी बनते हैं : शादियों में, कक्षाओं में, गंभीर बैठकों के मध्य और अधिकारिक फंक्शनों पर फोन, जिनकी घंटी उच्च आवाज पर होती है, हमेशा बजते हैं।

यदि पश्चिमी स्टीरियोटाइप (रुढीवाद) यह है कि पुरूष को महिला को फंसाना है तो आबिदजन में उसे एक फोन की जरूरत है (और जब वह उसे प्राप्त कर लेता है, तो वह शायद उसे भी एक खरीद कर देगा, जिसमें ऋण शामिल है) जैसा कि मेरे एक मित्र ने कहा, यह आशीर्वाद एवं अभिशाप दोनों ही हैं : एक पुरूष अपनी महिला मित्र को फोन न सिर्फ प्रभाव डालने के लिए अपितु उस पर नजर रखने के लिए देता है और इस अपेक्षा के साथ कि जब भी वह फोन करेगा वह हमेशा उसकी कॉल उठायेगी। फोन गरीब आदमी की उपभोग क्षमताओं के संभव दायरे को परिभाषित करते हैं और सबसे परिधीय आबादी में भी काफी पुरूषों के पास कम से कम एक फोन था; सिर्फ सबसे हताश ही उसके बिना थे। फोन का होना सम्मान के होने के बराबर था। जब मैंने एरिक से पूछा कि क्या वह कभी अपने 5000 FAFA वाले फोन को अपग्रेड करनाचाहता है, उसने जवाब दिया, ''बिल्कुल, मैं बदलना चाहता हूं। मैं एक मनुष्य हूं,, हर व्यक्ति महत्वाकांक्षी होता है।' और सेमुअल ने समझाया कि एक पुरूष के रूप में मेरी ''जैविक, भावनात्मक और सामाजिक आवश्यकताएँ हैं'' जिन्हें उसे ''अवश्य संतुष्ट करना होगा''। वह आगे बोला, ''हर व्यक्ति थोड़ा आमोद चाहता है। उदाहरण के लिए, मेरे पास सोनी एरिक्सन मोबाइल फोन है।'' और जितने अधिक फोन होंगे उतना अच्छा है : दो या तीन फोन साथ में रखने में कुछ अजीब नहीं है। औचित्य यह है कि प्रत्येक फोन एक फर्क/अलग नेटवर्क का है अतः आप विभिन्न नेटवर्क के अन्तर्गत मित्रों को सबसे कम कीमत पर फोन कर सकते हो।

सजावट, मनोरंजन या फिर कॉल प्राप्त करने के लिए फोन कितने भी अच्छे क्यों न हो, आबिदजान निवासी अपने फोन को कॉल करने के लिए कभी कभार ही प्रयोग में लाते हैं। सिर्फ कॉल करने वाला दाम चुकाता है और उनके पास कभी कभार ही बैलेन्स होता है। मुझे जो कॉल आती है वे अक्सर केबाइन्स (cabines) एक छोटी मेज और लकड़ी की बेंच जिस पर मोबाइल और सभी नेटवर्कों के थोक में बैलेन्स से लैस युवा पुरूष या महिला से आती है। 1,00,000 FCFA तक बैलेन्स उपलब्ध होता है और जितना आप एक मुश्त खरीदते हैं उतना अधिक बोनस, मुफ्त बैलेन्स आप कमा सकते हैं। प्रकरांतरेण, कॉल करने वालाक्ति एक दम फोन रख देता है (मेरे उसे फोन करने की अपेक्षा में)। या फिर मुझे बीप किया जायेगा – एक मुफ्त का स्वतः चलित टेक्सट संदेश जो मुझे वापिस फोन करने का आग्रह करेगा भेजा जायेगा। और यदि कोई कॉल की प्रतिक्षा में है, कोई भी मित्र या साथी उसे केबाइन के माध्यम से बेलेन्स भेज सकता है। परन्तु टेग से भिन्न ''आप वह हो, कौन किसे कॉल करता है वह कॉल करने वाले और जिसे कॉल हुआ है, के मध्य संस्तरण का द्योतक है। जिनके पास अधिक धन है वे जिनके पास कम है, को कॉल करते हैं उसी तरह जैसे अफ्रीकी ''बड़े पुरूष'' अपनी प्रस्थिति को संरक्षण सम्बन्धों के द्वारा कायम रखते हैं। वित्तिय एवं माल के रूप में समर्थन न सिर्फ प्रभुत्व को अपितु सामाजिक ऋण को भी सुनिश्चित करता है। ■

[1] Known as the *black* (the English word was used here), this part of Adjamé – Abidjan's largest market – was known to be shady, often peddling in stolen goods.

[2] At the time of my research 1 USD was approximately 500 FCFA.

[3] Men often justified exorbitant phone purchases by stating that this was a way to keep their savings, and if they needed to cash in they could trade the phone for a cheaper model. None of these men had bank accounts.

> यूरोपियन समाजशास्त्रीय परिषद सम्मेलन, टोरिनों 2013 पर रिपोर्ट

जैनिफर प्लाट, ससैक्स विश्वविद्यालय, यू.के. तथा आई.एस.ए. उपाध्यक्ष, प्रकाशन, 2010–2014

ESA कार्यकारिणी तथा स्थानीय संगठन समिति के सदस्य ट्यूरिन का आनन्द लेते हुए।

आई.एस.ए. की प्रकाशन समिति एक नीति के अर्न्तगत प्रमुख सम्मेलनों में अपने सदस्यों को भेजती है तथा प्रतिवेदन प्राप्त करती है ताकि वह संपादकों को यह सूचित कर सकें कि वहां क्या चल रहा है; यह उन्ही में से एक प्रतिवेदन है। लेकिन प्रश्न यह है कि एक सम्पूर्ण सभा का प्रतिवेदन कैसा हो? ऐसा कहा गया कि कम से कम 2600 व्यक्तियों ने भागीदारी की, 4000 एबस्ट्रेक्ट प्रस्तुत किये गये जिनमें से 3200 को स्वीकार किया गया। यह स्पष्टतः किसी भी एक व्यक्ति के लिए हर एक चीज में भागीदारी करना असंभव है जबकि वहां पर बहुत सारी गतिविधियाँ एक साथ चल रही हों। मेरी कार्यनीति थी कि जितनी अधिक जगहों पर संभव हो, और जो भिन्न विषयों पर हों फिर चाहे मेरी व्यक्तिगत रुचि कुठ भी क्यों न हो, अथव फिर उनके सम्मान के लिए परन्तु नये और अन्यदेशीय परिप्रेक्ष्यों की खोज के लिए जाया जाये। मैं आश्वस्त नहीं हूं कि क्या इस कार्ययोजना के कारण वहां बहुत अधिक लोग दिखे जिनकी कि मैं सम्मेलनों मे मिलने की अभ्यस्त नहीं हूं जो नीतिगत मामलों में कार्य करते है बनिस्पत कि शैक्षिणक वातावरणों में। कारण जो भी रहा हो, मेरा विचार है कि इससे कुछ मुद्दों पर रोचक परिप्रेक्ष्य प्राप्त हुए तथा इसी के साथ उन तथ्यों तक भी पहुंचा जा सका जो कि प्रत्येक शोधक के लिए उपलब्ध नहीं हैं। इसका तात्पर्य यह भी हुआ कि शैक्षणिक समाजशास्त्रियों को सामान्य से अधिक अवसर प्राप्त हो रहे थे जिसे कि वो अपने शोध कार्यों को नीतिगत दुनियां तक पहुंचा सकें ।

>>

सामान्य समय सत्र एक से डेढ घण्टे तक के थे तथा पूर्ण सत्रों में सामान्यतः तीन अथवा चार लेख होते थे, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि प्रत्येक लेख को बहुत ही संक्षेप में प्रस्तुत किया जाना था। इसका असर था कि तथ्यों को बिना सिद्धान्त के तथा सिद्धान्त को बिना तथ्यों के प्रोत्साहित किया जाए। अधिकतम प्रतिभागियों को एक लेख प्रस्तुत करने का अवसर था लेकिन यह सुनने वालों के लिए सुस्पष्ट लाभदायक स्थिति नहीं थी। यह निर्णय करना मुश्किल था कि प्रकाशन योग्य उपयुक्त लेखों के विस्तृत संस्करण कैसे होंगे? तथापि ढांचा मात्र संरचना से यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि कुछ प्रमुख बिन्दु क्या थे। यहां पर एक नमूना प्रस्तुत है[1]:

- धर्मनिरपेक्षता को आधुनिकता का एक आधारभूत अंग मानने की आवश्यकता नहीं है।
- भूतपूर्व साम्यवादी देशों को फायदेमंद तरीके से उत्तर–औपनिवेशिक देशों की श्रेणी में रखा जा सकता है।
- सांस्कृतिक संस्तरण को और अधिक पूर्ण तरीके से समझा जा सकता है यदि व्यापारिक मनोरंजक व्यवहारों का अध्ययन किया जाये।
- संकट नये रचनात्मक अवसरों की और लेजा सकते हैं यदि नौजवान लोगों की वैषयिक रुचियों को अधिक प्रत्यक्षता प्रदान की जाऐ।
- आर्थिक संकटों के प्रति सरकारी प्रतिक्रियाओं का स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्थाओं के पेशावरों पर प्रभाव पडता है जिसे कि पेशों के समाजशास्त्र को अपने परिकलन में रखने की आवश्यकता है।
- अभिनयपरक तथा कला आधारित जीवनचरित्र पद्धतियाँ जो कि अपने तरीके से उत्कृष्ठ हो सकती हैं की पहुंच आम जनता तक नहीं हो सकती है। यूरोपियन पहचानों के एक बडे अध्ययन में बुनियादी–सिद्धान्त परिप्रेक्ष्य के माध्यम से यह खोज हो पायी कि महसूस की गयी यूरोपियन पहचान के आठ विभिन्न प्रकार हैं।
- वृद्ध लोग अपनें सामाजिक क्षेत्र के परिधिय लोगों के साथ कमजोर समबन्ध पाते हैं जो कि सहारे के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इसमें निकट के लोगों से, जैसे कि समबन्धियों से, कम दायित्व सम्मलित हैं।
- अब बहुत सारे लोग (खाास तौर से जर्मनी तथा स्विटजरलैण्ड में) फैशन के विभिन्न पक्षों पर कार्य कर रहे हैं।
- परिवार के समाजशास्त्र में ऐसे लोगों की उपेक्षा की है जो एक–व्यक्ति परिवारों में रह रहे हैं।
- उग्र दक्षिणपंथी दलों की सफलता का स्तर इस तरह के कारकों पर निर्भर करता है जैसे कि निर्वाचन प्रणालियां (अनिवार्य वोटिंग तथा प्रसारण के अवसर तथा राजनीति के विरूद्ध लोगों को अन्दर लाना) तथा इस बात पर कि वहां पर एक विकल्प के रूप में एक नरमपंथी दक्षिण पंथी पार्टी उपलब्ध हो।
- समकालीन दक्षिणपंथी दलों ने अपना ध्यान ''प्रजाति'' की अपेक्षा स्थानीय संसकृतियों पर स्थांनान्तरित कर लिया है; यूरोप के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न बली के बकरे अथवा नकारात्मक पहचान की वस्तुऐं हैं जैसे कि दक्षिण में इस्लाम तथा पूर्व में साम्यवादी विगत।
- बहुत सारे प्रस्तुतिकरण जिन्होंने द्वितियक सर्वेक्षण तथ्यों पर भरोसा किया था, बिना स्पष्टीकरण के विवरण को प्रस्तुत करते हुए, यह सुझाया कि कुछ पद्धतिशास्त्रीय तुलनाओं को ''गुणात्मक'' दृष्टिकोणों को छोटे एवं कम औपचारिक प्रति–निधिक निदर्षों पर विचार करना लाभदायक रहेगा।

ई.एस.ए. (ESA) शीघ्र ही एक नया जर्नल प्रारम्भ करने वाली है; उनके पास यूरोपियन स्टडीज पहले से ही है, और ये दोनो ही जर्नल्स सदस्यों को विद्युत–संचारण (Electronically) के माध्यम से मुफ्त में प्राप्त होंगे। नया जर्नल यूरोपियन जर्नल आफ कल्चरल एण्ड पोलिटिकल सोशियोलाजी भी Routledge द्वारा प्रकाशित होगा और इसके पहले अंक को मार्च 2014 में प्रकाशित करने की योजना है। पॉल डू गे, रीका एडमण्डसन, इवा लुहेताकालियो, तथा चार्ल्स टर्नर इसके सम्पादक हैं। इसके उन्नीस सदस्यीय सम्पादक मंडल में से सात यूरोप से बाहर आधारित सदस्य हैं, और आश्चर्यजनक रुप से अब तक इनमें से कोई भी पूर्वी यूरोप से नहीं है। ■

[1] Much programme information on the conference is still available at the ESA website, http://www.europeansociology.org/conferences/11th-esa-conference.html

> समापक घोषणा–पत्र

लैटिन अमेरिकन समाजशास्त्रीय परिषद (ALAS) की 29वीं कांग्रेस की साधारण सभा द्वारा स्वीकृत

लैटिन अमेरिका में ''संकट तथा सामाजिक आपदाऐं'' – सान्टियागो में ALAS की 29वीं कांग्रेस का विषय।

चिली के राजधानी शहर सान्टियागो में 29 सितम्बर से 8 अक्टूबर (2013) के मध्य सम्पन्न सभा में लैटिन अमेरिका, कैरेबियन तथा अन्य 30 देशों के 4168 समाजशास्त्रियों नें 33 कार्यकारी समूहों, 79 सत्रों, 86 पुस्तक लोकार्पणों, तथा 5 पूर्ण सम्मेलनों में भाग लिया। 12 ALAS – पूर्व प्रारभिक गतिविधियों ने कांग्रेस के उद्देश्यों को प्रसारित करने में अत्यधिक सहायता की, जिससे हमारी परिषद में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया। विशेषकर, सैंकडों विद्यार्थियों तथा नौजवान पेशावरों के सम्मिलित होनें से तथा सूचनाओं एवं अनुभवों को बांटने के लिए तन्त्रों का निर्माण लैटिन अमेरिकन समाजशास्त्रीय परिषद की इस कांग्रेस की विरासत को चिन्हित करेगा।

इस वर्ष ने चिली में शासन परिवर्तन की 40वीं वर्षगांठ को चिन्हित किया, और कांग्रेस का एक भी भागीदार ऐसा नहीं था जो कि तीव्र वादविवाद और इससे उत्तेजित होने वाले आलोचनात्मक चिन्तन से कांग्रेस में और देश में भी, इस प्रकार की बर्बर घटना के प्रभाव से, बच सका हों, तथा इसी के साथ इस सदमें की लम्बी चुप्पी, जिसे कि रुढीवादी बुद्धिजीवियों, सरकारों, तथा अर्न्तराष्ट्रीय संगठनों ने चिली तथा संपूर्ण लैटिन अमेरिका में पूजींवादी पुर्नस्थापना के रुप में देखा।

आज हमारे अध्ययनों की गहरी कठोरता आलोचनात्मक क्षमता के विस्तार के साथ रचनात्मक तरीकों से जुडती है, परन्तु इसी के साथ समस्त महाद्वीपीय समाजिक तथा राजनैतिक आन्दोलनों की विशाल ओजस्विता तथा रूपान्तरकारी शक्ति के साथ में। हाल ही के वर्षों में इस प्रकार के काफी आंदोलन उभरकर आए हैं:

- अमेंरिका में वास्तविक सुधारों के लिए लैटिन अमेरिकन प्रवासियों का संधर्ष जो कि कार्य, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सामाजिक सुरक्षा के अधिकारों को मान्यता प्रदान करेगा, और इसी के साथ लैटिन अमेरिकन समुदायों एवं परिवारों को उस देश में बिना उत्पीडन के रहनें की संभावना के साथ।
- मैक्सिको के लोकतान्त्रिक अध्यापकों के सधों का संघर्ष जो कि वास्तविक शिक्षा

> >

सुधारों की मांग करते हैं और जो उन अध्यापकों जो कि उस महाद्वीप के सबसे बडे संध के सदस्य हैं (1,200,000 अध्यापक) पर योजनाबद्ध गोलीबारी के अन्त की मांग करते हैं।

- हमारे क्षेत्र के प्राकृतिक तथा अत्यधिक महत्व के संसाधनों जैसे तेल, गैस, खनन, कृषि, मछली पालन, जंगलों, समुद्र तटों, तथा जल के अवैध दोहन/चोरी तथा निर्मम शोषण के विरूद्ध समस्त–महाद्व ीपीय संघर्ष।
- कोलम्बिया में वास्तविक शांति संधि–वार्ताओं की आधिक्य मांगें जो महाद्वीप पर बहुत लबें समय से चले आ रहे एवं कष्टप्रद संधर्षों का अंत कर सके।
- अपनी प्रभुसत्ता के आदर एवं नाकाबन्दी की समाप्ति के लिए क्यूबा के लोगों का सतत् एवं साहसी संधर्ष।
- वैनेजुएला, बोलीविया, अर्जेन्टीना, ब्राजील, उरूग्वे, तथा इक्वाडोर की लोकतान्त्रिक तरीके से निर्वाचित सरकारों की मान्यता तथा उनके विरूद्ध आक्रमण की समाप्ति के लिए संधर्ष।
- क्षेत्र के सभी देशों में वास्तविक एवं गहरे लोकतान्त्रिक रुपान्तरण के लिए संघर्ष।
- स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, एवं पेंशन में नवउदारवादी कटौतियों के विरुद्ध संघर्ष।
- हमारे समुदायों एवं लोगों की जिन्दगियों में हिंसा, आतंक, तथा निरन्तर उपकरणों/तन्त्र की निरन्तर बढती हुई उपस्थिति के विरूद्ध संघर्ष।
- अत्यधिक धनी सरकारों, अधिकारियों, एवं कर्मचारियों के भ्रष्टाचार तथा फिजूलखर्ची के विरूद्ध संघर्ष जबकि उनके अपने लोग और अधिक गरीब होते जा रहे हैं।
- सामाजिक कार्यक्रमों तथा सार्वजनिक नीतियों पर प्रतिबन्धों/नियन्त्रणेां के विरूद्ध संघर्ष।
- हमारे राष्ट्रों की वास्तविक प्रभुसत्ता तथा देशज, अफ्रीकी–वंशज एवं द्वीप–निवासी लोगों की स्वायत्तता की पुर्नप्राप्ति के लिए संघर्ष।

इस प्रकार के लेखेजोखों के लिए इस महाद्वीप के समाजशास्त्रियों से व्यवस्थित कार्य की आवश्यकता है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने ज्ञान को बांटे और अत्यधिक जरुरी एवं दबाव वाली सामाजिक समस्याओंः जमीन के विनाश का खतरा, गरीबी, बहिष्कार, असुरक्षा, हिंसा, तथा बहुसंख्यक आबादी पर घोर विपत्ति तथा आर्थिक संकट की असुरक्षा से सम्बन्धित अपने निष्कर्षों का प्रचार–प्रसार करें। हमें अभिव्यक्ति की पूर्ण–स्वतन्त्रता, समबन्धता, और उन सब की आलोचना जो इस क्षेत्र में रहते हैं, जन–कल्याण में सुधार की नीतियों का संस्थानिकरण, जिन्हें कि सामाजिक रूप से उत्तरदायी सरकारें समस्त व्यक्तियों एवं लोगों के अधिकारों के अनुपालन के साथ लागू करेंगी, को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। इसी प्रकार हमें ज्ञान एवं शक्ति के समस्त प्रकार के औपनिवेशिक रूपों पर विजय प्राप्त करनी होगी, वास्तविक शैक्षणिक स्वायत्तता तथा समावेश के साथ, (परन्तु) अर्न्तराष्ट्रीय संगठनों द्वारा थोपे गये मुल्यांकन मापदण्डों के बिना तथा ज्ञान के उत्पादन एवं आदान–प्रदान की मुक्त पहुंच के साथ। ये उद्देश्य हमारी प्रतिबद्धता के आधार का निर्माण करते हैं और हमारी परिषद के भविष्य के लिए वादा करते हैं ।

हमारे विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा के सार्वजनिक तथा गैर सरकारी/निजी संस्थानों को अपने शोधों को निरन्तर नवीकृत करने के लिए असाधारण प्रयास करना चाहिए ताकि वो हमारे समाजों तथा राज्यों को वेा आधार प्रदान कर सकें जिन पर सुद्रढ वचनबद्धताओं को स्थापित कर सबसे अधिक आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों को लाभान्वित किया जा सके तथा न्याय, स्वतंत्रता, तथा भिन्नताओ/विविधताओं का बचाव किया जा सके।

ALAS इन आकांक्षाओं को समाहित करता है और इस बात का उत्तरदायित्व ग्रहण करता है कि वो जिस मार्ग पर अब तक चलता आया है उस पर निरन्तर चलता रहेगा, और इसी के साथ यह प्रयास करता रहेगा कि इसमें अधिक से अधिक समाजशास्त्रियों को सम्मिलित करे – उनके सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्यों, व्यवहारिक अनुभवों, तथा पहचानों की बहुलता का आदर करते तथा उन्हें मान्यता प्रदान करते हुए – एक ऐसी दुनियां को खोजते हुए जिसमें हम सब समा सकें।

ALAS अमर रहे!
हमारा अमेरिका अमर रहे! ■

> सामाजिक रूपान्तरण एवम् डिजिटल युग

एलिजा पी रीज, फेडरल विश्वविद्यालय, रियो डी जेनेरो, ब्राजील, भूतपूर्व सदस्य, कार्यकारी समिति, आई.एस.ए. 2006–2010, एवं आई.एस.एस.सी.[1] मे आई.एस.ए. की प्रतिनिधि

एलीजा रीज, ISSC की नयी उपाध्यक्ष।

अलबर्टो मार्टिनेली, ISSC के नये अध्यक्ष।

'सामाजिक रूपान्तरण एवम् डिजिटल युग' अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान परिषद (ISSC) द्वारा मांट्रियल में 13 से 15 अक्टूबर तक आयोजित 'विश्व सामाजिक विज्ञान फोरम' का विषय रखा गया था। फोरम में 60 देशों के 1000 से अधिक सामाजिक वैज्ञानिकों, प्रबन्धकों, डिजिटल विशेषज्ञों ने भाग लिया एवम् लगभग 750 प्रस्तुतीकरण सहित अन्य अनेक कार्यक्रम ISSC सहयोगियों द्वारा आयोजित हुए।

प्रारंभिक सत्र जो कि समकालीन समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों पर केंद्रित था, ने बहुत श्रोताओं को आकर्षित किया तथा सामाजिक विज्ञान क्षेत्र सम्बन्धित विषयों पर जीवन्त संवाद स्थापित करने का अवसर प्रदान किया। आई.एस.एस.सी. द्वारा युवा फैलो के समूह को आमंत्रित किया गया था जिन्होंने न केवल अपने शोध कार्यों को प्रस्तुत किया बल्कि हमारे समक्ष विमर्श हेतु चुनौतीपूर्ण प्रश्न प्रस्तुत किए एवम् हमें भविष्य में संयुक्त रूप से शोध करने के लिए अभिप्रेरित किया।

आई.एस.ए. द्वारा एक सत्र केनेडियन समाजशास्त्र के वर्तमान मुख्य विषयों पर आयोजित किया गया जिसका उद्देश्य ज्ञान अभिवृद्धि एवं नीति–निर्धारण में डिजिटल युग के प्रभाव की उपलब्धियों, संभावनाओं एवम् कमियों का आंकलन करना था। ''डिजिटल युग में सामाजिक रूपान्तरण का अध्ययन, कनाडा, 2013 – आई. एस. ए. विश्व कांग्रेस 2018 में सहभागिता हेतु कैनेडियन समाजशास्त्र'' विषय पर प्रस्तुत 4 पत्रों को समकालीन कैनेडियन समाजशास्त्र का श्रेष्ठ प्रतिदर्श (नमूना) प्रस्तुत किया। केनेडियन समाजशास्त्र ऐसोसिएशन की निर्वाचित अध्यक्ष एवम् XIX आई.एस.ए. वर्ल्ड कांग्रेस, 2018, टोरन्टो की आयोजन समिति की स्थानीय अध्यक्ष, पेट्रिजिया एल्बानीज् एवम् उनके साथियों होवार्ड रामोज, रिमा विल्किस व चेरिल टीलुकसिंह ने योकोहामा के पश्चात् होने वाली कांग्रेस का उत्साहजनक पूर्व–चित्र प्रस्तुत किया।

आई.एस.ए. ने ''21वीं सदी में परिवर्तनशील भू राजनैतिक परिदृश्यः मानव अधिकार एवं आचार'' सत्र में भी भाग लिया। सैथ्स कूपर, अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय मनोविज्ञानिक संघ द्वारा आयोजित इस पैनल में संभावना प्रकट की गई कि अगले आई.एस.एस.सी. विश्व सामाजिक विज्ञान फोरम का विषय ''न्यायिक विश्व के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का रूपान्तरण'' होगा। तृतीय विश्व सामाजिक विज्ञान फोरम सितम्बर, 2015 में डरबन, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित होगा जिसमें हमें आशा है आई. एस.ए. की मजबूत सहभागिता विशेषकर युवा सदस्यों सहित होगी। ■

[1] Note from the editor: Congratulations to Elisa Reis who was elected Vice-President of ISSC and to Alberto Martinelli (former President of the ISA, 2000-2004) who was elected President of the ISSC at the Montreal Meeting.

> वैश्विक संवाद का रुसी दल

एलेना जाद्रावोमिस्लोवा, यूरोपियन विश्वविद्यालय, सेंट पीटर्सबर्ग तथा आई.एस.ए. कार्यकारिणी की सदस्य, 2010–2014

हमारा दल लचीला है। अनुवादकों के मुख्य समूह में एलेना निकिफोरोवा, अन्ना कादनिकोवा, तथा आस्जा वोरोनकोवा हैं। अन्य लोग इस परियोजना में कमोबेश निरन्तर योगदान देते हैं और इसी के साथ एक निश्चित आवर्तन के रुप में दल में नये सदस्यों की अपेक्षा रखते हैं। हम भिन्न समाजशास्त्रीय संस्थाओं से सम्बद्ध हैं। वर्तमान में इस परियोजना के निष्कर्षों को सैंट पीटर्सबर्ग समाजशास्त्रीय परिषद, जो कि रशियन सोशियोलोजिकल सोसाइटी की क्षेत्रीय शाखा है, द्वारा प्रसारित किये जाते हैं। हम अनुवादको के बहुराष्ट्रीय दलों का हिस्सा बनने से प्रसन्न हैं। इस पत्रिका के रुसी अनुवाद/भाषान्तर पर कार्य करने से हम वैश्विक समाजशास्त्रीय समुदाय में चल रही सामाजिक बहसों/वादविवादों के प्रति सतर्क हो जाते हैं और इससे हमारे समाजशास्त्रीय क्षितिज के विस्तार में सहायता मिलती है। जब हम शब्दावलियों तथा संवर्गों के रुसी भाषा के समानान्तरों को ढूढंनें का प्रयास करते हैं तो हम और अधिक सीखते हैं। हम वास्तव में समाजशास्त्रीय अनुवाद ''करके सीख रहे हैं''। हमारी कामना है कि वैश्विक संवाद की निरन्तरता बनी रहे तथा यह समाजशास्त्रीय चिन्ताओं और परिप्रेक्ष्यों की विविधताओं का आच्छादन करता रहे। हमारी कामना है कि यह पत्रिका वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध हो। ■

एलेना जाद्रावोमिस्लोवा, समाजशास्त्र में पीएच.डी., युरोपियन विश्वविद्यालय, सैंट पीटर्सबर्ग (EUSP) में प्राध्यापक, EUSP के जैण्डर कार्यक्रम की सह–निदेशक, तथा स्वाधीन (Independent) सामाजिक शोध केन्द्र की परियोजना समन्वयक है। उसके शोध तथा शिक्षण के क्षेत्रों में सम्मिलित हैं: जैण्डर अध्ययन, महिलाओं के आन्दोलन, तथा गुणात्मक शोध पद्धतियां तथा विशेषज्ञताओं के क्षेत्र में जैण्डर समबन्ध, नारीवादी सिद्धान्त, देखभाल का समाजशास्त्र, तथा जीवनी–सम्बन्धी शोध सम्मिलित हैं।

अन्ना कादनिकोवा समाजशास्त्र में स्नातक है उसने सैंट पीटर्सबर्ग के युरोपियन विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधी प्राप्त की है तथा उसकी शैक्षणिक रुचि पिछले दशक में रुस में सह–जीवन (pro-life) लामबन्दी में है।

एलेना निकिफोरोवा स्वाधीन सामाजिक शोध केन्द्र पीटर्सबर्ग में शोध अधिसदस्य (Fellow) है। उसने अपना डिप्लोमा सैंट पीटर्सबर्ग स्टेट विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग से प्राप्त किया और उसी के अर्न्तराष्ट्रीय अध्ययन विद्यलय तथा आयरलैण्ड में लिमेरिक विश्वविद्यालय के अर्न्तराष्ट्रीय अध्ययन विभाग (M.A.) में अध्ययन किया । उसकी वर्तमान शैक्षणिक रुचियां गतिशीलता तथा स्थान (space) के क्षेत्र, जो कि वैश्विक–स्थानीयकरण (Glocalization) तथा बहुराष्ट्रवाद (Trans-nationalixm) पर चल रहे वादविवाद से बडी सीमा तक प्रभावित है, तथा ''सीमाओं'' (borders) के अध्ययन में है। अब तक उसकी शोध स्थानों, पहचानों तथा जीवन के प्रक्षेप–पक्षों, जो कि भूतपूर्व सोवियत साम्राज्य में राजनैतिक स्थानों में अनवरत चल रहे पुर्न–संरुपण से संबन्धित हैं के रुपान्तरण पर केन्द्रित रही है। उसकी रुचियों के क्षेत्रों में सम्मिलित हैं (लेकिन उन तक सीमित नहीं) बाल्टिक के देश (मुख्यतः एस्टोनिया तथा लाटविया), उत्तर–दक्षिणी रुस तथा सुदूर–उत्तर का रुस।

>>

आस्जा वोरोनकोवा एक संगीतज्ञ है, रॉक समूह पेशेन्स एयरवेज (Patience Airways) की संस्थापक। उसने बी. ए. स्मोलनी कालेज (सैंट पीटर्सबर्ग स्टेट विश्वविद्यालय, रुस) तथा बार्ड कालेज (यू.एस.ए.) से किया। उसने रॉक संगीत के समाजशास्त्र पर प्रकाशित किया है। उसकी विशेष समाजशास्त्रीय रुचि एक युवा संस्कृति प्रघटना के रुप में उत्कट धातु संगीत (extrema metal music) में है। वह समाजशास्त्रीय पत्रिका लैबोरेटोरियम (Laboratorium) मे अनुवादक का कार्य करती है।

अलैक्जैण्डर कोण्डाकोव, जो कि एम.ए. है, स्वाधीन सामाजिक शोध केन्द्र, सैंट पीटर्सबर्ग में शोध अधि–सदस्य है। वह इन्टरनेशनल इन्सटीट्यूट फार द सोशियोलोजी आफ लॉ से स्नातक है तथा उसकी शैक्षणिक रुचि कानून के समाजशास्त्र तथा अनोखे (Queer) अध्ययनों में है। उसकी वर्तमान परियोजना रुस में लैंगिक नागरिकता से जुडे विवादों पर केन्द्रित है।

यूलिया मार्टिनाविचेना यूरोपियन ह्यूमेनिटिज् युनिवर्सिटी (विलिनियस, लिथुआनिया) के संचार (Media) विभाग में संकाय सदस्य है तथा दर्शन विभाग में डोक्टोरल उम्मीदवार है। उसकी मुख्य शोध रुचियों में दृष्य सीमियोटिक्स, सार्वजनिक सेवा विज्ञापन, तथा सामुहिक पहचानों का दर्शन एवं समाजशास्त्र सम्मिलित हैं। उसका मास्टर्स शोध–प्रबन्ध बेलारुसियन बाह्य सार्वजनिक सेवाऐं एवं उनकी तर्क मूलक अपील/अनुरोध का अध्ययन पर था।

एकेटेरीना मोस्कालेवा सैंट पीटर्सबर्ग स्टेट विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में स्नातक है। उसकी शोध रुचियाँ सार्वजनिक सम्बन्धों तथा कला के क्षेत्र में है और इनमें उसका लगाव/आवृत्ति दो बडी परियोजनाओं, अर्न्तराष्ट्रीय विशेषाधिकार (फ्रेन्चाईजी) समारोह, गीक पिकनिक, जहां पर कि उसने एक परियोजना मैनेजर के रुप में कार्य किया है, तथा क्रिटिकल मास (Critical Mass) 2013 (एक शोधकर्ता तथा कार्यक्रम मैनेजर के रुप में) के माध्यम से है। वर्तमान में वह रुस के अर्थशास्त्र के उच्च विद्यालय की पीटर्सबर्ग शाखा में एक परियोजना मैनेजर के रुप में कार्यरत है।